A Daily News Magazine
इंदौर
शुक्रवार, 09 अगस्त, 2024

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 286, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

एससी/एसटी उप वर्गीकरण को लेकर बीजेपी में भी मतभेद...

शंकर अर्निमेष

अनुसूचित जाति (एससी) अनुसूचित जनजाति (एसटी) कोटे के उप-वर्गीकरण के पक्ष में सुप्रीम कोर्ट के फैसले ने भारतीय जनता पार्टी को मुश्किल में डाल दिया है, क्योंकि इसके दलित नेता सवाल उठा रहे हैं और इसकी सहयोगी लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) ने इस आदेश के खिलाफ अपील करने की घोषणा की है.

भाजपा नेता, खासकर उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान और मध्य प्रदेश जैसे हिंदी पट्टी के नेता, अदालत के क्रीमी लेयर फॉर्मूले को 'अतार्किक' और 'बेतुका' बताकर सवाल उठा रहे हैं. इसके अलावा, पार्टी खुद भी बंटी हुई है, जिसमें प्रमुख एससी नेता इस फैसले के खिलाफ हैं, जबकि दलितों के कमजोर वर्गों के लोग इसका स्वागत कर रहे हैं, लेकिन क्रीमी लेयर कटऑफ से नाखुश हैं.

एक अन्य वर्ग का मानना है कि यह आदेश राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की हिंदुत्व परियोजना के लिए एक झटका है, क्योंकि संघ व्यापक हिंदुत्व ढांचे पर दलितों और आदिवासियों के बीच एकता को बढ़ावा देने के लिए काम कर रहा था. भाजपा के एक नेता ने कहा, 'इस तरह के फैसले से विघटन होगा और जातिगत विभाजन बढ़ेगा, जो आरएसएस और भाजपा की हिंदुत्व परियोजना के लिए अच्छा नहीं है.'

इसे मुश्किल बनाने वाली बात यह है कि चंद्रबाबू नायडू की टीडीपी, नीतीश कुमार की जेडी(यू) और जीतन राम मांझी की हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा (एचएएम) जैसे सहयोगियों ने इस फैसले का समर्थन किया है.

उत्तर प्रदेश में भाजपा ने गैर-जाटव वोटों में महत्वपूर्ण कमी की और दलित वोटों के समाजवादी पार्टी (एसपी) और कांग्रेस की ओर चले जाने के कारण यह संख्या घटकर 33 रह गई. गैर-जाटव वोटों में भाजपा का हिस्सा 48 प्रतिशत से घटकर 29 प्रतिशत रह गया, जबकि जाटव वोटों में यह 17 प्रतिशत से बढ़कर 24 प्रतिशत हो गया.

उत्तर प्रदेश से एकमात्र जाटव भाजपा सांसद अरुण कुमार सागर ने कहा कि यह फैसला दलित समुदाय को विभाजित करेगा.

शाहजहांपुर के सांसद ने कहा, 'हम सुप्रीम कोर्ट का सम्मान करते हैं, लेकिन यह फैसला सही नहीं है क्योंकि यह दलितों को विभाजित करेगा. जाटवों ने विधानसभा और आम चुनावों में भाजपा को वोट दिया. हमारे लोगों को अभी भी शिक्षा और सेवा में पर्याप्त मौके नहीं मिल रहे हैं और वे दूसरों की तरह सशक्त नहीं हैं.'

इसी तरह, भाजपा के मध्य प्रदेश एससी मोर्चा के प्रमुख कैलाश जाटव ने कहा कि यह फैसला वंचितों को आरक्षण देने के मूल आधार के खिलाफ है.

जाटव ने कहा, 'अदालत के फैसले का आधार आर्थिक विचार था, लेकिन समाज में छुआछूत अभी भी मौजूद है. शिक्षा का लाभ हर दलित उपसमूह तक नहीं पहुंचा है. यहां तक कि प्रमुख दलित उपसमूहों को भी इसका लाभ नहीं मिला है. जाति जनगणना के बिना राज्य कोटा के भीतर कोटा कैसे तय करेगा? कुल मिलाकर यह फैसला विभाजनकारी है.'

मध्य प्रदेश में दलितों की आबादी 16 प्रतिशत है, जबकि जाटवों की आबादी 8 प्रतिशत है. उत्तर प्रदेश के विपरीत, हाल ही में हुए लोकसभा चुनाव में जाटवों ने ज्यादातर भाजपा को वोट दिया. जाटवों के आरक्षण में किसी भी तरह की कमी राज्य में भाजपा के दलित गणित को बिगाड़ सकती है.

बीजेपी के एक वरिष्ठ नेता ने दिप्रिंट को बताया, 'केंद्र ने सुझाव दिया कि अदालत इस मुद्दे को राज्यों पर छोड़ दे, क्योंकि फैसले के राजनीतिक निहितार्थों को जानते हुए एक दलित समूह एक राज्य में भाजपा का समर्थन करता है, लेकिन दूसरे राज्य में ऐसा नहीं हो सकता है, जैसा कि जाटवों के मामले में हुआ. पार्टी एक जाति को दूसरी जाति की कीमत पर नाराज़ करने का जोखिम नहीं उठा सकती. बिहार में पासवान अन्य कमज़ोर दलित समूहों के साथ भाजपा को वोट देते हैं. कई राज्यों में भाजपा को संख्यात्मक रूप से कमजोर दलित समूहों से वोट मिले, लेकिन कई प्रमुख दलित समूहों ने अन्य राज्यों में भाजपा का समर्थन किया.'

उन्होंने कहा कि पार्टी हर वंचित समूह को सशक्त बनाना चाहती है, लेकिन वह अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के प्रमुख उपसमूह का समर्थन खोने का जोखिम नहीं उठा सकती.

राजस्थान में भाजपा के एससी मोर्चा के प्रमुख कैलाश मेघवाल ने कहा, 'दलित समूहों ने कोटे में उनके हिस्से में गड़बड़ी होने पर आंदोलन शुरू करने की धमकी दी है. जाति जनगणना के बिना हिस्सेदारी कैसे तय होगी? ऐसे फैसले दलितों के बीच और अधिक भ्रम पैदा करेंगे और यह संविधान परिवर्तन की एक और कहानी को जन्म देगा.'

मेघवाल, एक एससी समूह, पहले से ही एससी के फैसले का विरोध कर रहा है और अगर राजस्थान सरकार कोटे में गड़बड़ी करती है तो आंदोलन करने की धमकी दी है, जबकि राजस्थान में दलितों की आबादी 17.2 प्रतिशत आंकी गई है, मेघवाल पूरे एससी समुदायों का लगभग 50 प्रतिशत हिस्सा हैं.

बिहार में, जहां चिराग पासवान पहले ही इस फैसले के खिलाफ बोल चुके हैं, बिहार भाजपा एससी मोर्चा के लोकेंद्र पासवान ने अफसोस जताया कि अदालत का फैसला आर्थिक मापदंडों के आधार पर किया गया, जबकि अन्य कारकों पर विचार नहीं किया गया. भाजपा नेता ने कहा, 'प्रमुख एससी समूहों को भी अभी तक आरक्षण का लाभ नहीं मिला है.'

भाजपा ने रामविलास पासवान की लोजपा के साथ गठबंधन और नीतीश कुमार की सोशल इंजीनियरिंग के जरिए मुसहर और धोबी जैसे अन्य दलित समूहों के समर्थन के कारण पासवान वोट हासिल किए. अब, पासवान इस फैसले का विरोध कर रहे हैं, जबकि बिहार के कम सुविधा वाले समूहों के अन्य समूह, जिनमें मुसहर मांझी भी शामिल हैं, अदालत के फैसले का समर्थन कर रहे हैं.

हालांकि, पार्टी में कई लोगों ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले का स्वागत करते हुए कहा कि वितरण से अन्य वंचित समूहों को मदद मिलेगी, पूर्व सांसद संजय पासवान को लगता है कि इसमें कुछ शर्तें होनी चाहिए.

बिहार के नेता ने कहा, 'मुझे लगता है कि (कोटा लाभ का) आधार परिवार होना चाहिए, न कि कोई जाति, समूह. यह उन दलित परिवारों पर लागू होना चाहिए, जिन्होंने पिछली तीन पीढ़ियों में आरक्षण का लाभ उठाया है. मैंने नारा दिया था कि चार पीढ़ियों से अधिक (लाभ नहीं मिलना चाहिए). मेरे परिवार में मैं मंत्री बना और मेरा बेटा प्रोफेसर है. मेरे परिवार की चौथी पीढ़ी को आरक्षण नहीं मिलना चाहिए.'

उत्तर प्रदेश से वाल्मीकि समुदाय से आने वाले भाजपा सांसद अनूप प्रधान ने कहा कि पुनर्वितरण अच्छा है, लेकिन क्रीमी लेयर कट ऑफ सही नहीं है क्योंकि अधिकांश कमजोर वर्गों को अभी तक आरक्षण का लाभ नहीं मिला है.

भाजपा के लोकेंद्र पासवान ने कहा कि बिहार में कई संगठन इस फैसले का विरोध कर रहे हैं और उनमें से अधिकांश इसकी समीक्षा की मांग कर रहे हैं. उन्होंने कहा, 'पार्टी इस पर विचार करेगी, लेकिन मोर्चा प्रमुख के रूप में, मुझे यह स्पष्ट करना होगा कि हमारे समुदाय की क्या भावनाएं हैं. दलितों पर क्रीमी लेयर कैसे लागू किया जा सकता है, जबकि उन्हें अभी भी अन्य वर्गों के बराबर आना है? कितने पासवान और मुसहर आईएएस हैं और कितने पासी समुदाय से हैं? सबसे पहले, हमें दलित और एसटी आरक्षण में क्रीमी लेयर कटऑफ लागू करने से पहले इन मुद्दों पर विचार करना होगा.'

झारखंड के पूर्व डीजीपी विष्णु दयाल राम, जो पलामू से भाजपा सांसद हैं, ने कहा कि हर जाति समूह को कोटा पुनर्वितरण का लाभ मिलना चाहिए, क्योंकि प्रमुख समूह अधिकांश लाभ ले जाते हैं. उन्होंने कहा, 'लेकिन इसकी तुलना ओबीसी क्रीमी लेयर से नहीं की जा सकती; ओबीसी आरक्षण के साथ तुलना उचित नहीं है दलित और आदिवासी अभी भी सशक्त ओबीसी से बहुत दूर हैं.'

इस फैसले से दक्षिण भारत में अधिक लाभ होगा, क्योंकि संख्यात्मक रूप से कमजोर वर्ग भाजपा का समर्थन कर रहे हैं, यह तथ्य तमिलनाडु भाजपा प्रमुख के. अन्नामलाई द्वारा वर्गीकरण के पक्ष में एक्स पर पोस्ट करके स्पष्ट किया गया है. भाजपा तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में मादिगा लोगों के समर्थन पर नज़र गड़ाए हुए है.

भाजपा के एक नेता ने कहा, 'दक्षिण भारत में पार्टी को कमज़ोर दलित समूह से अधिक समर्थन मिल सकता है, क्योंकि उसे प्रमुख एससी समूहों के वोट नहीं मिलते हैं, लेकिन अगर इसे सावधानी से लागू नहीं किया गया तो यह उत्तर भारत में नुकसान पहुंचा सकता है. संविधान परिवर्तन पर एक और बहस हो सकती है, क्योंकि पार्टी का मुख्य आधार उत्तर भारत में है.'

समाजशास्त्री बद्रीनारायण ने जोर देकर कहा कि भाजपा को दक्षिण भारत में अधिक समर्थन मिल सकता है, लेकिन उसे उत्तर में सावधानी से चलना होगा ताकि किसी प्रमुख समर्थक समूह को नाराज़ न किया जा सके. उन्होंने कहा, 'यूपी में, मायावती, जिन्होंने फैसले का विरोध किया था, जाटवों को एकजुट करके नया जीवन पा सकती हैं और यह भाजपा को नुकसान पहुंचा सकता है, जो जाटवों और अन्य दलित उप समूहों पर नज़र गड़ाए हुए है. बिहार में भी भाजपा को नुकसान हो सकता है, क्योंकि वहां पासवान और अन्य एससी समूह हैं. दलितों का समर्थन हासिल करने के लिए दोनों समूहों के बीच संतुलन बनाना होगा.'

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

सुप्रभात

मैं जब
किसी वृक्ष के पास
जाता हूँ
हरा हो जाता हूँ।

मैं जब
किसी नदी के पास
जाता हूँ
उसके स्नेह में
रसलीन हो जाता हूँ।

मैं जब
किसी कोयल के पास
जाता हूँ
संगीत की लय
बन जाता हूँ।

मैं जब
किसी चिड़िया का घोसला
अपने घर के
किसी कोने में पाता हूँ
मैं चहकने लग जाता हूँ।

मैं जब
अपने अंदर झांकता हूँ
वहाँ ईश्वर को
कविता लिखते पाता हूँ।

- दुर्गाप्रसाद झाला

वक्फ बिल लोकसभा में पेश

विपक्ष का विरोध

किरेन रिजीजू बोले-बिल का समर्थन कीजिए, करोड़ों लोगों की मिलेगी दुआ

ओवैसी ने जताया विरोध, बोले-केंद्र की मोदी सरकार मुसलमानों की दुश्मन

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय अल्पसंख्यक मंत्री किरेन रिजिजू ने गुरुवार को लोकसभा में वक्फ संशोधन बिल पेश कर दिया। सदन में चर्चा के दौरान रिजिजू ने दावा किया कि इस बिल के जरिए किसी भी धार्मिक बॉडी की स्वतंत्रता में कोई भी हस्तक्षेप नहीं किया गया है और न ही कोई संविधान का उल्लंघन हो रहा है। इस नए बिल में हक छीनने की बात तो छोड़ दीजिए, बल्कि जिनको हक नहीं मिला है, उनको यह बिल हक दिलाता है। मुस्लिमों की महिलाओं, बच्चों और पिछड़ों को जगह देने के लिए सरकार वक्फ बिल लेकर आई है। उन्होंने कांग्रेस समेत विपक्ष से अपील की कि वे बिल का समर्थन करें, इससे उन्हें करोड़ों लोगों की दुआ मिलेगी। केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा,यह अमेंडमेंट (वक्फ संशोधन बिल) सरकार सदन में ला रही है। आपने जो चाहा, वह नहीं कर सके, इसलिए सरकार अमेंडमेंट लेकर आ रही है। इस बिल का समर्थन कीजिए, करोड़ों लोगों की दुआ मिलेगी। चंद लोगों ने पूरे वक्फ बोर्ड पर कब्जा करके रखा है। मुस्लिम लोगों को जो इंसाफ नहीं मिला है, उसे सही करने के लिए यह बिल लाया गया है। इतिहास में दर्ज होगा कि इस बिल पर किसने समर्थन किया और किसने विरोध किया। इसीलिए बिल का विरोध करने से पहले सोचिएगा करोड़ों गरीब मुस्लिमों के बारे में।

मुझे चुनौती दी जा रही है, मैं दुखी मन से जा रहा हूं

● राज्यसभा में जगदीप धनखड़ ने विपक्ष को लगाई लताड़ ● विनेश फोगाट के मुद्दे पर हंगामा

नई दिल्ली (एजेंसी)। राज्यसभा में सभापति जगदीप धनखड़ विपक्ष के व्यवहार से इतने आहत दिखे कि कुर्सी छोड़कर चले गए। उन्होंने कहा कि उनके ऊपर विपक्ष चिट्ठी के जरिए, अखबारों के जरिए, आरोपों के जरिए हमले कर रहा है। उन्हें लगता है कि मैं इस पद के काबिल नहीं हूं, इसलिए कुछ समय के लिए मैं इस कुर्सी छोड़कर जा रहा हूं। उन्होंने इसी दौरान सदन में मौजूद कांग्रेस नेता जयराम रमेश को भी आड़े हाथों लिया। उन्होंने कहा कि मिस्टर रमेश आप हंसिए मत, मैं आपको जानता हूं। जगदीप धनखड़ ने कहा कि इस पवित्र सदन को अराजकता का केंद्र बनाना, भारतीय प्रजातंत्र के ऊपर कुठाराघात करना, अध्यक्ष की गरिमा को धूमिल करना, शारीरिक रूप से चुनौती पूर्ण वातावरण करना, ये अर्मायदित आचरण नहीं, ये हर सीमा को लांघने वाला आचरण है।

हॉकी टीम ने स्पेन को 2-1 से हराकर जीता ब्रॉन्ज

भारत को चौथा मेडल,हरमनप्रीत ने दागे दोनों गोल

पेरिस (एजेंसी)। पेरिस ओलंपिक 2024 में भारतीय हॉकी टीम ने ब्रॉन्ज मेडल के मैच में स्पेन को 2-1 से हराकर इतिहास रच दिया। भारतीय टीम ने लगातार दूसरी बार ओलंपिक में ब्रॉन्ज मेडल अपने नाम किया है। तोक्यो ओलंपिक में भी भारतीय टीम ने ब्रॉन्ज मेडल जीता है। भारत के लिए इस मैच में कप्तान हरमनप्रीत ने दो गोल दागे। इसके बाद भारतीय रक्षापंक्ति ने दमदार खेल दिखाते हुए स्पेन को एक भी मौका नहीं दिया की वह बराबरी कर सके। इस तरह पेरिस ओलंपिक में भारत के खाते में चौथा मेडल आया है।

म.प्र. में किये गये निवेश का मिलेगा बेहतर रिटर्न : सीएम

मध्यप्रदेश कर रहा है उद्योग और निवेश के लिए उद्योगपतियों को आमंत्रित

भोपाल/बेंगलुरु (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि अपनी उद्यमशीलता, परिश्रम, व्यवस्थित कार्य पद्धति और मानव मूल्यों को समाहित करते हुए सबको साथ लेकर चलने की क्षमता के परिणाम स्वरुप ही, भारत विश्व में सदियों से सोने की चिड़िया के रूप में विख्यात रहा है। विश्व में हमारी यह पहचान भारत की उद्यमशीलता, बौद्धिकता, कल्पनाशीलता और व्यावसायिक निपुणता की परिचायक है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने उपलब्ध संसाधनों और बौद्धिक क्षमता के बल पर देश को विश्व की पहली 5 अर्थव्यवस्थाओं में स्थान दिलाया है, यह प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व और विजन का परिणाम है। इस उपलब्धि में उद्योगपतियों का भी विशेष योगदान है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव बेंगलुरु में आयोजित इन्वेस्ट मध्यप्रदेशः इन्टरेक्टिव सेशन ऑन इन्वेस्टमेंट अर्पोच्यूनिटीज इन मध्यप्रदेश के संवाद-सत्र को संबोधित कर रहे थे।

'एडवांटेज एमपी' फिल्म का हुआ प्रदर्शन- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बैंगलुरू में इन्वेस्ट मध्यप्रदेश के दूसरे दिन इन्टरैक्टिव सेशन का दीप प्रज्जवल और तुलसी के पौधे में जल अर्पित कर शुभारंभ किया।

विशेष टिप्पणी

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के वरिष्ठ संपादक हैं।

काश, विनेश संन्यास की जगह नाउम्मीदी को पटखनी देतीं...!

भारतीय महिला पहलवान विनेश फोगाट ने वजन ज्यादा होने से कुश्ती के फाइनल में डिसक्वालिफाई होने के बाद गहरी निराशा में कुश्ती से ही संन्यास लेने की घोषणा कर दी है। उनके इस फैसले पर व्यापक सहानुभूति भी उमड़ रही है। कहा जा रहा है कि सिस्टम ने उन्हे हरा दिया। विनेश के साथ जो हुआ, उससे पूरा देश दुखी है। क्योंकि महज सौ ग्राम वजन एक पूरे ओलिंपिक मेडल पर भारी साबित हुआ। लेकिन बेहतर होता कि कुश्ती से संन्यास लेने की जगह वो अगले ओलिंपिक में मेडल जीतने का संकल्प जतातीं। क्योंकि विनेश को ओलिंपिक के सख्त नियमों का पता पहले से था। वैसे भी वो अपनी नियमित कैटेगरी 53 किलो से कम 50 किलोग्राम वाली कैटेगरी में खेल रही थीं। अपना वजन सामान्य से कम बनाए रखना आसान नहीं है। उन्होंने अपनी वजन केटेगरी क्यों बदलीं, स्वेच्छा से बदली या उन्हें बदलने के लिए कहा गया, वजन की सख्त सीमा जानते हुए भी वो इसको लेकर गफलत में क्यों रहीं, अगर विनेश का वजन थोड़ा भी बढ़ा था तो वो फाइनल तक कैसे आन पहुंचीं, इन तमाम सवालों के जवाब अभी मिलने हैं। दूसरी तरफ भारत में विनेश के अयोग्य घोषित होने पर भी सियासी जंग हो रही है। हमारे यहां किसी भी बात पर राजनीति हो सकती है और सट्टा लग सकता है।

विनेश ने बुधवार को कुश्ती के अपने फाइनल मुकाबले में फिट रहने के लिए सारी रात वर्क आउट किया। वजन घटाने की हर संभव कोशिश की। नतीजा यह हुआ कि वो खुद डीहाईड्रेशन का शिकार हो गईं। उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। ऐसी हालत में अगर वो फाइनल खेलना भी चाहतीं तो शायद ही जीततीं। वजन का अड़ंगा विनेश के लिए कोई नई बात नहीं थी। पिछले ओलिंपिक में भी वो इसी कारण डिसक्वालिफाई हुई थीं। लेकिन वो शुरूआती दौर में ही बाहर हो गई थीं। इसलिए उस पर किसी किस्म का कोई बवाल नहीं मचा था। दूसरा कारण पेरिस ओलिंपिक के पहले भाजपा नेता व भारतीय कुश्ती महासंघ के पूर्व अध्यक्ष ब्रजभूषण शरण सिंह द्वारा कथित यौन प्रताड़ना के खिलाफ जो पहलवान जंतर मंतर पर धरने पर बैठे थे, उनमें विनेश फोगाट की सक्रिय भूमिका थी। उन्हें जबरन घसीटा भी गया था। सत्ता पक्ष के लोगों ने उन्हें ट्रोल भी किया। इस पूरे मामले में केन्द्र सरकार ब्रजभूषण के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने से बचती रही, क्योंकि उसे यूपी में राजपूत वोटों की चिंता थी। हालांकि लोकसभा चुनाव के जो नतीजे आए, उसे देखकर लगा कि ब्रजभूषण को बचाने का कोई खास लाभ नहीं मिला। उल्टे हरियाणा में और नुकसान हो गया, क्योंकि विनेश हरियाणा से हैं और जाट समुदाय से हैं।

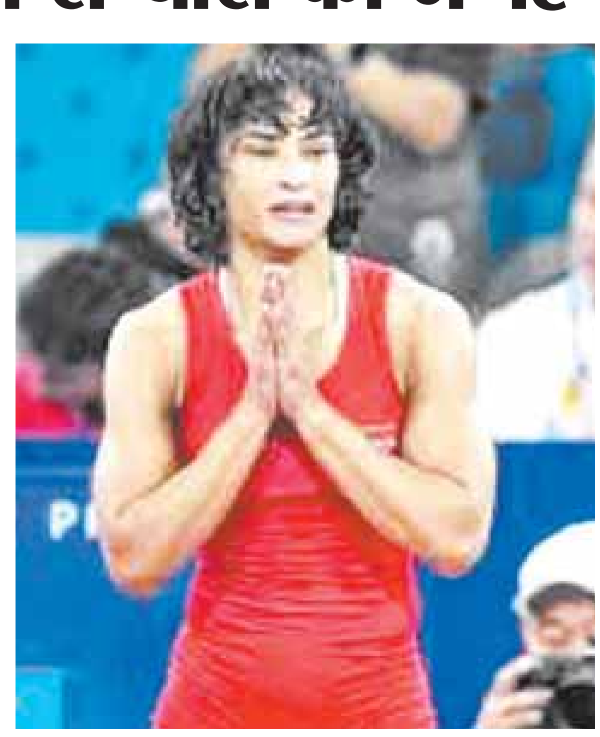

लेकिन विनेश का जाट समुदाय से होना महत्वपूर्ण नहीं हैं। वो काबिल और जुझारू पहलवान हैं। शायद वो अपनी मूल केटेगरी में ही कुश्ती लड़तीं तो भी सफल हो सकती थीं। उसके लिए उन्हें वजन को मुट्ठी में रखने की जरूरत शायद नहीं पड़ती। वैसे भी वजन घटाना कोई ट्यूब में से हवा निकालना नहीं है। खासकर ओलिंपिक मैच खेलने के लिहाज से। कहा यह भी जा रहा है कि वो ट्रायल मैच खेले बिना ही ओलिंपिक चली गई। अगर ऐसा है तो भी उन्होंने तीन मैचो में जबर्दस्त प्रदर्शन कर भारतवासियों की स्वर्ण पदक की उम्मीदों को नए पंख दे दिए थे।

और क्यों न हो, ओलिंपिक के इतिहास में कुश्ती के खेल में भारत को पहली बार गोल्ड मेडल जीतने की सुनहरी आस बंधी थी। जब आशा आसमान पर हो तो निराशा जमीन पर उल्का की तरह गिरती है।

वही हुआ भी। यह पहली बार था कि जब एक खिलाड़ी के साथ हुए 'अन्याय' को लेकर समूचा देश उद्वेलित हुआ। खेल की चिंता पूरे राष्ट्र की चिंता बन गई। यह अपने आप में सकारात्मक लक्षण है, भले ही उसके भीतर सियासी दांव पेंच क्यों न छिपे हों। एक असली खिलाड़ी के साथ नाइंसाफी पर सियासत के खिलाड़ियों ने संसद हिला दी। सरकार को जवाब देना पड़ा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि सारा देश विनेश के साथ है। हालांकि कई सवालों के जवाब अभी बाकी हैं।

उधर पेरिस में अस्पताल में ठीक होने के बाद भी विनेश भावनात्मक रूप से चित हो गई थीं। देशी सिस्टम को टूट गई थी। उन्होंने गुरूवार को तड़के एक्स पर पोस्ट किया 'मां कुश्ती मेरे से जीत गई, मैं हार गई। माफ करना आपका सपना, मेरी हिम्मत सब टूट चुके। इससे ज्यादा ताकत नहीं रही अब। अलविदा कुश्ती 2001-2024, आप सबकी हमेशा ऋणी रहूंगी, माफी।' अच्छा होता कि विनेश संन्यास की जगह ये पोस्ट करती कि इस 'नाइंसाफी' का जवाब वो अगले ओलिंपिक में सोना जीत कर देगी तो शायद वह और ज्यादा युवा खिलाड़ियों की प्रेरणा बनती। वो मेडल लाती तो देश बार बार उनका ऋणी रहता। उम्मीद के अखाड़े में नाउम्मीदी को धूल चटाने का वह धोबी पछाड़ दांव होता।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 38.5°c
न्यूनतम 33°c

सुबह सवेरे
इंदौर ■ शुक्रवार, 09 अगस्त 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

रेसलर अंतिम पंघल पर ऐक्शन, पेरिस छोड़ने का आदेश

अपने कार्ड पर बहन को ओलंपिक खेल गांव में घुसाया, पकड़े जाने पर खुलासा

पानीपत (एजेंसी)। पेरिस ओलिंपिक में हरियाणा की पहलवान अंतिम पंघल और उनकी बहन विवादों में फंस गईं। दोनों को पुलिस स्टेशन ले जाया गया और यहां बयान दर्ज किए गए। इसके बाद दोनों को ही तुरंत पेरिस छोड़ने का आदेश दिया गया। दरअसल, अंतिम महिलाओं की 53 किग्रा कैटेगरी में अपना पहला मुकाबला हारने के बाद पेरिस ओलिंपिक से बाहर हो गईं और होटल चली गईं। जहां उनके कोच विकास और भगत सिंह भी ठहरे हुए थे। अंतिम ने बहन को अपना आई कार्ड देकर खेल गांव जाकर अपना सामान लाने के लिए कहा। उनकी बहन खेल गांव में घुसने में कामयाब हो गई, लेकिन उन्हें बाहर निकलते समय सुरक्षाकर्मियों ने पकड़ लिया। उन्हें अपना बयान दर्ज कराने के लिए स्थानीय पुलिस स्टेशन ले जाया गया। 19 साल की जूनियर वर्ल्ड चैंपियन अंतिम को भी पुलिस ने अपना बयान दर्ज कराने के लिए बुलाया।

विनेश फोगाट को 4 करोड़-सरकारी नौकरी देगी हरियाणा सरकार

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पेरिस ओलिंपिक 2024 में 50 किलोग्राम फ्री स्टाइल कुश्ती वर्ग से बाहर होने के बाद हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सैनी ने उनके लिए बड़ा ऐलान किया है। उन्होंने कहा– हमारी सरकार ने फैसला किया है कि विनेश फोगाट का पदक विजेता की तरह स्वागत और सम्मान किया जाएगा। हरियाणा सरकार सिल्वर मेडल जीतने वाले खिलाड़ी को 4 करोड़ कैश और सरकारी नौकरी देती है। हरियाणा सरकार ने पिछले दिनों ऐलान किया था कि पेरिस ओलंपिक में गोल्ड मेडल जीतने वाले खिलाड़ी को इनाम राशि दी जाएगी।

संक्षिप्त समाचार

सागर के बाद अब एमपी के भिंड में दीवार हादसा

भिंड (एजेंसी)। एमपी के भिंड जिले में एक घर की दीवार गिरने से दर्दनाक हादसा हो गया। दीवार की चपेट में 3 नाबालिग आ गए। जिसके कारण एक 17 साल के नाबालिग की मौत की सूचना आई है। जबकि दो अन्य किशोर गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। हादसा बुधवार देर

शाम गोरमी के वार्ड 3 का बताया जा रहा है। जानकारी के अनुसार जिस घर की दीवार गिरी है, वह घर गोरमी के नगर परिषद के पूर्व अध्यक्ष प्रेम सिंह का है। हादसे के वक्त तीनों नाबालिग मौजूद गली से गुजर रहे थे। तभी अचानक भारी भरकम दीवार भरभरा कर उनके ऊपर गिर पड़ी। जिससे तीनों पीड़ित उसकी चपेट में आ गए। आसपास के लोगों में दीवार के गिरने से हड़कंप मच गया।

सामने आई दिल्ली कोचिंग हादसे की मजिस्ट्रियल जांच रिपोर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के कोचिंग सेंटर के बेसमेंट में पानी भरने से हुई 3 छात्रों की मौत के मामले में मजिस्ट्रेट जांच की रिपोर्ट सामने आई है। बुधवार को राजस्व मंत्री को सौंपी गई रिपोर्ट में राव आईएएस बेसमेंट के गलत ढंग से उपयोग के आरोप लगाए गए हैं। जांच में

एमसीडी और फायर ब्रिगेड डिपार्टमेंट की लापरवाही भी सामने आई है। रिपोर्ट में बताया गया है कि कोचिंग सेंटर की बिल्डिंग में हो रहे नियमों के उल्लंघन के बारे में एमसीडी और फायर बिग्रेड डिपार्टमेंट को पहले से जानकारी थी। इसके बाद भी विभागों की तरफ से कार्रवाई नहीं की गई। पिछले साल अगस्त में एक कोचिंग सेंटर में आग लगी थी।

वायनाड लैंडस्लाइड हादसे में 138 लोग अब भी लापता

वायनाड (एजेंसी)। केरल के वायनाड में 29 जुलाई की देर रात हुए लैंडस्लाइड में अब भी 138 लोग अब भी लापता हैं। गुरुवार (8 अगस्त) को लगातार 10वें दिन रेस्क्यू ऑपरेशन जारी है। हादसे में अब तक 413 लोगों की मौत हुई है। मीडिया रिपोर्ट्स की

माने तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार (10 अगस्त) को पीड़ितों से मिलने वायनाड जाएंगे। प्रधानमंत्री की स्पेशल फ्लाइट कन्नूर में उतरेगी। कन्नूर से पीएम हेलीकॉप्टर से लैंडस्लाइड प्रभावित इलाकों का हवाई सर्वेक्षण करेंगे। इसके बाद वह रिलीफ कैंप्स में पीड़ितों से मिलेंगे, जहां 10 हजार से ज्यादा लोग शरण लिए हुए हैं। मोदी के दौरे को लेकर अभी आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है।

हो जाएं सावधान! फिर से होगी झमाझम बारिश

यूपी में भारी बारिश के आसार, बिहार में 8 लोगों की मौत

हिमाचल में चंडीगढ़-मनाली हाईवे पर फिर से लैंडस्लाइड

नई दिल्ली (एजेंसी)। उत्तर भारत के पहाड़ी इलाकों समेत कई हिस्सों में आने वाले दिनों मूसलाधार बारिश होने जा रही है। मौसम विभाग ने गुरुवार को जारी किए अपने मौसम अपडेट में बताया है कि पूर्वोत्तर भारत और पश्चिमी हिमालयी क्षेत्रों में अगले सात दिनों तक बहुत भारी बारिश होगी, जबकि पूर्वी भारत के हिस्सों में अगले तीन से चार दिनों तक भारी बारिश रहने वाली है। मौमस विभाग ने यूपी समेत कम से कम 20 राज्यों में भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है। पिछले 24 घंटे मौसम की बात करें तो पूर्वी राजस्थान, जम्मू कश्मीर, छत्तीसगढ़, पूर्वी मध्य प्रदेश, सब हिमालयी पश्चिम बंगाल, सिक्किम, झारखंड, ओडिशा में भारी से बहुत भारी बारिश हुई, जबकि तटीय आंध्र प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, पश्चिमी मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, बिहार, अरुणाचल, असम, मेघालय में भी भारी बारिश रिकॉर्ड की गई है।

खराब मौसम में भी अमरनाथ यात्रा ने तोड़े सारे रिकॉर्ड

श्रीनगर (एजेंसी)। बाबा बर्फानी के दर श्री अमरनाथ यात्रा ने इस साल सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। खराब मौसम के बावजूद शिवभक्त बड़ी संख्या में अमरनाथ यात्रा में हिस्सा ले रहे हैं। अधिकारियो के अनुसार, अभी यात्रा के समापन में 12 दिन का वक्त शेष है, इसके बावजूद तीर्थयात्रियों का आंकड़ा पांच लाख पार कर गया है। यह पिछले 12 साल में सबसे अधिक संख्या है। अकेले मंगलवार को 2000 से अधिक शिवभक्तों ने बाबा बर्फानी के दर्शन किए। श्री अमरनाथ यात्रा 52 दिन तक चलेगी, जो 29 जून से शुरू होकर 19 अगस्त को समापन होगी। इस साल इस यात्रा में दक्षिण कश्मीर में अमरनाथ गुफा में बाबा बर्फानी के दर्शन करने वाले यात्रियों की संख्या पांच लाख पार कर गई।

असम में अब बाल विवाह रोकने के लिए नई योजना

- हर महीने छात्राओं को मिलेंगे 1000 से 2500 रुपए

गुवाहाटी (एजेंसी)। असम में बाल विवाह को रोकने की दिशा में बीजेपी सरकार ने गुरुवार को एक योजना शुरू की है। मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने योजना का शुभारंभ किया है। मुख्यमंत्री निजीत मोइना असोनी योजना के तहत ग्यारहवीं से लेकर स्नातकोत्तर तक की छात्राओं के बैंक अकाउंट में हर महीने 1000 से 2500 रुपए भेजे जाएंगे। योजना में लगभग 10 लाख छात्राओं को शामिल किया जाएगा और पहले साल में इस पर 300 करोड़ रुपये खर्च किए जायेंगे। वहीं पांच साल की अवधि में लगभग 1500 करोड़ रुपये खर्च किए जायेंगे। योजना के तहत 10वीं कक्षा पास करने वाली और 11वीं कक्षा में दाखिला लेने वाली छात्राओं को 12वीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा पूरी करने तक दो साल तक 1000 रुपये प्रति माह मिलेंगे। सरमा ने कहा कि यह राशि हर महीने की 11 तारीख को उनके बैंक खातों में ट्रांसफर कर दी जाएगी। 12वीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा पूरी करने वाली और डिग्री कोर्स में दाखिला लेने वाली लड़कियों को स्नातक की पढ़ाई पूरी करने तक अगले तीन/चार साल तक हर महीने 1250 रुपये मिलेंगे। वहीं स्नातकोत्तर और बीएड कोर्स में दाखिला लेने वाली छात्राओं को अपने कोर्स खत्म होने तक 2500 रुपये प्रति माह मिलेंगे।

सरमा ने कहा कि इस योजना से उन अभिभावकों पर बोझ कम होगा जो आर्थिक तंगी के कारण अपनी बेटियों को नहीं पढ़ा पाते हैं। मौजूदा योजना का लाभ सभी लोग उठा सकते हैं चाहे उनकी आर्थिक स्थिति कैसी भी हो। असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने इस योजना की जमकर तारीफ की है।

ओलंपिक समिति विनेश फोगाट को न्याय दें : रघु ठाकुर

भोपाल। विनेश फोगाट के साथ हुई घटना ने समूचे देश को झकझोर दिया है और विनेश फोगाट के दुख के साथ सारा देश इसे राष्ट्र के साथ अन्याय के भाव से देखकर खड़ा है। यह आश्चर्यजनक है की रातो रात में किसी व्यक्ति का वजन 2.8 किलो बढ़ जाए और मात्र 100 ग्राम के वजन के नाम पर उसे ओलंपिक के फाइनल में से बहिष्कृत कर दिया जाए।

लोकतांत्रिक समाजवादी पार्टी के संरक्षक रघु ठाकुर ने यहां जारी बयान में कहा कि मैं जानता हूं कि ओलंपिक समिति के सदस्यों में क्या राजनीतिक काट छांट है? यह किस प्रकार की भूमिका है? परंतु इतना तो निश्चित लग रहा है कि यह सब किसी योजना के तहत हुआ है वरना ऐसा कैसे हो सकता है की एक व्यक्ति का वजन रातों-रात 2:8 किलो बढ़ जाए। ओलंपिक समिति यह भी कर सकती थी की अंतिम मैच के लिए याने फाइनल मैच के लिए एक-दो दिन का समय दे सकती थी ताकि बजन के बारे में अपना संतुलन कर सके। मैं तो अभी भी कहना चाहूंगा ओलंपिक समिति से कि वह एक दिन का समय दें। समाजवादी पार्टी भारत सरकार से व प्रधानमंत्रीजी से अपील करती है कि वह अपनी संवैधानिक मर्यादाओं में रहते हुए ओलंपिक समिति के सामने इस मुद्दे को उठाएं। आखिर यह केवल प्रसिद्ध व्यक्ति या देश के भावनाओं का मुद्दा मात्र नहींहै बल्कि देश के साथ न्याय का प्रश्न हैं।

नेपाल में फिर हेलीकॉप्टर क्रैश, 5 लोगों की मौत

उड़ान भरने के 3 मिनट बाद संपर्क टूटा था, 15 दिन में दूसरा हादसा

काठमांडू (एजेंसी)। नेपाल के नुवाकोट में बुधवार दोपहर एक हेलीकॉप्टर क्रैश हो गया। हादसे में 5 लोगों की मौत हो गई है। इनमें 4 चीनी नागरिक और एक पायलट शामिल हैं। एयर डायनेस्टी का हेलिकॉप्टर राजधानी काठमांडू से रासुवा जा रहा था। मामले की सूचना मिलते ही रेस्क्यू टीम को घटनास्थल पर भेजा गया। नेपाल के लोकल मीडिया के मुताबिक, हेलीकॉप्टर ने दोपहर 1 बजकर 45 मिनट पर त्रिभुवन इंटरनेशनल एयरपोर्ट से उड़ान भरी थी। करीब 3 मिनट बाद हेलीकॉप्टर से संपर्क टूट गया था। हालांकि, हादसा क्यों हुआ इसकी जानकारी सामने नहीं आई है। मरने वालों में 3 पुरुष और एक महिला शामिल है, एक का शव ज्यादा जला होने की वजह से उसकी पहचान नहीं हो पाई है। नेपाल में 15 दिन पहले 24 जुलाई को भी एक प्लेन क्रैश हो गया था। इसमें 18 लोगों की मौत हुई थी। प्लेन ने 24 जुलाई को सुबह करीब 11 बजे त्रिभुवन एयरपोर्ट से उड़ान भरी थी।

'अस्त' हुआ पश्चिम बंगाल का आखिरी वामपंथी सीएम

बुद्धदेव भट्टाचार्य का निधन, इन्हीं के सामने ढहा 'लालकिला'

फिर 770 स्क्वॉयर फुट के दो कमरे में गुजार दी अपनी जिंदगी

- प्राइवेट हॉस्पिटल में इलाज की पेशकश को भी ठुकराया

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के आखिरी वामपंथी मुख्यमंत्री बुद्धदेब भट्टाचार्य अब नहीं रहे। भट्टाचार्य उन शीर्ष नेताओं में शुमार रहे, जो भारत में वामपंथ की विचारधारा का सूर्योदय और सूर्यास्त के साक्षी रहे। विचारधारा के पक्के बुद्धदेव भट्टाचार्य के 11 साल के कार्यकाल में ममता बनर्जी को बंगाल में फलने-फूलने का राजनीतिक मौका मिला। उन्होंने बंगाल के औद्योगीकरण की कोशिश की। सिंगूर और नंदीग्राम के आंदोलन हुए, फिर टीएमसी के हाथ में सत्ता चली गई। 2011 में उन्होंने

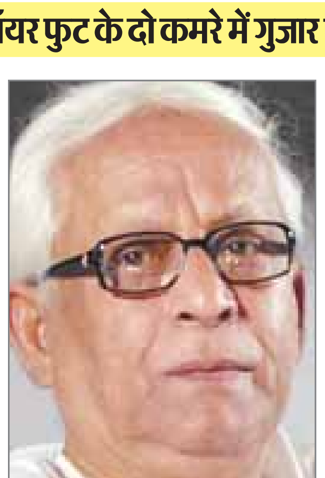

वाम का गढ़ माने जाने वाले पश्चिम बंगाल में 'लाल किला' को ढहते हुए भी देखा। इस हार के बाद उन्हें बंगाल का मिखाइल गोर्वाचेव भी कहा जाने लगा।

इसे विचारधारा के प्रति निष्ठा मानें या जिद, बुद्धदेव भट्टाचार्य सत्ता में रहने के बाद भी कभी शान ओ शौकत और व्यक्तिगत हितों के लिए ताकत की नुमाइश नहीं की। सत्ता से हटने के बाद भी वह डगमगाते नहीं दिखे। 2022 में उन्होंने नरेंद्र मोदी सरकार की ओर से नामित करने बाद देश के प्रतिष्ठित सम्मान पद्म विभूषण लेने से इनकार कर दिया था।

इसके अलावा बुद्धदेब भट्टाचार्य से जुड़े कई किस्से मशहूर हैं, जो बताते हैं कि उन्होंने सत्ता में रहने और बाहर होने के बाद भी वैचारिक प्रतिबद्धता पर अपनी जिंदगी में पूरी तरह अमल किया। मंत्री और सीएम रहने के बाद भी उनके पास न तो लाखों की दौलत थी और न ही कार। अपनी सैलरी वह पार्टी फंड में देते रहे और परिवार का खर्च पार्टी चलाता रहा। उनका अंतिम समय भी दक्षिण कोलकाता के पाम एवेन्यू के पुराने 770 स्क्वॉयर फुट के दो कमरों वाले फ्लैट में ही बीता। पिछले पांच साल से वह बीमारी से जूझ रहे थे। लेकिन प्राइवेट हॉस्पिटल भेजने की पेशकश नहीं मानी।

महाराष्ट्र-गुजरात से 831 करोड़ रुपए की ड्रग्स जब्त

- एटीएस ने 4 लोगों को गिरफ्तार किया, आतंकी लंबा जागने के लिए यह ड्रग्स लेते हैं

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात एटीएस ने महाराष्ट्र और गुजरात की दो दवा मैन्युफैक्चरिंग यूनिट से 831 करोड़ रुपए कीमत की लिक्विड ड्रग्स जब्त की है। ड्रग्स के डीआईजी सुनील जोशी ने बताया कि 5 और 6 अगस्त को दोनों जगहों से 4 लोगों को गिरफ्तार भी किया है। एटीएस के अनुसार, महाराष्ट्र के ठाणे से 800 किलो मेफेड्रोन ड्रग लिक्विड फॉर्म जब्त किया गया, जिसकी इंटरनेशनल मार्केट में कीमत 800 करोड़ रुपए के करीब है। वहीं गुजरात के भरूच जिले में एक दवा फैक्ट्री में भी कार्रवाई के दौरान 31 करोड़ रुपए कीमत की लिक्विड ट्रामाडोल जब्त की गई है। 2018 में ट्रामाडोल ड्रग्स को भारत सरकार ने बैन कर दिया था। ड्रग के भारी मात्रा में टेरर ग्रुप तक सप्लाई होने की जानकारी के बाद यह फैसला लिया गया था। ट्रामाडोल को फाइटर ड्रग्स के नाम से भी जाना जाता है। इसका आतंकवादी लंबे समय तक जागने के लिए लेते हैं। डीआईजी सुनील जोशी ने बताया कि एक विशेष सूचना के आधार पर एटीएस ने कार्रवाई की।

इंदौर, स्कूल बस कंडक्टर ने मासूम से की गंदी हरकत

बच्ची ने फोटो देख आरोपी को पहचाना; शिकायत पर स्कूल प्रबंधन ने किया विवाद

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में साढ़े तीन साल की मासूम से स्कूल के बस कंडक्टर द्वारा छेड़छाड़ का मामला सामने आया है। आरोपी बस कंडक्टर ने मासूम बच्ची से स्कूल बस में आने जाने के दौरान गंदी हरकत की। बच्ची की दादी और पिता ने आरोपी स्कूल कर्मचारी के खिलाफ पुलिस में शिकायत की है। पुलिस ने इंदौर के नामी स्कूल के कर्मचारी के खिलाफ 6 दिन बाद छेड़छाड़ और पॉक्सो एक्ट की धाराओं में केस दर्ज कर लिया है। बेटमा पुलिस के मुताबिक बुधवार को बच्ची के पिता और दादी थाने आए। उन्होंने ने अपनी शिकायत में बताया कि 1 अगस्त को बच्ची रोते हुए घर आई। उससे पूछा तो उसने बताया कि स्कूल में काम करने वाले अंकल ने उसके साथ गंदी हरकत की। इसके बाद दादी ने रात में बच्ची के पिता को पूरी बात बताई। परिवार की शिकायत पर बेटमा पुलिस ने माचल के नामी निजी स्कूल में बस कंडक्टर सत्येन्द्र तिवारी पर साढ़े तीन साल की बच्ची के साथ गलत हरकत करने के मामले में पॉस्को एक्ट सहित अन्य धाराओं में केस दर्ज किया।

कंडक्टर को देख घबराई बच्ची

घटना के दूसरे दिन बच्ची की तबीयत बिगड़ने पर परिवार निजी अस्पताल ले गया। यहां उपचार के बाद तीसरे दिन बच्ची की दादी स्कूल जाने के लिए उसे स्कूल बस में बैठाने पहुंची तो कंडक्टर को देखकर वह घबरा गई। और डर के चलते बस में नहीं बैठी। जिसके बाद बच्ची के पिता और दोस्त उसे स्कूल में लेकर पहुंचे।

शिकायत पर स्कूल प्रबंधन ने भगाया

बच्ची की तबीयत बिगड़ने पर परिजन स्कूल में बात करने पहुंचे। पिता ने बच्ची के साथ हुई गलत हरकत की जानकारी स्कूल प्रबंधन को दी। इस पर स्कूल प्रबंधन ने परिवार से विवाद कर उन्हें भगा दिया।

बच्ची को लेकर पुलिस के पास पहुंचे पेरेंट्स

बुधवार को बच्ची के पिता थाने पहुंचे। यहां बच्ची को स्कूल कंडक्टर और कुछ स्टाफ के फोटो दिखाए। फोटो के आधार पर बच्ची ने आरोपी की पहचान की। पुलिस को बच्ची ने सत्येन्द्र के बारे में जानकारी दी। बाद में पता चला कि बच्ची जिस बस से आती जाती थी। उसमें सत्येन्द्र कडंक्टर है। पुलिस ने मामले में केस दर्ज कर आगे की जांच शुरू की है।

बिना तेज बारिश के बीत गया अगस्त का पहला हफ्ता

सीजन की अब तक 16 इंच के करीब बारिश, आज गरज-चमक के साथ बारिश के आसार

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में जुलाई माह में कम बारिश होने के बाद अगस्त का पहला हफ्ता भी रुखा ही बीता। स्थिति यह रही कि इस दौरान रोज बूंदाबांदी और रिमझिम के बीच सिर्फ डेढ़ इंच ही बारिश हुई। सीजन की बारिश भी सिर्फ 16 इंच के करीब हुई है। मौसम वैज्ञानिकों ने गुरुवार को इंदौर संभाग में गरज-चमक के साथ हल्की बारिश भी हुई। अभी तीन-चार दिनों बादलों के छाने का

सिलसिला कम हो गया है जबकि ज्यादा समय धूप रहती है। मंगलवार को दिन का तापमान 28.5 डिग्री और रात का तापमान 21.9 (0) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया था। इसके साथ ही 24 घंटों में 1.3 मिमी बारिश हुई थी। बुधवार को दिन का तापमान 28.4 (0) डिग्री और रात का तापमान 21.1 (0) डिग्री सेल्यियस रहा। इस दौरान दिनभर में 6.9 मिमी बारिश रिकॉर्ड की गई।मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक अभी एक-दो दिन ऐसा ही मौसम रहेगा। इसके बाद अच्छी बारिश हो सकती है।

4 साल की बच्ची की सड़क हादसे में मौत

किराना दुकान पर जाते समय बाइक सवार ने मारी टक्कर

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के खुडैल इलाके में 4 साल की बच्ची की सड़क हादसे में मौत हो गई। तेज रफ्तार बाइक सवार ने उसे टक्कर मार दी। इस दौरान बच्ची कई फीट दूर जाकर गिरी। उसे उपचार के लिए एमवाय अस्पताल लेकर आया गया। यहां उसकी मौत हो गई।खुडैल पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक पल्लू उर्फ पल्लवी पुत्री विनोद निषाद निवासी दूधिया को घर के पास ही बुधवार शाम करीब साढ़े 6 बजे के लगभग बाइक सवार ने जोरदार टक्कर मार दी। पल्लवी इस दौरान काफी दूर जाकर गिरी। उसे पीछे आ रही मां ने उठाया और देखा तो वह बेहोश हो गई। उसे तुरंत वहां से एबुंलेस से एमवाय लेकर पहुंचे। यहां उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई।परिवार के लोगो ने बताया कि पल्लवी खाने के लिये किराना दुकान पर कुछ सामान लेने जा रही थी। इस दौरान हादसे का शिकार हो गई। उसके पिता विनोद निजी कंपनी में काम करते है। वहीं पल्लवी की एक बड़ी बहन भी है। पुलिस ने मुताबिक बाइक सवार दूधिया का रहने वाला है उसकी पहचान हो चुकी है। मामले में कार्रवाई की जा रही है।

किसान का रूपए से भरा बैग चोरी

महिला के साथ भी लूट करके भागे बाइक सवार बदमाश

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के गांधीनगर में एक किसान का रूपए से भरा बैग चोरी हो गया। इस मामले में पुलिस ने केस दर्ज किया है। किसान बैक में किसानो के लिये चलाई जा रही योजना की जानकारी लेने पहुंचा था। इस दौरान वह फोटो कॉपी कराने बाहर दुकान पर गया। यहां से उसका बैग गायब हो गया। गांधी नगर पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक किसान अशोक कुमार घोडेला निवासी सी स्कीम नंबर 99 की शिकायत पर पुलिस ने अज्ञात चोरी के मामले में केस दर्ज किया है। पुलिस के मुताबिक अशोक ने बताया कि वह नर्मदा झाबुआ बैक गांधी नगर गए थे। यहां किसान क्रेडिट कार्ड की उनहें जानकारी लेना थी। बैक से कुछ डॉक्यूमेंट की फोटो कॉपी के लिये बोला था। तब वहां से निकलकर बाहुबली नगर में रोहित फोटो कॉपी पर पहुंचा। यहां काले रंग का बेग जिसमें छोटे रंग का हेड बैंग था। उसमें 1 लाख 32 हजार रूपए नकदी,बैंक की दो पास बुक,दो चेक बुक,दो एटीएम कार्ड और आधार कार्ड रखा हुआ उनके पास था। फोटो कॉपी कराने के दौरान बैग को नीचे रखा। जल्दबाजी में वह फोटो कॉपी लेकर निकल गए। कुछ देर बाद उन्हें बैग का ध्यान आया। वह फोटो कॉपी की दुकार पर पहुंचा। वहां कर्मचारी विनोद प्रजाप्रत मिला। उससे बैग के लेकर पूछताछ की। जिसमें उसने इंकार किया। इसके बाद वहां से निकलकर अन्य जगह पर बैग ढूंढा। बाद में पुलिस को सूचना की। पंप कर्मचारी महिला से पर्स लेकर भागे बाइक सवार संयोगितागंज में बाइक सवार बदमाश एक महिला के हाथ से उसका बैग लेकर फरार हो गए। पुलिस ने मामले में केस दर्ज किया है। पुलिस के मुताबिक संगीता नाम की महिला ने थाने जाकर बताया कि वह पंप पर काम करती है। एक दिन पहले रात में अपने साथी के साथ घर जा रही थी। नवलखा चौराहे पर पल्सर बाइक पर आए बदमाशों ने उसके हाथ से पर्स छीना और लेकर फरार हो गए। पर्स में 25 सौ रूपए नकदी और आधार कार्ड और पैन कार्ड रखा हुआ था।

इंदौर से शारजाह के लिए अब सप्ताह में चार दिन सीधी फ्लाइट

बिजनेसमैन और टूरिस्ट को होगा फायदा

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर से शारजाह के लिए अब सप्ताह में तीन दिन की जगह चार दिन फ्लाइट संचालित होगी। इससे बिजनेस करने वालों के साथ सैर सपाटा करने वालों को भी बहुत फायदा होगा। इस उड़ान का संचालन भी

एयर इंडिया एक्सप्रेस करेगी। ट्रैवल एजेंट्स ऑफ़ इंडिया के मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ चैप्टर के अध्यक्ष हेमेंद्र सिंह जादौन ने बताया कि कंपनी अब इंदौर से शारजाह के लिए सोमवार, बुधवार, शुक्रवार और रविवार को संचालित करेगी।

इंदौर के सिलावटपुरा में धार्मिक स्थल को हटाया

प्रशासन-समाज की सहमति से हुई कार्यवाही; निर्माण के लिए दी दूसरी जगह

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर नगर निगम ने गुरुवार सुबह धार रोड सिलावटपुरा में एक धार्मिक स्थल को हटाने की कार्यवाही की है। प्रशासन ने कार्रवाई से पहले संबंधित पक्ष से सहमति ली, जिससे कार्रवाई के दौरान कोई विवाद की स्थिति नहीं बनी। दरअसल ट्रैफिक सुधार की दृष्टि से इसे हटाकर दूसरे स्थान पर

जगह दी गई है।यह धार्मिक स्थल काफी पुराना था। इसे शिफ्ट करने के लिए कुछ पहले चर्चा हुई थी। पिछले दिनों समाज और अधिकारियों के बीच सहमति बन गई। इसके बाद इसे हटाया गया। प्रशासन ने इसके लिए पुलिस लाइन सेवालय हॉस्पिटल के पास सरकारी जमीन पर जगह दी है। एडीएम रोशन राय के मुताबिक धार्मिक स्थल बीच सड़क पर होने के कारण ट्रैफिक बाधित होता था। ट्रैफिक सुधार के लिए सभी की सहमति से इसे हटाकर पास में ही जगह दी गई है। उधर, बड़ा गणपति, पीलियाखाल स्थित एक जर्जर भवन को भी ढहाया है।

इंदौर में डीसीपी ऑफिस पर पदस्थ पुलिसकर्मी से मारपीट

रास्ते में खड़ी बस को हटाने की बात पर हुआ था विवाद

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के ढक्कन वाला कुएं पर हंस ट्रेवल्स के ऑफिस के बाहर खड़ी बस को हटाने की बात पर एडीशनल डीसीपी जोन 2 में पदस्थ पुलिसकर्मी की बुरी तरह से पिटाई कर दी गई। पुलिसकर्मी को सड़क पर दौड़ाते हुए ड्राइवर, क्लीनर और अन्य कर्मचारियों ने बुरी तरह से पिटा।पुलिस ने इस मामले में केस दर्ज कर लिया। गुरुवार सुबह बड़ी संख्या में पुलिस बल और प्रशासन की टीम हंस ट्रेवल्स के ऑफिस पर पहुंची है।तुकोगंज पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक रामबाबू राजपूत डीसीपी जोन 2 ऑफिस में आरक्षक के पद पर पदस्थ है। उनकी शिकायत पर मोहम्मद अकरम, कुलदीप जयसवाल, नीरज राठौर, आशिफ व अन्य साथी के खिलाफ केस दर्ज किया गया है। रामबाबू ने पुलिस शिकायत में बताया कि वह बुधवार दोपहर अपनी बाइक से गीता भवन होते हुए ढक्कन वाले कुएं की तरफ जा रहे थे। इस दौरान गीता भवन पर मुड़े तो हंस ट्रेवल्स के ऑफिस के पास बस खड़ी थी। इस दौरान रोड़ पर जाम लगा था। बस ड्राइवर को बस साइड में करने के लिए कहा तो क्लीनर नीरज ने अपशब्द कहे। अपनी मर्जी से जहां मन करेगा बस खड़ी करने की बात कही। कुछ देर बहस हुई तो साथियों को आवाज देकर बुलाया। जो डंडे ओर लाठियां लेकर पहुंचे। उन्होंने रामबाबू के साथ मारपीट कर दी। इस दौरान डंडे से सिर पर मारा। सड़क पर लात घुसों से मारपीट की। पुलिसकर्मी के आंख, सिर, चेहरे, सीने और पीठ में चोट आई। इस दौरान रिश्तेदारों ने आरक्षक का बचाव किया। उनसे भी आरोपियों ने झूमा झटकी की। आरक्षक ने जानकारी वरिष्ठ अफसरों को दी। इसके बाद देर शाम तुकोगंज में पुलिस को केस दर्ज करना पड़ा।

सुबह पहुंचा पुलिस प्रशासन का अमला

डीसीपी जोन 2 ऑफिस पर पदस्थ पुलिसकर्मी के साथ मारपीट के बाद पुलिस प्रशासन अलर्ट नजर आया। गुरुवार सुबह यहां भारी संख्या में हंस ट्रेवल्स पर पुलिस बल पहुंचा था।

इंदौर में मेडिकल संचालक की पत्नी ने किया सुसाइड

8 माह पहले हुई थी शादी; मोबाइल में चैटिंग की बात पर हुई थी कहासुनी

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के आजाद नगर में रहने वाले मेडिकल संचालक की पत्नी ने सुसाइड कर लिया। बताया जाता है कि सोशल मीडिया पर चैटिंग को लेकर पत्नी से कहासुनी हुई थी। इसके बाद पत्नी कमरे में चली गई और दरवाजा लगा लिया। करीब एक घंटे बाद घरवालों ने दरवाजा खोला तो वह फंदे पर झूलती मिली। पुलिस ने मर्ग कायम किया है।आजाद नगर पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक वर्षा (22) पति मनोहर लोधी निवासी इदरीस नगर ने अपने घर पर बुधवार रात फांसी लगा ली। देर रात करीब 12:30 बजे परिजन उसे लेकर एमवाय पहुंचे थे। पति मनोहर ने बताया कि रात में वह बाहर बैठे थे। इस दौरान वर्षा मोबाइल पर किसी लड़के से चैटिंग कर रही थी। जिसमें मनोहर ने उसे डांटा और कहा कि गुरुवार को पिता इंदौर आ रहे है। वह उसने बात करेगा। इसके बाद वर्षा कमरे में चली गई और उसने दरवाजा बंद कर लिया। रात में वर्षा के जेठ पहुंचे तो उन्होंने कमरे का दरवाजा तोड़ा। जिसमें अंदर वह फंदे पर झूल रही थी।

आठ माह पहले हुई शादी

मनोहर ने बताया कि वह बंगाली चौराहे पर मेडिकल की दुकान संचालित करते है। वर्षा का मायका ललितपुर का है। 8 माह पहले ही दोनों की शादी हुई थी। परिवार में माता पिता बड़ा भाई और भाभी व बच्चे रहते है।

पहले भी हुई थी कहासुनी

मनोहर ने बातचीत में बताया कि वर्षा से उनकी इंस्ट्राग्राम और वॉट्सएप की चैटिंग को लेकर पहले भी कहासुनी हुई थी। उसे चैटिंग करते हुए पकड़ा था। वह राजस्थान के किसी छोटू जगरा से चैटिंग करती थी। उसके दोनों अंकाउट में काफी चैटिंग है। इसे लेकर पहले भी उसे हिदायत दी थी। लेकिन वर्षा ने उस पर ध्यान नहीं दिया।

पति बोला-तू मर जा...मैं तो लड़कियों से बात करूंगा

महिला की मौत पर पति को बनाया आरोपी; पिता बोले- जमाई ने एक बेटी छीन ली

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के पास गौतमपुरा में तीन दिन पहले हुई शादीशुदा महिला की मौत में उसके माता-पिता और बहन के बयान के बाद पुलिस ने पति को आरोपी बनाया है। महिला की बॉडी उसके घर में ही मिली थी।पिता ने अपने बयान में बताया कि बेटी जमाई को दूसरी लड़कियों से बात करने को लेकर टोकती थी। इस पर पति कहता था कि तू सुसाइड कर ले मैं तो बात करना बंद नही करूंगा। इसके बाद बेटी की मौत की जानकारी मिली। पुलिस ने अभी बयान के आधार पर आत्महत्या के लिए उकसाने का केस दर्ज किया है। लेकिन पुलिस को अभी पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट का इंतजार है।

पिता महेश ने बताई प्रताड़ना की पूरी कहानी...

गौतमपुरा पुलिस ने 2 अगस्त को मुस्कान परमार (24) की मौत के मामले में सागर उर्फ दुर्गेश परमार निवासी राधाकृष्ण धाम कॉलोनी पर केस दर्ज किया है। पुलिस ने बताया कि मुस्कान की शादी अप्रैल 2018 में हुई थी। उसे शादी के बाद (4) और (2) साल के बेटे हैं। मुस्कान के पिता महेश ने बताया कि सागर शादी के बाद से ही मुस्कान से घरेलू बातों को लेकर मारपीट करता। मुस्कान यह बात अपने पिता महेश को बताती थी। पिता महेश बेटी से कहते थे

कि वे जमाई को समझा देंगे। महेश ने अपने समधी रमेश से भी इस बारे में बात की। लेकिन उन्होंने पति-पत्नी के विवाद को आपस में निपटाने का कहकर बात को टाल दिया। इसके बाद मुस्कान और सागर डेढ़ साल पहले गौतमपुरा इलाके में रहने आ गए। यहां भी सागर ने उसके साथ मारपीट की। उसने कई बार अपने पिता महेश को कॉल कर इस बात की जानकारी दी। जिसमें पिता उसे जाकर समझा देते। महेश ने अपने बयान में बताया कि 1 माह पहले बेटी मुस्कान के साथ सागर ने बुरी तरह से मारपीट की थी। जिसके बाद वह पति को छोड़कर बच्चों के साथ पिता महेश के घर चितौड़ा आ गई।

पिता महेश ने अपने बयान मे बताया कि मुस्कान से इस बारे में बात हुई तो उसने बताया कि जमाई दुर्गेश लड़कियों से बातचीत करता है। जब वह इस बात को लेकर रोक टोक करती है तो वह मारपीट करता है। कहा कि तुम्हें बातचीत पंसद नहीं तो आत्महत्या कर लो। वह हमेशा मरने के लिए ही कहता। पिता महेश के समझाने के कुछ दिन बाद मुस्कान वापस अपने ससुराल चली गई। इसके बाद 2 अगस्त की दोपहर में जमाई सागर का कॉल आया कि मुस्कान ने कुछ कर लिया है। पत्नी पार्वती को लेकर पिता महेश जब बेटी के घर पहुंचे तो वह अंदर पड़ी थी। पास में जमाई सागर बैठा था। बेटी मुस्कान को हिलाया तो कुछ नही बोल रही थी। उसे उठाकर नजदीक के महावीर अस्पताल ले गए। डॉक्टरों ने चेक करने पर बताया कि उसकी मौत हो गई। बाद में पुलिस को जानकारी देकर पोस्टमॉर्टम कराया। पिता ने पुलिस को दिए बयान में आरोप लगाया कि उनकी बेटी की मौत का जिम्मेदार जमाई सागर है।

7 बेटियां थीं एक बेटी छीन ली

मुस्कान के पिता ने बयान में बताया कि वह पेशे से किसान हैं। उनकी 7 बेटियां हैं। जिसमें मुस्कान दूसरे नंबर की है। उनका कोई बेटा नहीं है। उन्होंने सभी बेटियों को बेटे की तरह पाला है। जमाई ने उनसे एक बेटी को छीन लिया। पुलिस इस मामले में अभी पूरी पोस्टमॉर्ट्म रिपोर्ट का इंतजार कर रही है। जिसके बाद धाराएं बढ़ाई जा सकती है।

आईआईएम इंदौर आईपीएम की नई बैच तैयार

156 को मिला प्रवेश, इनमें पांच विदेशी छात्र भी

इंदौर (एजेंसी)। आईआईएम इंदौर के पांच वर्षीय कोर्स आईपीएम (इंटीग्रेटेड प्रोग्राम इन मैनेजमेंट) की 2024-29 बैच का इंडक्शन प्रोग्राम हुआ। आईपीएम कोर्स की इस बैच में कुल 156 छात्र हैं। इनमें पांच विदेशी छात्र भी हैं। आईआईएम इंदौर के इस स्पेशल कोर्स में एडमिशन के लिए हुई प्रवेश परीक्षा में कुल 28,596 छात्र शामिल हुए थे। उनमें से 156 का चयन हुआ है। कार्यक्रम का उद्घाटन आईआईएम इंदौर के डायरेक्टर प्रो. हिमांशु राय ने किया। राय ने कहा कि छात्रों को अनुशासन का खास ध्यान रखना होगा। पिछली उपलब्धियों को याद रखें और उनसे शक्ति प्राप्त

करें, ताकि आप पहला कदम उठा सकें। इस अवसर पर आईपीएम के चेयर प्रो. सौरभ कुमार ने नई बैच का स्वागत किया। उन्होंने कहा इस साल आईपीएम प्रवेश परीक्षा में इतनी बड़ी संख्या में आवेदन आना यह बताता है कि आईपीएम प्रतिष्ठित कार्यक्रमों में से एक है।

ऐसे मिला एडमिशन - जानकारी अनुसार 28 हजार से ज्यादा छात्रों में से प्रवेश परीक्षा के बाद 857 उम्मीदवारों को साक्षात्कार के लिए चुना गया था। फिर उनमें से 156 उत्कृष्ट विद्यार्थियों को प्रवेश दिया गया। इनमें 59 छात्राएं तथा 97 छात्र हैं। खास बात यह है कि वाणिज्य, जीव विज्ञान, गणित, कला और मानविकी जैसे अलग-अलग संकाय के छात्रों की इस बैच को अब पांच साल यहीं पढ़ना है।

छात्रों का सम्मान भी किया - आईपीएम कोर्स में पुरानी बैच के वे छात्र जिनका पहले तीन वर्षों में एकेडमिक परफार्मेंस बेहतरीन रहा, उनका सम्मान भी किया गया। कार्यक्रम के दौरान स्व. आद्या प्रभा छात्रवृत्ति की घोषणा की गई। आईपीएम की छात्रा नंदिनी सेठी को इससे सम्मानित किया गया।4 छात्र यूएस के, एक यूके से - इस बैच में 4 यूएसए से हैं, जबकि एक यूके से है।

इंदौर निगम घोटाले की ईडी ने जांच शुरू की

आरोपियों से 1.25 करोड़ जब्त; 20.8 करोड़ रुपए निवेश के दस्तावेज भी मिले

इंदौर (एजेंसी)। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा इंदौर नगर निगम में हुए करोड़ों के ड्रेनेज घोटाले की जांच शुरू कर दी हैं। घोटाले से संबंधित आरोपियों के ठिकानों पर की गई छापामार कार्रवाई में 1.25 करोड़ रुपए नगदी व करीब 20.8 करोड़ रुपए की संपत्ति व निवेश के दस्तावेज जब्त किए हैं। आरोपियों के बैंक अकाउंट भी सीज कर दिए हैं।जांच के दौरान पता चला, आरोपियों ने घोटाले की राशि की एफडी बनवाई और म्युचुअल

फंड में पैसा लगाया है। जमीन में निवेश के भी संकेत मिले है। आरोपियों से अब तक 22 करोड़ रुपए की जानकारी मिली हैं। दो दिनों तक ईडी की टीम ने आरोपियों के घर व अन्य स्थानों पर तलाशी ली। ईडी अफसरों के अनुसार, निगम में फर्जी बिल लगा कर करोड़ों रुपए का भुगतान लेने के मामले में अलग-अलग एफआईआर के आधार पर प्रकरण दर्ज किया है। जांच में पता चला, अधिकारियों ने ठेकेदारों के साथ मिलीभगत करके फर्जी बिल बना कर राशि निकली।

इंदौर की रामसखी की बहादुरी, लुटेरों को सलाखों तक पहुंचाया

मोबाइल लूट भाग रहे बदमाशों से भिड़ीं; लात मार बाइक गिराई, भीड़ आने तक दबोचे रखा

इंदौर (एजेंसी)। दूसरी कक्षा में पढ़ने वाली बेटी को स्कूल छोड़ने जा रही एक महिला दिनदहाड़े मोबाइल लूट करने वाले लुटेरों से भिड़ गई। गिरने के बाद भी महिला ने दौड़ लगाई और बाइक को लात मारकर गिरा दिया। फिर एक बदमाश को तब तक पकड़े रखा, जब तक लोग इकट्ठा नहीं हो गए। बाद में दो बदमाशों को पकड़कर थाने ले गई।

उनकी निशानदेही पर पुलिस ने तीसरे बदमाश को भी पकड़ लिया।बाणगंगा पुलिस के अनुसार 35 वर्षीय रामसखी प्रजापत पति अनेक सिंह निवासी भगतसिंह नगर ने वारदात के वक्त बहादुरी दिखाई। उनकी शिकायत पर आरोपी विशाल उर्फ सनम पिता फूलसिंह दीक्षित, आकाश पिता राम महेश कुशवाह और श्याम पिता रामाधार कुशवाह तीनों निवासी शिव कंठ नगर को पकड़ा है।

पहले बदमाश ने मुझे गिराया फिर मैंने- बकौल राम सखी मंगलवार दोपहर 12 बजे मैं अपनी बेटी को स्कूल छोड़ने के लिए जा रही थी। वहीं से मुझे 7वीं में पढ़ने वाले अपने बेटे को लेकर आना था। इस दौरान मैं अपने मोबाइल पर बात करते हुए चल रही थी। हम मां-बेटी जब बिस्किट फैक्टरी के पास पहुंचे तो पीछे से बाइक पर तीन बदमाश आए। पीछे बैठे एक बदमाश ने झपट्टा मारकर मेरा मोबाइल लूटने का प्रयास किया। उसके झपट्टा मारने से मैं नीचे गिर गई, तभी बदमाशों ने आगे जाकर अपनी बाइक रोकी। फिर एक बदमाश भागकर मेरी तरफ दौड़ा। उसने मेरे हाथ से मोबाइल छीन लिया। मैंने मोबाइल नहीं छोड़ा।जैसे-तैसे बदमाश ने मुझसे मोबाइल छीना तो मैं भी उसके पीछे दौड़ी। दो बदमाश पहले से बाइक स्टार्ट कर भागने के लिए खड़े थे। तब तक मैंने उछलकर उनकी बाइक में लात मार दी। उनकी बाइक मेरे ऊपर गिर पड़ी, जिससे मेरे एक पैर व दोनों हाथ में चोट आई। इसी दौरान मैंने एक बदमाश को पकड़ लिया। उसे छोड़ा नहीं। मैं और मेरी बेटी शोर मचाने लगे। यह सुनकर लोग दौड़कर आए। वहां काफी भीड़ लग गई। उन्होंने भी एक बदमाश को पकड़ लिया, जबकि तीसरा मौके से भाग निकला। फिर हम दो बदमाशों को लेकर थाने पहुंचे।

इंदौर में याचिका लगाने पर सवाल

इंदौर (एजेंसी)। 1900 करोड़ रुपए के क्रिप्टो करेंसी घोटाले में एनसीएलटी में सुनवाई हुई। एनसीएलटी के अध्यक्ष अहमदाबाद से वर्चुअल जुड़े जबकि सदस्य स्कीम 40 स्थित कार्यालय में उपस्थित थे। याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता वरुण रावल ने पैरवी की।एनसीएलटी ने कहा कि इस मामले में क्षेत्राधिकार मुंबई स्थित बेंच का है, इंदौर रीजन की खंडपीठ में कैसे याचिका दायर की गई। इस पर याचिकाकर्ता की ओर से बताया गया कि एनसीएलटी के नियम 11 में उल्लेख है कि व्यापक जनहित के मामले में किसी भी बेंच में सुनवाई हो सकती है। एनसीएलटी के अध्यक्ष और सदस्यों को यह इन्हेरेंट पावर है। इस पर एनसीएलटी ने याचिकाकर्ता को अगली सुनवाई पर अपनी बात रखने का निर्देश दिया है।

संपादकीय

सूचना आयोग की सुध कौन लेगा?

मप्र सरकार प्रदेश में भ्रष्टाचार पर अंकुश के भले कितने ही दावे करें, लेकिन राज्य में पारदर्शिता की गारंटी देने वाला सूचना आयोग जिस तरह से बंद पड़ा है, उसे देखकर तो यही लगता है कि सरकार खुद ही नहीं चाहती कि उसके काम काज में पारदर्शिता आए। भ्रष्टाचार पर भी अंकुश लगे। हालत यह है कि यहां इस साल मार्च तक मुख्य सूचना आयुक्त और सभी सूचना आयुक्तों का कार्यकाल पूरा हो चुकने के बाद से नई नियुक्तियां ही नहीं हुई हैं। यानी कि सूचना आयोग की सुध लेने वाला कोई नहीं है। जबकि इस दौरान रोजाना 50-60 नई अपीलें लंबित हो रही हैं। उपलब्ध जानकारी के अनुसार बीते मार्च में यहां लंबित प्रकरणों की संख्या करीब 5 हजार थी, जो चार महीने में बढ़कर 14 हजार के आसपास पहुंच गई है। जब से सूचना आयोग का गठन हुआ है, तब से लेकर बीते 10 सालों पहली बार ऐसी स्थिति बनी है, जब जब आयोग में सुनवाई के लिए एक भी आयुक्त नहीं है। सूचना अधिकार कानून के मुताबिक यदि आयोग में मुख्य सूचना आयुक्त और एक भी सूचना आयुक्त का सीधा मतलब आयोग है ही नहीं। हालांकि यह स्थिति अकेले मप्र की नहीं है, झारखंड, त्रिपुरा, गोवा और तेलंगाना में भी सूचना आयुक्तों के सभी पद खाली पड़े हैं।

बताया जाता है कि राज्य में लोकसभा चुनावों के दौरान मप्र सरकार ने आयोग में खाली पड़े पदों को भरने के लिए केंद्रीय चुनाव आयोग की अनुमति ली थी। प्रक्रिया शुरू हुई तो सरकार को राज्य सूचना आयुक्त के लिए 185 और मुख्य सूचना आयुक्त के 59 आवेदन भी मिले। चुनाव होने के बाद केंद्र में नई सरकार का गठन भी हो गया, पर सूचना आयोग अभी भी हाशिए पर ही है। दिल्ली की आरटीआई एक्टिविस्ट और सूचना के अधिकार के राष्ट्रीय अभियान की सदस्य अंजलि भारद्वाज ने 28 जुलाई को ही मुख्यमंत्री और नेता प्रतिपक्ष को आयोग के पद भरने के लिए एक पत्र भेजा है। इसके जवाब में प्रमुख सचिव सामान्य प्रशासन मनीष रस्तोगी ने इतना ही कहा कि सूचना आयुक्तों की भर्ती प्रक्रिया चल रही है। ऐसा लगता है कि राज्य सरकार की इस काम में ज्यादा रूचि ही नहीं है। क्योंकि आयोग काम करेगा तो मांगी गई सूचनाएं प्रशासन द्वारा न दिए जाने पर सूचना आयोग में अपीलें होंगी। अंततः प्रशासन और सरकार ही कटघरे में खड़ें होंगे। सरकार यही नहीं चाहती। गौरतलब है कि यूपीए 1 सरकार ने भ्रष्टाचार के खिलाफ 2005 में एक अधिनियम लागू किया था, जिसे सूचना का अधिकार यानी आरटीआई कहा गया। इसके अंतर्गत कोई भी नागरिक किसी भी सरकारी विभाग से कोई भी जानकारी ले सकता है। शर्त यह है की आरटीआई के तहत पूछी जाने वाली जानकारी तथ्यों पर आधारित होनी चाहिए। इसके तहत किसी सरकारी विभाग के विचार नहीं पूछे जा सकते। जानकारी प्राप्त करने के संवैधानिक अधिकार ने नागरिकों और सशक्त बनाया तथा सरकारी तंत्र में पारदर्शिता लाने की कोशिश की। कई मामलों में सूचना न देने पर आयोग ने सम्बन्धित लोगों को दंड भी दिया। अब स्थिति यह है कि कोई भी विभाग सूचना के अधिकार की तहत मांगी गई जानकारी को रोक नहीं सकता। लेकिन राज्य सरकार का अभी जो रवैया है, उससे नहीं लगता कि उसे इस बात की जल्दी है कि सूचना आयोग फिर पूरी सक्षमता से काम करे और भ्रष्ट तंत्र पर कुछ लगाम लगे। दरअसल सूचना आयोग का गठन न करना लोगों को सूचना के अधिकार से वंचित करना है। यह स्वस्थ लोकतंत्र और प्रशासन के भी हित में नहीं है।

वर्चस्व व बदलाव की राजनीति के बीच बांग्लादेश

नजरिया

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक भारत के राष्ट्रपति के ओएसडी रह चुके हैं। वर्तमान में पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय में चेयर प्रोफेसर हैं।

दक्षिण एशिया में बांग्लादेश की स्थितियाँ केवल बांग्लादेश के नागरिकों के लिए बेचैनी नहीं बनने वाली हैं, बल्कि दक्षिण एशिया के लोगों पर इसका असर सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक रूप से पड़ने वाला है। बांग्लादेश की अस्थिरता को इसलिए बहुत ही गंभीरता से लेने की आवश्यकता है। शेख हसीना बांग्लादेश की एक लोकप्रिय प्रधान मंत्री के रूप में स्वयं को स्थापित कर चुकी थीं और अपने स्वर्गीय पिता शेख मुजीबुर्रहमान की लीगेसी को आगे बढ़ा रही थीं। शेख मुजीबुर्रहमान बांग्लादेश के राष्ट्रपिता की हसियत रखते हैं और सन् 1971 में भारत की प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी ने उन्हें यह देश स्थापित करने में मदद की थी। यह बात अलग है कि हालात बहुत आज़ बदल गए और अब बांग्लादेश की जनता उन पर और शेख हसीना के पिता पर अपना गुस्सा प्रकट कर रही है। बांग्लादेश के लोगों की बेचैनी क्या है, स्थानीय लोग ज्यादा जानते हैं। तटस्थ भाव से प्रेक्षक यदि विश्लेषण भी करें तो आज़ जो स्थितियां हैं बांग्लादेश में, वे अब शेख हसीना के पूरी तरह खिलाफ हैं। कल तक वह लोकप्रिय महिला प्रधान मंत्री रही होंगी लेकिन आज़ जो उनके नाम पर आक्रोश है उसके भी कारण हैं। विडंबना यह है कि शेख हसीना हों या कोई भी शासक, कोई अपनी गलती स्वीकार नहीं करता लेकिन आक्रोश भी अनायाश नहीं उपजते हैं। प्रतिरोध व हिंसा की वजहें तो होती हैं।

समाज के विभिन्न वर्गों के लोग प्रतिरोध में शामिल हुए हैं और उन्होंने इस तरह के परिवर्तन को कर दिखाया है, जो जनवरी में हुए चुनाव में नहीं देख पाए थे। इसे दुनिया का एक धड़ा एक क्रांतिकारी कदम बता रहा है लेकिन अशांति और अराजकता की शुरुआत भी ऐसे ही होती है। शेख हसीना के कार्यकाल को जायज ठहराना भी उचित नहीं है लेकिन परिवर्तन की इस बयार में हिंसा, उपद्रव, आगजनी और नफ़रत का जो माहौल बांग्लादेश के हिस्से में आया है, उसके परिणाम को वहां की जनता को झेलना ही पड़ेगा। वैसे एशिया में दक्षिण एशिया का हिस्सा आजकल बहुत ही अस्थिर हो चुका है। भारत को छोड़ दिया जाए तो भारत के आसपास के देश आर्थिक तंगी, अनिश्चितता, अनचाही क्रांति के भेंट चढ़ चुके हैं। इन सभी समस्याओं के बीच भारत को अपनी यथा स्थिति बनाए रखने की चुनौती भी है और पड़ोसी देशों में शांति बनाए रखने में अपनी भूमिका भी तय करनी है। यह एक ऐतिहासिक चुनौती है जिसका सामना भारत आजकल कर रहा है। भारत में छोटे-बड़े जो प्रतिरोध हैं, उन्हें भी समझकर आगे बढ़ना है। आक्रोश व असंतुष्ट लोगों की भारत में कमी नहीं है। बांग्लादेश की इस अस्थिरता से ऐसे असंतुष्ट व आक्रोशित लोगों का मन बढ़ा है और वे ऐसे समय की प्रतीक्षा में हैं कि वे भी कुछ अप्रत्याशित कर पाएं। हालाकि भारत में, ऐसा स्वप्न देखना दिवा स्वप्न जैसा

है क्योंकि भारतीय लोकतंत्र और लोकतंत्र में स्थापित मूल्य इतना आसानी से किसी भी ऐसे तत्व को सफल नहीं होने देंगे।

बांग्लादेश, म्यांमार, पाकिस्तान, नेपाल और श्रीलंका जैसे देशों में जिस प्रकार की लोकतान्त्रिक व्यवस्था है और उनकी अदूरदर्शी सोच है, उसने इन देशों की हालत ख़राब कर दी। सेना या राजशाही ने भी समय-समय पर इन देशों की स्थितियों को बिगाड़ दिया और अब हालात यह है कि ये देश भारत से कन्नी काटने लगे हैं और प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से चीन के पिछलग्गू बनने के लिए तैयार बैठे हैं। चीन यही चाहता भी है कि सार्क देश यदि विखंडित सोच के साथ बन रहेंगे तो उसकी अपनी दादागिरी, उसका अपना प्रभुत्व बना रहेगा। वह भारत को आँख दिखा सकेगा और वीटो देश होने के नाते संयुक्त राष्ट्र में सुरक्षा परिषद तक की भारत की दावेदारी को पटकनी देता रहेगा क्योंकि अस्थिर देश भारत को परेशां करेंगे और भारत की मजबूरी होगी कि वह आत्मसुरक्षा में ही सही कोई न कोई कार्यवाही करे। कुल मिलाकर चीन अपने रणनीति में सफल होता जा रहा है और भारत के पडोसी देश भारत से दूर हटकर चीन के साथ होते जा रहे हैं।

दुनिया में बर्चस्व की राजनीति ऐसे ही अपना पाँव पसारती रही हैं और मोहरे बने देश बर्चस्व के पिछलग्गू बनकर पडोसी-धर्म नहीं निभाते और अपने ही पड़ोस में अस्थिरता लाने में भी कोई कोर-कसर नहीं छोड़ते। अब जो बांग्लादेश आमजनमानस है वह काफी आगे बढ़ चुका है। चीन जनक्रांति के नाम पर अपने पक्ष में माहौल कर रहा है प्रदर्शनों में सैकड़ों लोग मारे जा चुके हैं, जिनमें बहुत से बच्चे भी हैं, और 20 हज़ार से अधिक लोग घायल हुए हैं। इससे चीन को कोई मतलब नहीं है। चीन को इससे भी मतलब नहीं है कि बांग्लादेश की जनता अपने जनजीवन से हाथ धो रही है, उसे अपनी रोटी तेज आंच में सकने की आदत पड़ती जा रही है। बांग्लादेश में जुलाई में, बड़े पैमाने पर छात्र प्रदर्शन भड़क उठे थे, जो बढ़ती बेरोज़गारी के माहौल में, सरकारी रोज़गारों में जारी आरक्षण कोटा को ख़त्म किए जाने की मांग कर रहे थे। यह मांग ज़रूर उनकी अपने हिसाब से वाजिब मांग बताई गयी है जिसके कारण शेख हसीना आज पदच्युत हो चुकी हैं लेकिन इन प्रदर्शनों में हिंसा की राजनीति और मनोविज्ञान जो थियरी गढ़ रही है वह वर्चस्व की राजनीति के लिए ही ज्यादा मानी जा रही है सत्ताचुत करने न करने से वर्चास्वादी ताकतों को कोई असर नहीं पड़ता। यदि प्रदर्शनों व हिंसक गतिविधियों में शामिल करने वाले लोग कल वर्चास्वादी सोच को अपने मनोनुकूल सहयोग न करें तो वे अपने नए षड्यंत्र के लिए आगे बढ़ेंगे। ज़िम्मेदारों को जवाबदेह ठहराए जाने की मांगें वहां धरी की धरी रह जाएँगी षड्यंत्रकारी अपने नए रणनीति, कूटनीति का सहारा लेकर देश में अस्थिरता पुनः एक बार सौंपने से बाज नहीं आएंगे।

अब अंतरराष्ट्रीय एजेंसीज शोर मचाने लगी हैं कि बांग्लादेश की स्थिति नाजुक हैं। वोल्कर टुर्क जो कि संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार उच्चायुक्त हैं उनके ओर से कहा गया कि लोक असहमति को दबाने, अत्यधिक बल प्रयोग, दुस्सूचना के प्रसार व हिंसा भड़काव को उकसावा देने के प्रयासों को तुरन्त रोका जाना होगा। यह एक मानवीय अपील है लेकिन इन अपील के पीछे की उन वर्चस्ववादी ताकतों के मंसूबों पर अपील कब और कैसे होगी, इसके लिए न किसी के पास कोई उपाय है न ही कोई सूझ। यह एक छद्म-युद्ध लड़ने की भावना स्टेट्स के बीच तेजी से उभरी है इससे दुनिया का विनाश तो होना तय है। यह भी तय है कि दुनिया एकमेव होकर शांति के लिए कभी आगे नहीं बढ़ सकेगी। बांग्लादेश के अंतरिम सरकार के मुखिया जो बनाए गए हैं, मोहम्मद युनूस वह अस्थिरता को खत्म करने के लिए और अगली सरकार के गठन तक नेतृत्व करेंगे। नोबेल विजेता के हाथ में देश की बागडोर जाने पर एकबार तो उम्मीद की किरण दिखती है कि बांग्लादेश के लोग भले ही हिंसा के मोहाने पर खड़े हुए लेकिन इसके बाद अंतरिम सरकार का नेतृत्व एक ऐसे व्यक्ति के हाथों वे सौंपे हैं जो बांग्लादेश में अभूतपूर्व अपना सहयोग प्रदान किया है। यदि ऐसे ही वे आगे भी बढ़ेंगे तो देश को एक नई दिशा भी मिल सकती है लेकिन वर्चस्व की राजनीति के शिकार यदि मोहम्मद यूनुस को भी बना लिया गया तो क्या होगा, यह चिंता की बात है। फिलहाल आज का बांग्लादेश अस्थिर है। अनिश्चित है। आर्थिक रूप से भी बहुत अच्छी दशा में नहीं है। शेख हसीना की रणनीति उन्हें खा गयी। सेना और मोहम्मद यूनुस एक नए बांग्लादेश की खोज में संलग्न हैं लेकिन जो मारे गए वे कभी लौटकर अपने घर नहीं आएंगे। सब मिलकर देखा जाये तो यही प्रतीत होता है कि नया बांग्लादेश वर्चस्व की राजनीति व बांग्लादेश की अपनी सांस्कृतिक खुशियों की ओर लौटने तक तो एक ऐसे वैक्यूम में जा ही चुका है जो संयुक्त राष्ट्र के आगामी अधिवेशन में शोर का हिस्सा होगा जो जान गँवा दिए या जो घायल हैं या जो पूरे लड़ाई में डंटे रहे उनको व्यक्तिगतरूप से क्या लाभ होगा यह तो केवल कयास ही लगाया जा सकता है।

विनेश फोगाट के बहाने नारी की स्मिता से खेलवाड़

मुद्दा

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

लेखक स्तंभकार हैं।

विनेश फोगाट, भारतीय कुश्ती की वह शूरवीरा, जिसने देश को वैश्विक मंच पर गौरवान्वित किया, आज सोशल मीडिया के अंधेरे कोनों में अपमानजनक टिप्पणियों का सामना कर रही है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि कुछ लोगों ने अपनी घातक मानसिकता के चलते ऐसा नैतिक पतन दिखाया है, जो भारतीय संस्कृति और सभ्यता के मूल्यों का सीधा उल्लंघन है। ऐसे समाज में, जहां नारी को देवी का स्थान दिया गया है, वहां इस प्रकार की अभद्रता अत्यंत निंदनीय और विचारणीय है।

भारतीय समाज में महिलाओं के प्रति सम्मान की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। वेदों और पुराणों में नारी को शक्ति, धैर्य, और करुणा का प्रतीक माना गया है। परंतु, आज के युग में कुछ लोग अपनी विक्षिप्त मानसिकता के कारण इस परंपरा का अपमान कर रहे हैं। विनेश फोगाट के खिलाफ जिस तरह की घृणास्पद टिप्पणियां की जा रही हैं, वह इस बात का प्रमाण है कि इंसानियत और संवेदनशीलता जैसी भावनाएं अब केवल पुस्तकों तक सीमित हो गई हैं। इस तरह के कृत्य यह भी दर्शाते हैं कि हम अपनी सांस्कृतिक जड़ों से कितनी दूर चले गए हैं।

यह अत्यंत शर्मनाक है कि जिस देश में मां, बहन, बेटी को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है, उसी देश में कुछ लोग एक नारी के संघर्ष और उसकी उपलब्धियों को नजरअंदाज कर उसके प्रति अभद्र व्यवहार कर रहे हैं। ये लोग शायद भूल गए हैं कि उनकी यही घृणास्पद मानसिकता उनके परिवार की महिलाओं के प्रति भी हो सकती है। यह कोई सामान्य ट्रोलिंग नहीं, बल्कि भारतीय समाज के नैतिक पतन का स्पष्ट संकेत है।

विनेश फोगाट ने ओलंपिक के मंच पर न केवल अपने खेल कौशल से बल्कि अपनी दृढ़ता और साहस से भी

यह साबित किया कि वह सच्ची विजेता हैं। भले ही उनके हाथ में पदक न आया हो, लेकिन उन्होंने भारतीय खेल जगत को वह ऊँचाई दी है, जो अब तक किसी ने नहीं दी थी। वह केवल एक खिलाड़ी नहीं हैं, बल्कि एक प्रेरणा स्रोत हैं, जो न केवल शारीरिक प्रतिद्वंद्वियों से लड़ रही थीं, बल्कि समाज के उस घातक मानसिकता वाले वर्ग से भी, जो एक रेपिस्ट का समर्थन करने में संकोच नहीं करता।

यह बात अत्यंत विचारणीय है कि कैसे एक नारी, जिसने देश के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगा दिया, उसे उस समाज से इस प्रकार की अपमानजनक टिप्पणियां सहनी पड़ रही हैं। ऐसे लोग जो विनेश की हार का जश्न मना रहे हैं, उन्हें यह याद रखना चाहिए कि उन्होंने केवल खेल में ही नहीं, बल्कि उन सभी घृणास्पद मानसिकताओं के खिलाफ भी विजय प्राप्त की है, जो महिलाओं को सिर्फ एक वस्तु समझते हैं।

विनेश फोगाट ने अपने संघर्ष और कर्तव्यनिष्ठा से यह सिद्ध कर दिया है कि सच्ची जीत केवल पदक पाने में नहीं है, बल्कि उन सभी बुराइयों और कुरीतियों के खिलाफ खड़ा होने में है, जो समाज को गर्त में धकेल रही हैं। उन्होंने यह संदेश दिया है कि नारी केवल एक कमजोर कड़ी नहीं है, बल्कि वह समाज के पतन को रोकने वाली एक सशक्त शक्ति है।

आज के इस युग में, जहां तकनीक और सोशल मीडिया ने लोगों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता दी है, वहां इस स्वतंत्रता का दुरुपयोग भी हो रहा है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ-साथ जिम्मेदारी भी आती है। किसी की मेहनत, उसके संघर्ष और उसकी भावना का अपमान करना न केवल अनैतिक है, बल्कि वह समाज के नैतिक पतन का भी संकेत है।

समाज के उन लोगों के लिए, जो विनेश फोगाट के प्रति अपनी घृणा प्रदर्शित कर रहे हैं, यह आवश्यक है कि वे आत्ममंथन करें। उन्हें यह समझना होगा कि नारी का अपमान करना भारतीय संस्कृति का अपमान है। यदि हम सचमुच अपने देश की संस्कृति और सभ्यता का सम्मान करते हैं, तो हमें महिलाओं का सम्मान करना सीखना होगा। हमें यह समझना होगा कि नारी का अपमान करना, समाज के नैतिक पतन का प्रतीक है, और यह पतन हमें कहीं न कहीं हमारे अपने परिवार की महिलाओं तक भी ले जा सकता है।

इसलिए,यह आवश्यक है कि हम अपने समाज को पुनः अपनी मूल्यों की ओर लौटाएं। नारी का सम्मान करना केवल एक सांस्कृतिक कर्तव्य नहीं, बल्कि एक नैतिक दायित्व है। विनेश फोगाट जैसी महिलाओं ने हमारे देश को गौरवान्वित किया है, और उनका अपमान करने वाले लोग केवल अपने ही चरित्र का पतन कर रहे हैं।

समय आ गया है कि हम समाज में उन लोगों के खिलाफ खड़े हों, जो अपनी घातक मानसिकता के कारण महिलाओं का अपमान कर रहे हैं। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि भारतीय समाज नारी सम्मान के उन उच्च मानकों को पुनः स्थापित करे, जो कभी इसकी पहचान थे। केवल तभी हम एक सशक्त और संवेदनशील समाज की कल्पना कर सकते हैं, जहां हर नारी का सम्मान हो, और जहां विनेश फोगाट जैसी वीरांगनाओं को उनके संघर्ष और सफलता के लिए सम्मानित किया जाए, न कि अपमानित।

ईर्ष्या में आनंद की तलाश

कटाक्ष

दिनेश विजयवर्गीय

लेखक व्यंग्यकार हैं।

आज सुबह मुंशीराम मॉर्निंग वॉक के समय पार्क में घूमते हुए मिला । वह पिछले कई दिनों से नजर नहीं आ रहा था ।आज सफेद झक कुर्ता पायजामा पहने था। लगता है स्नान करके भी आया है। उसके चेहरे पर हंसी और खिलखिलाहट के बीच की स्थिति वाली मंद मुस्कान थी। मेरे नजदीक आकर बोला 'बहुत दिन हो गए गपशप लगाये।' हम जल्दी ही खाली पड़ी बैंच पर बैठ गए ।

कुर्ते की जेब से काजू किशमिश निकाल कर कहा लीजिए ! इनका खाने का आनंद। मैंने पूछा यह सफेद झकाझक कपड़े और यह ड्राई फ्रूट , क्या कोई शुभ समाचार है? वह बोला कोई विशेष समाचार नहीं है, पर मुझे यहां से सीधे माला रोड के मंदिर मंदिर प्रांगण में जाना है, वहां एक संत जी प्रवचन देते हैं। तो क्या धर्म आध्यात्मिक की ओर रुख कर रहे हो? अच्छा है , इससे तुम्हारी आत्मा में शुद्धता का प्रवेश होगा और प्रयास करोगे तो आत्मा परमात्मा भी बना सकते हो।

अरे ! नहीं अंकल ,मैं आत्मा परमात्मा के चक्कर में नहीं पड़ता और ना इस भौतिक सुख सुविधा के जमाने में आध्यात्मिकता की माला फैरना चाहता हूं। मैं तो उनसे ईर्ष्या कैसे करें ? और कैसे ईर्ष्या का आनंद मिल सके? यह सीखने जा रहा हूं। तुम भी गजब करते हो मुंशी ! वह तुम्हें गलत राह की ओर भला क्यों धकेल ने लगे? वह तो तुम्हें ज्ञानी ध्यानी सहानुभूति प्रेम प्यार वाली शिक्षा देंगे। तो फिर बतलाइए, मैं कहां से सीखूं ईर्ष्या करना ? ईर्ष्या करने वाले लोग मजा लेते हैं, जैसे उनके मुंह में मिश्री की डली घुल रही हो।

ईर्ष्या तो कमजोर मानसिकता है और आपसी प्रेम प्यार के दुश्मन है। इससे जितना बचो उतना ही अच्छा है। पर , मुंशी ज़िद पर अड़ा रहा , संत जी के पास ईर्ष्या की चतुराई सीखने जाने के लिए। वह बोला आपको ईर्ष्या सिखाना आता हो तो आप ही सिखा दो? मैं कुछ बोलता तभी उनका एक पड़ोसी कार में एक विदेशी नस्ल के

कुत्ते को घुमाने ले आया । मुंशी बोला यह देखो ! अभी नौकरी को दो साल भी नहीं हुए कि पता नहीं पैसों का कैसा पहाड़ा पढ़ता है जो दिन दुगनी रात चौगुनी आमदनी हो रही है । मुझे दस साल हो गए, एक ही स्कूटर से काम चला रहा हूं । पत्नी ज़िद कर रही है । पड़ोसी की तरह की कार लेकर कर आओ । चाहे कहीं से लोन लो, पर इसी सप्ताह हम कार में घूमेंगे।

वह रोज पड़ोसी की इस कार को देख मेरे दिल में ठक - ठक करती रहती है। अरे मुंशी तुम जिस ईर्ष्या सीखने की बात कर रहे हो, वह तो तुम्हारी घरवाली तुम्हें अच्छे से सिखा देगी। तुम यह जो पड़ोसी की कार के बारे में बता रहे हो, यही तो ईर्ष्या जनित सोच है। सच ! तुम अपनी पत्नी से ही बहुत अच्छे से सीख सकते हो। तुम्हे इसके लिए यहां वहां कहीं जाने की जरूरत नहीं है। अब मुंशी एकदम से उठ खड़ा हुआ और संत जी के यहां न जाकर, सीधा अपने घर की ओर, ईर्ष्या में आनंद की तलाश के लिए पत्नी के पास गुरु मंत्र सीखने चल दिया।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

नाम में रखा है बहुत कुछ !

व्यंग्य

डॉ. प्रेमचंद द्वितीय

लेखक व्यंग्यकार हैं।

दुकानदारों को नाम पहचान लिखे जाने के पट चट खुले, लेकिन उसके साथ पटाक्षेप भी चट पट फिल वक्त हो गया । यह खबर पढ़कर पं शिवनारायण जी सुबह-सुबह ज्ञान चबूतरे पर आकर बोले, नाम,भी क्या चीज है। सरकार नाम लिखने का कहती है तो बुरा लगने के साथ बवाल मच जाता है,लेकिन कई नाम न लिखने पर मलाल महसूस करते हैं और रोष जताते हैं । यह कैसी भी विसंगति है कि नाम लिखो तो नाराजी,नाम न लिखो तो महानाराजी ! हर छोटा बड़ा आदमी नाम और पहचान बढ़ाने के लिए लाख जतन करता है, नाम पहचान बढ़ाने पर गर्व से फूले नहीं समाता है । लेकिन मुई कुछ सरकारों ने घर की दुकान के बाहर नाम लिखने का फरमान जारी क्या किया,

कईयों के अरमान धरे रहने का संकट पैदा हो गया । वे बोले नाम लिखने से तो साख तो बढ़ती है लेकिन नाम घर के बाहर आने पर साख सेंसेक्स की भांति गिरने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ती है।

जब ज्ञान चबूतरे पर जब नाम की बात चली तो ललित भाई बोले नाम ही तो सब कुछ है। नाम में दम भी है, और दाम भी है। नाम से पहचान है,नाम से अपमान है,नाम में शोहरत भी है,नाम में शरारत भी है,नाम से नामकरण है ।तो नाम से ही हरण भी है,जो नाम वाला है वह बदनाम भी है और नाम वाला नामी भी है ! अपनी औकात और अहमियत की सुनामी भी नाम में ही है।

इस पर मनोज सर बोले नाम ही तो ऐसी चीज है जिसकी पहचान के लोग के लिए लोग मर मिटे हैं। शेक्सपियर ने कहा था कि नाम में क्या रखा हैं। भारत ही नहीं अनेक देश है जहा नाम की लड़ाई होती है। नाम के नाम पर कंफ्यूजन होता है। नाम पर ही सड़के होती है और नाम के लिए ही लोग सड़क पर आ जाते हैं। जो जो शासक रहे उन्होंने किसी ने नाम पर अपने सिक्के चलाए तो किसी ने नाम पर सड़क, भवन,ऑफिस आदि खोल दिए। मुगलों ने सड़के कई बादशाहों के नाम कर दी तो ब्रिटिश ने विक्टोरिया नाम के सिक्के,स्कूल चलाएं।

इस पर सुनील भैया बोले जब विदेश के नाम पर बात चली है तो चीन को क्यों भूले,हर,नामचीन, बनना चाहता है तो कोई अंकों से नाम चलाना चाहता है कोई जॉर्ज पंचम,एलिजाबेथ द्वितीय, तो कोई प्रेमचंद द्वितीय नाम को, अद्वितीय,बनाने के लिए चलाते रहते हैं।

नाम के लिए अंतरराष्ट्रीय संघर्ष तो है लेकिन कस्बे और नगर भी नाम की लड़ाई से अछूता नहीं है ।खबरों में नाम के लिए कई नाम अनामी होने के बावजूद ज्ञापन, विज्ञापन, धरना प्रदर्शन करते हैं।

भारत छोड़ो आंदोलन

चित्रा माली

सहायक प्रोफ़ेसर गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता।

भारत छोड़ो आंदोलन की नायिकाएं

9 अगस्त 1942 का दिन भारतीय राजनीति के लिए ऐतिहासिक महत्व रखता है और साथ ही यह महिलाओं के लिए महिलाओं के राजनीतिक नेतृत्व के लिए भी खासा महत्व रखता है। आज ही के दिन भारत छोड़ो आंदोलन का आगाज हुआ था। इस पूरे अगस्त माह को अगस्त क्रांति माह भी कहा जाता है। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की सक्रिय सहभागिता का यह उत्कर्ष आयाम भी था। भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत सेवाग्राम आश्रम (वर्धा) से होती है और वहीं इसकी प्रस्तावना रखी गई थी बाद में यह आंदोलन स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए मील का पत्थर साबित होता है। आंदोलन की प्रस्तावना पर विचार विमर्श के लिए 14 जुलाई 1942 को एक बैठक का आयोजन किया गया। इसके बाद कांग्रेस कार्य समिति की बैठक में भी इस प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान की गई। मुंबई के ग्वालिया टैंक में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ जिसमें आवाम की भारी उपस्थिति में गांधी जी के द्वारा ऐतिहासिक नारा दिया गया 'करो या मरो'। गांधी जी ने रियासतों की आवाम से भी इस आंदोलन में शामिल होने का आह्वान किया,साथ ही राजाओं,जमींदारों को भी चेतावनी दे डाली कि वे भारतीय जनों की प्रभुसत्ता और स्वतंत्रता को स्वीकार करें क्योंकि भारत में ब्रिटिश शासन व्यवस्था के साथ साथ रियासतों की भी अपनी अलग व्यवस्था थी,उसमें भी व्यक्ति स्वतंत्र नहीं था। इस आंदोलन के द्वारा बाहरी और आंतरिक शासन व्यवस्था से मुक्ति की बात की गई। आंदोलन में ब्रिटिश सरकार के शासन को न मानने और उसके बहिष्कार की बात की गई। साथ ही इस आंदोलन ने भारत के सभी जनों को स्वतंत्रता के लिए प्रेरित किया। इस नारे व आंदोलन के प्रस्ताव ने आवाम में एक नई ऊर्जा और जोश का संचार किया। इसकी कल्पना गांधी जी ने भी नहीं की थी कि इतना अधिक जन समर्थन इस आंदोलन को मिलेगा। 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' का नारा यूसुफ मेहर अली ने दिया था। आंदोलन का मुख्य कारण क्रिप्स मिशन की असफलता था। क्रिप्स वार्ता के असफल होने पर कांग्रेस के लिए यह आवश्यक हो गया कि वह राष्ट्रीय आंदोलन के बारे में एक निश्चित रणनीति तैयार कर ले। लोहिया ने अमेरिका और ब्रिटेन के सामने विकल्प प्रस्तुत किया कि युद्ध को सही मायने में राष्ट्रों की स्वतंत्रता का युद्ध बना दिया जाए इसी के साथ उन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए तत्काल संघर्ष करने पर जोर दिया। इसी संदर्भ में लोहिया ने एक लेख लिखा 'विश्वासघाती जापान या आत्मसंतुष्ट ब्रिटेन' लोहिया के इस लेख ने सभी नेताओं को राष्ट्रीय आंदोलन की नीति और अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए विवश कर दिया। गांधी जी ने 'हरिजन' के 19 अप्रैल 1942 के अंक में लोहिया के इस लेख को प्रकाशित किया। इस लेख के अंत में गांधी जी ने लिखा 'मेरी उम्मीद है कि सभी संबंधित इसके प्रति ध्यान देंगे।' इसी अप्रैल लोहिया गांधी जी के पास एक सप्ताह रहे और गांधी जी को लगातार संघर्ष जारी रखने के लिए मनाते रहे। फलस्वरूप 26 अप्रैल 1942 के 'हरिजन' के अंक में गांधी जी ने लिखा कि 'एशिया और अफ्रीका की जातियों का शोषण और गुलामी,इन दो पापों के लिए ब्रिटेन को दंड देने की दृष्टि से - बदले के न्याय के रूप में नात्सी जाति का उदय हुआ है'। इसके तत्काल बाद गांधी जी ने अंग्रेजों से भारत छोड़ने की बात कही। गांधी जी ने कहा कि 'मैं अभी तक ब्रिटेन से सहानुभूति रखता था, लेकिन आज मेरा मन इस नैतिक समर्थन से भी इंकार करता है'। गांधी जी ने 'भारत छोड़ो' और 'अहिंसात्मक असहयोग' की भूमिका भी प्रस्तुत की। 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पर इलाहाबाद में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी में चर्चा होनी थी लेकिन गांधी इसमें शरीक न हो सके,पर प्रस्ताव का मसविदा मीरा बहन के हाथों अधिवेशन में भेज दिया गया। इस प्रस्ताव पर जमकर बहस हुई, वाद - विवाद हुआ और लोहिया ने इस प्रस्ताव को ज्यों का त्यों मानने की सलाह दी। लोहिया गांधी जी से मिलने सेवाग्राम आश्रम पहुंचे और उन पर तत्काल संघर्ष शुरू करने के लिए दबाव बनाने लगे। साथ ही कुछ योजनाएं भी लोहिया ने गांधी के समक्ष रखीं जिनमें से एक थी कि 'भारत के सभी शहरों से पुलिस व फौज को हटा लेने के लिए सरकार को विवश किया जाए। उनका तर्क था कि 'बिना पुलिस या फौज के शहर' घोषित करने से न उस शहर में पुलिस होगी और न ही फौज जिससे वह शहर हथियारों का उत्पादन का केंद्र नहीं बन पाएगा। सुरक्षा के लिहाज से यह परिणाम होगा कि दुश्मन उन शहरों को बर्बाद नहीं कर पाएगा और न ही उन पर बमों की वर्षा होगी'। लोहिया ने इतिहास, भूगोल और राजनीतिक दृष्टिकोण से भी अपने प्रस्ताव के औचित्य को प्रमाणित किया। साथ ही अश्वत्थामा और कुरुक्षेत्र की मिसालें भी पेश की जिसमें जमाने में भी युद्धरत सेना मानवता की दृष्टि से बड़े शहरों में नहीं लड़ती थी। गांधी जी लोहिया के इन तर्कों से सहमत हुए और इस बाबत उन्होंने वायसराय को पत्र भी लिखा। लोहिया गांधी जी के इन प्रयासों से संतुष्ट नहीं थे वे तत्काल संघर्ष शुरू करना चाहते थे इसलिए वे गांधी जी से 29 जुलाई को फिर मिले,गांधी ने उनसे दस दिनों का समय और माँगा जिसको लेकर लोहिया सशंकित थे लेकिन ठीक दस दिन बाद 8 अगस्त 1942 मुंबई के ग्वालिया टैंक में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ जिसमें आवाम की भारी उपस्थिति में गांधी जी के द्वारा ऐतिहासिक नारा दिया गया 'करो या मरो'। 9 अगस्त की सुबह गांधी जी समेत कांग्रेस के सभी बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया था जो आंदोलन का नेतृत्व करने वाले थे। ऐसी परिस्थिति में आंदोलन की कमान महिलाओं द्वारा संभाली गई और महिलाओं को राजनीतिक नेतृत्व करने का अवसर मिला। अरुणा आसफ अली और सुचेता कृपलानी ने इस आंदोलन को आक्रामक रूप दिया तो उषा मेहता ने 'कांग्रेस रेडियो' के जरिए आंदोलन को देश के हर कोने तक पहुंचा दिया था। अरुणा आसफ अली ने अपने पति के साथ मुंबई में होने वाले कांग्रेस अधिवेशन में शिरकत की थी साथ ही वे भारत छोड़ो प्रस्ताव के पारित होने के अवसर पर भी मौजूद थी। प्रस्ताव पास होने के दूसरे दिन जब अधिकतर बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया तो अरुणा आसफ अली ने बंबई के ग्वालिया टैंक मैदान पर एकत्र विशाल जनसमूह के मध्य झंडारोहण समारोह की अध्यक्षता की ओर वहां भारतीय झंडा फहराया। सभा में आए जनसमूह पर ब्रिटिशर्स ने आंसू गैस के गोले छोड़ने,बर्बर लाठीचार्ज करने के साथ साथ गोलियां भी चलाई गईं। इसके बाद अरुणा आसफ अली आंदोलन को सक्रिय रखने के लिए और गिरफ्तारी से बचने के लिए भूमिगत हो गई। सरकार द्वारा उनकी संपत्ति को जब्त कर नीलाम कर दिया गया। वे राममनोहर लोहिया के साथ कांग्रेस के मासिक पत्र 'इंकलाब' की संपादक बनीं। अखबार में 1944 के अंक में उन्होंने स्वतंत्रता सेनानियों को सलाह दी कि वे बुद्धिजीवियों द्वारा चलाई जा रही हिंसा और अहिंसा की तार्किक बहस के चक्कर में न पड़े क्योंकि बहस से मौजूदा कड़ी सच्चाई से ध्यान हटेगा.....'मैं चाहती हूं कि देश का प्रत्येक छात्र और नौजवान खुद को आनेवाली क्रांति का सिपाही समझे। इस बीच सरकार ने उनकी गिरफ्तारी के लिए पांच हजार रुपए का इनाम भी घोषित किया था। वे बीमार पड़ गई उनकी बीमारी की खबर सुनकर गांधी जी ने उन्हें आत्मसमर्पण कर देने का सुझाव दिया। अपने संदेश में गांधी जी ने कहा- 'मैं तुम्हें एक संदेश भेजा था कि तुम भूमिगत रह कर नहीं मरोगी। तुम हड्डियों का ढांचा मात्र बनकर रह गई हो। बाहर आकर आत्मसमर्पण कर दो और पुरस्कार की जो राशि तुम्हारी गिरफ्तारी के लिए घोषित की गई है उसे स्वयं जीतो। पुरस्कार राशि को हरिजनों के कल्याण के लिए संभाल कर रखो। इसके बाद भी अरुणा भूमिगत ही रहीं और 26 जनवरी 1946 को गिरफ्तारी के वारंट के रद्द होने के बाद ही बाहर आईं। अरुणा आसफ अली को स्वतंत्रता आंदोलन की महान बूढ़ी महिला और 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन की नायिका के रूप में याद किया जाता है। गांधी अरुणा आसफ अली और सुचेता कृपलानी जैसी स्त्रियों के इस आक्रमक रवैये के सख्त खिलाफ थे। उषा मेहता ने जनसंचार के लिए रेडियो को अपना माध्यम बनाया। 27 अगस्त 1942 को भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान उषा मेहता ने अपने सहयोगियों के साथ खुफिया 'कांग्रेस रेडियो' का शुभारंभ किया। 'कांग्रेस रेडियो' की पहली घोषणा का प्रसारण भी उषा की आवाज में ही हुआ था। घोषणा में उषा मेहता ने कहा था कि 'यह कांग्रेस रेडियो है भारत में कहीं से,कहीं पे भारत में 42.34 मीटर तरंग पर काल कर रहा है। यह रेडियो प्रतिदिन अपनी जगह बदलता था ताकि ब्रिटिश अधिकारी उसे पकड़ न सकें। इस खुफिया रेडियो को राममनोहर लोहिया और अच्युत पटवर्धन सहित कई प्रमुख नेताओं का सहयोग प्राप्त था। रेडियो पर महात्मा गांधी सहित भारत के कई प्रमुख नेताओं के रिकॉर्ड भाषण प्रसारित किए जाते थे ताकि जनता अपने नेता से अपने स्वाधीनता के संकल्प से जुड़ी रहे। उषा मेहता और उनके सहयोगी ब्रिटिशर्स को तीन महीने तक चकमा देने में सफल रहे और तीन महीने तक निर्बाध रूप से रेडियो पर भारत छोड़ो आंदोलन की सूचनाओं का और राष्ट्रीय नेताओं के रिकॉर्डेड भाषणों का प्रसारण करते रहे। तीन महीने के बाद उन्हें और उनके सहयोगियों को गिरफ्तार कर लिया गया। उषा मेहता को खुफिया कांग्रेस रेडियो चलाने के कारण चार साल की सजा सुनाई गई। जेल में उनका स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया और उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया। 1946 में उन्हें रिहा कर दिया गया था। कांग्रेस रेडियो को आल इंडिया रेडियो के समानांतर खड़ा करने का श्रेय उषा मेहता को ही जाता है। उषा मेहता के देश के लिए कुछ भी कर गुजरने के जज्बे से ही यह संभव हो पाया। 21 मार्च 2024 में ओटीटी प्लेटफार्म पर 'ऐ वतन मेरे वतन' फिल्म आई थी जिसका निर्देशन कन्नन अय्यर ने किया था जो उषा मेहता पर आधारित फिल्म है जिसमें भारत छोड़ो आंदोलन की पृष्ठभूमि और उसमें कांग्रेस रेडियो की भूमिका के साथ उषा मेहता के व्यक्तिगत जीवन को भी दर्शाया गया था। लेख में भारत छोड़ो आंदोलन की दो ही नायिकाओं पर चर्चा की गई है लेकिन आंदोलन से जुड़ी कई दृश्य और अदृश्य महिलाएं मौजूद हैं जिन्होंने आंदोलन में सहभागिता के साथ नेतृत्व की महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन भी किया है। उन सभी महिलाओं को उनके जज्बे को सलाम। गांधी आरंभ में महिलाओं के द्वारा सड़कों पर उतरकर सत्याग्रह करने के खिलाफ थे इसके लिए वे यह दलील देते है कि अंग्रेज सरकार महिलाओं पर हिंसा करने से परहेज करती है। जिस प्रकार युद्ध भूमि में गाय को साथ ले जाना कायरता की पहचान है वैसे ही किसी आंदोलन में महिलाओं को साथ ले जाना भी कायरता होगी। सविनय अवज्ञा आंदोलन (नमक सत्याग्रह) की दांडी यात्रा के लिए गांधी जी ने सत्तर सत्याग्रहियों में से एक भी महिला को शामिल नहीं था। जिसका विरोध सरोजनी नायडू,मृदुला साराभाई, खुर्शीदबेन,सरला देवी चौधरानी द्वारा किया गया था और गांधी जी से मांग की थी कि भारत की किसी भी समस्या के समाधान में महिलाओं की उपस्थिति के बिना आंदोलन,सम्मेलन या संगठन का आयोजन व्यर्थ है। भारत की स्वाधीनता के लिए आयोजित किसी भी आंदोलन,यात्रा,प्रदर्शन या जेलों को भरने में महिलाओं की भागीदारी को रोकना भी अनुचित है। गांधी जी ने इन मांगों को मान लिया जिसके परिणामस्वरूप सरोजनी नायडू ने दांडी मार्च में भाग लेकर सारी महिलाओं की भागीदारी का मार्ग प्रशस्त किया। नमक सत्याग्रह में 80 हजार सत्याग्रहियों को गिरफ्तार किया गया था जिसमें 17 हजार महिलाएं थीं। वहीं भारत छोड़ो आंदोलन के समय ब्रिटिश सरकार ने यह सोच था कि जब गांधी जी और कांग्रेस के नेतृत्वकर्ता ही न होंगे तो यह आंदोलन अपने आप ही समाप्त हो जाएगा। लेकिन यह निर्णय ब्रिटिश सरकार के लिए गलत साबित हुआ। इससे देशभर की आवाम में रोष फैल गया इसके फलस्वरूप कई जगह धरना प्रदर्शन, हड़ताल, जुलूस निकाले जाने लगे जिनमें महिलाओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया और आंदोलन का नेतृत्व भी किया। समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में भी ब्रिटिश शासन के खिलाफ खबरें प्रकाशित की जाने लगीं। इसके बाद कई पत्र पत्रिकाओं के लाइसेंस रद्द कर दिए गए। पुलिस द्वारा सुबह ही समाचार पत्रों को जब्त कर जला दिया जाता था ताकि खबरें जनता तक न पहुंचे। अगस्त के मध्य में ही यह आंदोलन शहरों की सीमा लांघकर भारत के गांवों और छोटे कस्बों तक पहुंच गया। तमाम बड़े शहरों के मजदूरों ने भी हड़ताल कर आंदोलन में भाग लिया। इस आंदोलन के आरंभ से ही गांधी जी समेत सभी नेतृत्वकारी जब जेल में थे तो जनता पर किसी भी प्रकार की हिंसा न करने का दबाव अधिक था। इस आंदोलन ने एक तरह से स्वानुशासन का प्रशिक्षण भी लोगों को दिया। लेकिन ब्रिटिश सरकार के अत्याचारों से आक्रोशित आवाम ने ब्रिटिश सरकार के द्वारा स्थापित प्रतीकों जैसे रेल व रेल की पटरियां,डाकखाने, टेलीफोन के तार,कई बड़े भवनों व न्यायालय को निशाना बनाया गया और तोड़ फोड़ की। भारत छोड़ो आंदोलन के गांधी और अन्य आंदोलन के गांधी में भी काफी परिवर्तनों को देखा जा सकता है। असहयोग आंदोलन जब अपने चरम पर था चौरी चौरा कांड में हुई हिंसा के बाद गांधी पूरे आंदोलन को वापिस ले लेते है जिसका कांग्रेस और सभी बड़े नेता विरोध करते है लेकिन गांधी साध्य साधन की शुचिता और अहिंसा पर अडिग अपने सत्याग्रह पर डटे रहते है। लेकिन इस आंदोलन के दौरान जेल में बंद गांधी से जब ब्रिटिश सरकार ने कहा कि वे आंदोलनकारियों ने हिंसा न करने की अपील जारी करें,तो गांधी जी ने ऐसा करने से मना कर दिया। इसके पूर्व चौरी चौरा की घटना या अन्य हिंसक घटनाओं के लिए गांधी जी आंदोलनकारियों को जिम्मेदार ठहराते थे,वहीं इस बार गांधी जी ने हिंसा के लिए ब्रिटिश शासन व्यवस्था के दमन को इसके लिए जिम्मेदार ठहराया आंदोलनकारियों को नहीं। इसका कारण कहीं न कहीं ब्रिटिश शासन प्रणाली का भारत की मासूम जनता पर लगातार बढ़ता दमन और अत्याचार हो सकता है। 10 फरवरी 1943 को आगा खां पैलेस की जेल में गांधी जी ने ब्रिटिश सरकार पर दबाव डालने के लिए 21 दिन का उपवास करना प्रारंभ कर दिया। उपवास का देश की आवाम के साथ साथ दुनिया के संगठनों और संस्थाओं पर व्यापक प्रभाव पड़ा लोगों का ध्यान इस आंदोलन पर आकृष्ट होने लगा। ब्रिटेन की साम्राज्यवादी नीति भारत की स्वतंत्रता के आड़े आ रही थी जिसे क्रिप्स मिशन के प्रस्ताव से समझा जा सकता है इसीलिए गांधी जी ने पूर्ण स्वराज की प्राप्ति को लक्ष्य बनाकर भारत छोड़ो आंदोलन का आह्वान किया। साथ ही इस आंदोलन से एक विश्वव्यापी संदेश भी दिया कि भारत किसी भी हिंसक शक्ति के साथ नहीं है। गांधी जी राज्य को संगठित हिंसा मानते थे जिससे राज्य की सत्ता एक संगठित हिंसा का प्रतिनिधित्व करती है। इस कारण इस संगठित हिंसा का मुकाबला अहिंसा के अतिरिक्त नहीं किया जा सकता है। अहिंसा व्यक्तिगत स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए आवश्यक है। यदि हिंसा और असत्य से स्वराज की प्राप्ति हो भी जाती है तो सभी लोग अपने विरोधियों को दबाने और उनका समूलनाश करने में इसका उपयोग करने लगेंगे जिससे व्यक्तिगत स्वतंत्रता खतरे में पड़ जाएगी। अहिंसा के द्वारा ही सच्चे स्वराज की स्थापना की जा सकती है। साथ ही व्यक्तिगत जीवन को संगठित बनाए रखने के लिए भी अहिंसा की आवश्यकता होती है। उपनिवेशवादी शासन व्यवस्था में भी सत्य और अहिंसा के माध्यम से ही स्वराज की प्राप्ति संभव हो सकी। गांधी जी के अनुसार स्वराज मतलब स्वयं का शासन था। देश की आंतरिक व्यवस्था और उपनिवेशवादी व्यवस्था से परे प्रत्येक व्यक्ति की स्वतंत्रता और आत्मानुशासन की व्यवस्था स्वराज है। इस आंदोलन की यह सफलता थी कि ब्रिटिश सरकार भारत छोड़ने के लिए विवश हुई और भारत उपनिवेशवाद की गुलामी से आजाद हुआ।

विश्व मूल निवासी दिवस भारत के परिपेक्ष में औचित्यहीन

मूल निवासी दिवस

डॉ. भूपेंद्र कुमार

लेखक शिक्षाविद हैं।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था 'मैं इस पहेली को सुलझाने में सक्षम नहीं हूं मेरी राय में हम सभी आदिवासी हैं मुझे यह भेदभाव पसंद नहीं है जहां कुछ मतभेद हो सकते हैं। हमारे देश में विभिन्न प्रकार की जातियां हैं। जहां अनेक जातियां प्रचलित है, चाहे वह स्वयं को ब्राह्मण कहे या क्षत्रिय वे सभी आदिवासी हैं। हमें अपने देश से ऊंच नीच के सभी बीडीओ को समाप्त करना होगा।' भारत एक प्राचीन देश है और यहां की सभ्यता लाखों वर्ष पुरानी है हम अगर 9000 वर्ष पूर्व श्री राम की जन्म से संस्कृति को माने उसे समय सभी लोग आदिवासी थे अगर उससे पूर्व की सभ्यता में भी जाएं तो समय कोल,भील जातियां थी वह सभी आदिवासी वनवासी बंधु थे। हमें यह जानना अति आवश्यक है मूलनिवासी संकल्पना का वास्तविक इतिहास क्या है वर्ष 1989 में एलो द्वारा 'राइटर ऑफ़ इंडीजीनस पीपल' कन्वेंशन क्रमांक 169 घोषित किया गया जिसे विश्व के 189 में से केवल 22 देशों ने स्वीकार किया। जिसका मूल कारण इंडियन पीपल शब्द की परिभाषा को स्पष्ट करना था भारत में भी इस संधि पर हस्ताक्षर किए।

इसका मतलब मूल निवासी दिवस भारत के परिपेक्ष में एक विभाजन करने का प्रयास है। भारत के वनवासी समाज में नायकों की लंबी सूची है हम कोई एक दिन नहीं चुन सकते उनके सौर साहस और बीटा को याद करने के लिए अपितु हम उनके सुर साहस और गीता को प्रणाम करते हुए गौरवशाली इतिहास में हमेशा स्मरण रखते हैं। सही मायने में कुछ वैश्विक शक्तियां हमें दिग्भिमित कर रही हैं।

कोलंबस दिवस के विरोध की परिणिति है विश्वमूल निवासी दिवस संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 23 दिसंबर 1984 को अपने प्रस्ताव में निर्णय लिया कि हर साल 9 अगस्त को 'इंटरनेशनल डे ऑफ द वर्ल्ड इंडीजीनयस' मनाया जाएगा हिंदी में इसे अनुवादित करो तो यह विश्व मूल निवासी दिवस कहलाएगा लेकिन भारत में इसे अति उत्साह से विश्व आदिवासी दिवस के नाम से पुकारा जाता है इससे ऐसे दर्शाया गया कि संयुक्त राष्ट्र महासभा दुनिया भर के आदिवासियों के हितों को लेकर गंभीर है इसका परिणाम यह हुआ कि विश्व की दूसरे देशों समेत भारत में भी ऐसे जोर-शोर से मनाया जाने लगा लेकिन दुनिया में इस बात को छुपाया गया कि वास्तव में विश्व आदिवासी दिवस की न्यू कोलंबस के विरोध में अमेरिका में रखी गई थी वही कोलंबस जो 1942 में अमरीका पहुंचा था और उसने अमेरिका के मूल निवासियों का सफाया किया था वास्तव में इस दिवस का विश्व में दूसरे देशों से कोई संबंध नहीं है भारत से तो कतई नहीं क्योंकि यह दिन जनजाति या वनवासी लोगों के लिए नहीं बल्कि केवल अमेरिका के मूल निवासियों की याद में तय किया गया है अमेरिका में हर वर्ष 12 अक्टूबर को कोलंबस दिवस मनाया जाता है वहां के मूल निवासियों का मानना है कि कोलंबस उसे उपनिवेशी शासन व्यवस्था का प्रतिनिधि था जिसने नेटिव अमेरिकी अंश का नरसंहार किया इसी कोलंबस दिवस के विरोध में आदिवासी दिवस मनाने की मांग उठी हमें यह समझना होगा की अंग्रेजी में नेटिव या इंडीजीनस शब्द मूलनिवासियों के लिए प्रयुक्त होता है लेकिन अंग्रेजी के ट्राइबल शब्द का अर्थ मूल निवासी नहीं होता बल्कि ट्राइबल शब्द का अर्थ होता है जनजाति अमेरिका के संदर्भ में मूल निवासी शब्द शायद ठीक हो सकता है क्योंकि जिस अमेरिका में इसकी शुरुआत हुई वहां की स्थिति दो पहाड़ है इसका मतलब यह है कुछ आदिवासी मूल निवासियों की है जो कोलंबस के आने के बाद अपने अस्तित्व को बचाने के संकट से ही गिर गई थी बाकी आबादी औपनिवेशिक काल के दौरान बाहर से अमेरिका पहुंचे लोगों की है मूलनिवासी शब्द का अमेरिका के लिए महत्व हो सकता है लेकिन भारत में मूल निवासी शब्द का अस्तित्व ही नहीं है भारत के इतिहास में नेटिव अमेरिका जैसा कोई संघर्ष ही नहीं हुआ फिर भी भारत में मूल निवासी शब्द का उपयोग केवल एक संयंत्र मात्र है हम भारतीय भी कोलंबस के द्वारा किए गए नरसंहार को विश्व की निर्मम घटना मानते हैं और अमेरिका के मूल निवासी के लिए संवेदना भी व्यक्त करते हैं लेकिन भारत में जिस तरह से मूल निवासी शब्द और विश्व आदिवासी दिवस मनाया जाने का प्रचलन शुरू हो गया है उसका कोई तारतम नहीं है भारत में लगभग 705 जनजातीय हैं इन जनजातियों का अपना गौरवशाली व संबद्ध इतिहास है भारत में वर्ण व्यवस्था के तहत सभी ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिकाओं का निर्वहन किया है भारत में कई शूरवीर आदिवासी राजा व रानी हुए दिन में रानी दुर्गावती वीर राजा डूंगर ,वरांडा, शंकर शाह, कुंवर रघुनाथ शाह, रानी गाईदिनलयू,राजा भभूति सिंह, राजा मेदनी राय जैसे नाम की लंबी सूची है भारत बिरसा मुंडा की भूमि है।

क्या है विश्व आदिवासी दिवस की पृष्ठभूमि

अमेरिका में पिछले कुछ दशकों में कोलंबस दिवस के तहत होने वाली परेड में विरोध प्रदर्शन होने लगा है कोलंबस को कक्षा के पाठ कम से हटाने की मांग तेजी से उठी थी वर्ष 1991 की शुरुआत में अमेरिका के दर्जनों शहरों और कई राज्यों ने अमेरिका के मूल निवासी लोगों के दिवस को मनाना शुरू किया यह एक ऐसा अवकाश था जो कोलंबस के बजाय मूल अमेरिकियों के इतिहास की याद में मनाया जाता है।

1980 के दशक में कई अमेरिकियों ने कोलंबस दिवस का विरोध करना शुरू कर दिया अमेरिका में अक्टूबर के दूसरे सोमवार को जिस दिन कोलंबस दिवस मनाया जाता था उसी दिन मूल निवासी दिवस मनाने की शुरुआत की गई कोलंबस दिवस को मूल निवासियों के सम्मान में एक दिन से बदलने का पहला मौका 1990 में साउथ डकोटा में तय हुआ था।

1992 में कैलिफोर्निया में मूल अमीरों ने अमेरिका में कोलंबस के उतरने की 500वीं वर्षगांठ मनाने की योजना के विरोध में नेटिव अमेरिकन लोगों की याद में एकदिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया। लेकिन इसे वैश्विक बनाने के लिए संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 9 अगस्त को इस पूरी दुनिया में मनाने का प्रस्ताव पारित किया।

क्रूर कोलंबस गुलामी का व्यापार करने वाला

वर्ष 1492 मैं कोलंबस स्पेन से भारत के लिए रवाना हुआ था लेकिन वह कभी भारत पहुंचा ही नहीं जब कोलंबस क्यूबा, हिस्पानियोला और कैरिबियन के अन्य डिपो पर पहुंचा तो उसने क्रूर और नरसंहार करी नीतियों की शुरुआत की जिसने नेटिव अमेरिकियों की आबादी को तेजी से खत्म कर दिया। वह गुलाम का व्यापार भी करता था। कोलंबस ने स्पेन के राजा से बहुत से गुलाम को वापस भेजने का अपना वादा पूरा किया लेकिन ज्यादातर गुलाम ट्रांस अटलांटिक यात्रा के दौरान या स्पिन पहुंचने के तुरंत बाद ही मारे गए इसलिए उसने अपनी उर्जा सोना इकट्ठा करने में लगा दी खेती में उसने आदेश दिया कि 14 वर्ष से अधिक आयु के सभी लोग हर 3 महीने में सोने का एक कोटा जमा करें कोलंबस ने जितनी मात्रा में सोने की कल्पना की थी उतनी मात्रा में वहां सोनू मौजूद नहीं था जो स्थानीय लोग कोटा पूरा नहीं करते थे उनके हाथ काट दिए जाते थे उन्हें खून से लखपत कर मार दिया जाता था जब लोगों ने बड़ी संख्या में प्रतिरोध करना शुरू किया तो स्पेनियो मैं अपने हथियारों से उन्हें आसानी से हरा दिया कैदियों को फांसी पर लटका दिया गया या जलाकर मार दिया गया बाकी लोगों को गुलाम के रूप में इस्तेमाल करने के लिए इकट्ठा किया गया उनसे इतनी बेहरमी से काम करवाया गया की 8 महीने की भीतर एक तिहाई लोग थकावट से मर गये।

हताशा में कई लोगों ने आत्महत्या करना शुरू कर दिया और कुछ माता ने हताशा में अपने बच्चों को भी मार डाला जो भाग गए उन्हें खोज कर मार दिया गया कोलंबस स्पेन के राजा को खुश करने के लिए इतना उत्सुक था कि उसने नेटिव अमेरिकियों पर क्रूर अत्याचार किये। इस तरह गुलामी और युद्ध में 2,00000 लोगों को मार डाला गया। मूल निवासी दिवस की अंतर्राष्ट्रीय मानक पर पृष्ठभूमि कितनी नरसंहार पूर्ण एवं मानव सभ्यता के लिए घृणित हैं।

मेरे लिए स्वाधीनता का अर्थ

चिंतन

जयप्रकाश नारायण

स्वाधीनता मेरे लिए कई अर्थ रखती है। पर सबसे अधिक मेरे लिए यह आत्मा की स्वाधीनता का अर्थ रखती है, विचारों की स्वाधीनता का और तब कहीं जाकर कर्म की स्वाधीनता का जहां आत्मा स्वाधीन है, चिंतन स्वतंत्र है, वहां मनुष्य स्वतंत्रता की ऐसी परिस्थितियां पैदा कर सकता है जिसमें वह अपने जीवन का हेतु पूरा कर सके।

इसलिए, मेरी दृष्टि से हमारी शिक्षण पद्धति, जीवन की हमारी अवधारणा, हमारी जीवन शैली,हमारा कर्म इन सबको आत्मा की स्वाधीनता, विचारों की स्वाधीनता से परिचालित होना चाहिए।

यह कहना करने से ज्यादा सरल है। आत्मा की स्वतंत्रता की अनुभूति तो वे ही कर सकते है जो आत्मा का मतलब जानते हों, जीवन का मतलब समझते हों,जो जानते हों कि स्वयं उनका उद्देश्य क्या है,वे किसलिए जी रहे हैं और वे कहां जाना चाहते हैं।

यह सब जब घटित हो तभी आत्मा की स्वाधीनता मात्र दार्शनिक विचार नहीं, एक सक्रिय शक्ति बन जाएगी।

मैं आध्यात्मिक स्वतंत्रता और आत्मा की स्वतंत्रता में अंतर करना चाहता हूं। मेरे लिए आत्मा की स्वतंत्रता से आशय, आध्यात्मिक स्वतंत्रता से सामान्यतः जो मतलब लिया जाता है उससे कहीं ज्यादा वृहद् कहीं ज्यादा दूरगामी और कहीं ज्यादा गहन है। आध्यात्मिक स्वतंत्रता का जिन अर्थों में प्रयोग होता है, उसमें कई दूसरी स्वतंत्रताएं छूट जाती है-आर्थिक स्वतंत्रता, राजनैतिक स्वतंत्रता, सामाजिक स्वतंत्रता आदि। लेकिन जब आत्मा स्वतंत्र है तो किसी बन्धन का कहीं अस्तित्व ही नहीं रह जाता है। स्वतंत्र आत्मा संभव है कि स्वयं अपने लिए सीमाओं का निर्धारण करे, लेकिन वह इसे भी तोड़ सकती है, इसका अतिक्रमण कर सकती है।

इसलिए मैं अपनी मुख्य बात को दुहराते हुए समाप्त करूंगा कि मेरे लिए स्वाधीनता का मतलब अनिवार्यतः आत्मा की स्वतंत्रता है, जिसे मैं सामान्यतः आध्यात्मिक स्वतंत्रता कहीं जानेवाली धारणा से अलग करता हूं। आत्मा की स्वतंत्रता, संभव है कि स्वतंत्र व्यक्ति को एक ऐसी परिस्थिति में डाल दे जहां शायद भौतिक स्वतंत्रता न हो, मतलब आवश्यकता और कामना के अनुसार जीवन जी सकने की स्वतंत्रता न हो,ये सीमाएं हो सकती हैं जो अवरोध बनी रहे। किन्तु फिर भी यदि आत्मा स्वतंत्र है तो वह इन अवरोधों को तोड़कर पार जाने का रास्ता खोज लेगी। और इसलिए, मैं फिर कहूंगा कि स्वाधीनता का मतलब मेरे लिए आत्मा की स्वाधीनता है।

स्वतंत्रता दिवस

प्रमोद दीक्षित मलय

स्वतंत्रता आंदोलन में काकोरी ट्रेन एक्शन की परवर्ती भूमिका

अंग्रेजों से भारत की मुक्ति के लिए मार्च 1857 से आरम्भ स्वातंर्त्य समर की परिणति अगस्त 1947 में आजादी की प्राप्ति से हुई। नौ दशकों के सतत स्वाधीनता संघर्ष के कालखंड में भारत का तेजोमय राष्ट्रीय चेतना का स्वर न केवल अविराम मुखरित रहा बल्कि नव पीढ़ी को क्रांति पथ पर आत्म बलिदान हेतु बढ़ने-लड़ने को प्रेरित एवं उत्साहित भी करता रहा है। यही कारण है प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से स्वतंत्रता प्राप्ति तक समाज जीवन के विविध क्षेत्रों से जुड़े यथा किसान, मजदूर, विद्यार्थी, वकील, राजनीतिक कार्यकर्ता, गिरि-वनवासी समाज ने भारत माता की सेवा साधना में स्वयं को समर्पित कर दिया था। स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास पर अगर एक विहंगम दृष्टि डालें तो कुछ घटनाएं मानस पटल पर स्वतःअंकित होने लगती हैं जिन्होंने न केवल संघर्ष की धारा को प्रभावित किया अपितु नवल आयाम स्थापित करते हुए संघर्ष को दिशा भी दी। जलियांवाला बाग नरसंहार अप्रैल 1919, खिलाफत आन्दोलन नवम्बर 1919, असहयोग आंदोलन 1920, चौरी-चौरा कांड फरवरी 1922, काकोरी ट्रेन खजाना लूट एक्शन अगस्त 1925 आदि घटनाओं में काकोरी ट्रेन एक्शन चर्चित और अंग्रेजी सत्ता को सीधे चुनौती देने वाली घटना थी। सरकारी खजाने की इस लूट से अंग्रेजी शासन बौखला गया। उन्होंने स्वप्न में नहीं सोचा था कि ऐसा दुस्साहस कोई कर सकता है। इसीलिए इस खजाने की लूट में शामिल रहे क्रांतिकारियों के साथ ही अंग्रेजी सरकार हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन से जुड़े अन्यान्य क्रांतिधर्मी नवयुवकों की धरपकड़ करने, सख्त सजा देने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी। उल्लेखनीय है कि ट्रेन से जा रहे सरकारी खजाने को काकोरी स्टेशन में लूटने की योजना के सूत्रधार पं. रामप्रसाद बिस्मिल थे जिसमें चंद्रशेखर आजाद, राजेन्द्र लाहिड़ी, मन्मथनाथ गुप्त, शचींद्रनाथ बख्शी आदि क्रांतिकारी योजना के शिल्पकार बने। कहते हैं, क्रांतिकारी दल की ताकत कम होने तथा घटना पश्चात अंग्रेजी पुलिस द्वारा धरपकड़ से दल के बिखराव की आशंका से अशफाक उल्ला खां खजाने की लूट योजना से असहमत थे, पर अंततः दल के निर्णय के साथ सहर्ष शामिल रहे। हालांकि अशफाक की आशंका आगे सच साबित हुई। न केवल दल बिखर गया बल्कि कुछेक क्रांतिकारियों को छोड़कर सभी कैद कर लिए गए, फांसी की सजा के साथ ही आजीवन कारावास भी हुआ। यदि अशफाक की बात मान खजाना लूट योजना टाल दी गई होती तो स्वतंत्रता आंदोलन का चित्र कुछ अलग प्रकार का होता। लेकिन निर्मोही समय इतिहास का लेखन और आकलन 'यदि, किंतु-परंतु' जैसे शब्दों की भावुकता में बहकर नहीं करता अपितु निर्मम यथार्थ की कठोर चट्टानों पर अपनी इबारत लिखता है।

9 अगस्त, 1925 की रात्रि अपने यौवन पर थी। काकोरी से छूटी 8 डाउन सहारनपुर-लखनऊ पैसेंजर ट्रेन ने पटरियों पर सरकना शुरू ही किया था, यात्री नींद में थे या अपनी सीटों पर पसरे ऊंघ रहे थे। 8 अगस्त को बिस्मिल के शाहजहांपुर आवास पर हुई बैठक की तय योजनानुसार 10 क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी, शचींद्रनाथ बख्शी, मन्मथनाथ गुप्त, बनवारी लाल, मुरारी शर्मा, मुकुंदी लाल, केशव चक्रवर्ती ट्रेन में सवार थे। तभी उचित अवसर देख राजेंद्रनाथ लाहिड़ी ने जंजीर खींचकर कर ट्रेन रोक दी। अशफाक ने चीते सी चपलता से ड्राइवर को काबू में किया। गार्ड ने मुकाबला करने की कोशिश की पर बिस्मिल ने उसे औंधे मुंह जमीन पर गिरा नियंत्रित कर लिया। ख़ज़ाने की तिजोरी उतारी गई, ताला न खुलने के कारण अशफाक ने अपना माउजर मन्मथनाथ गुप्त को थमा, स्वयं घन से दनादन प्रहार करना आरम्भ किया। घन की मार से शीघ्र ही तिजोरी में बड़ा छेद हो गया। चांदी के सिक्के और रुपये एक चादर पर समेट क्रांतिकारी रात्रि के अंधकार में विलीन हो गये।

सरकारी खजाने की लूट से अंग्रेजी सत्ता की बड़ी किरकिरी हुई। जांच शुरू हुई। जल्दबाजी में घटना स्थल पर छूट गई एक चादर की निशानदेही पर सूत्र जुड़ते चले गये। काकोरी लूट में शामिल क्रांतिकारियों को पकड़वाने, उनके गुप्त ठिकाने की सूचना देने हेतु पुरस्कार घोषित कर थानों और नगरों-कस्बों की दीवारों पर पोस्टर चिपकाए गए। स्काटलैंड से स्पेशल पुलिस दस्ता भी बुलाया गया। इस प्रकार हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन से जुड़े 40 क्रांतिकारियों को देश के विभिन्न नगरों से पुलिस पकड़ने में सफल हुई। चंद्रशेखर आजाद अंत तक अंग्रेजों के हाथ न आये। अशफाक उल्ला खां विदेश जाने के प्रयास में दिल्ली में आश्रयदाता मित्र की गद्दारी से पकड़े गए। कैद सभी क्रांतिकारियों पर ब्रिटिश सम्राट के विरुद्ध सशस्त्र युद्ध छेड़ने, सरकारी कोष लूटने, यात्रियों की हत्या करने और अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ षड़यंत्र रचने का आरोप लगा मुकदमा आरम्भ किया गया। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि केवल 4679 रुपए की लूट के मुकदमे पर ब्रिटिश सरकार ने आठ लाख रुपए से अधिक धन खर्च किया। लगभग दो वर्ष तक मुकदमा चला, बहसें हुईं। अंततः 22 अगस्त, 1927 को अवध चीफ कोर्ट लखनऊ द्वारा फैसला सुनाया गया। 14 आरोपी साक्ष्यों के अभाव में छोड़ दिए गये। रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी और रोशन सिंह को फांसी की सजा, हालांकि रोशन सिंह खजाने की लूट में शामिल नहीं थे। शेष को 4 वर्ष से लेकर आजीवन कारावास और काले पानी की सजा हुई। सजा के विरुद्ध प्रखर वक्ता महामना मदनमोहन मालवीय के नेतृत्व में पांच सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने शिमला जाकर वायसराय से क्षमादान की अपील किया पर घटना से भयाक्रांत वायसराय ने मना कर दिया। प्रिवी कौंसिल लंदन भेजी गई क्षमादान की अपील को सम्राट ने बिस्मिल और उनके साथियों को ब्रिटिश सत्ता के लिए अत्यंत विरोधी एवं घोर शत्रु करार देते हुए निरस्त कर दिया। फलतः चार क्रांतिकारियों को विभिन्न जेलों में फांसी पर चढ़ा दिया गया, शेष सख्त कैद में डाल दिए गए।

काकोरी ट्रेन एक्शन सामान्यतौर पर एक छोटी सी घटना लगती है। पर तत्कालीन समय में इसके निहितार्थ का फलक विस्तार लिए था। यह घटना भारतीयों में यह विश्वास जगाने में सफल रही कि अंग्रेजों को सीधे और सशस्त्र ढंग से चुनौती दी जा सकती है। अंग्रेजी पुलिस पहली बार सोचने पर विवश हुई कि अहिंसात्मक आंदोलनों से इतर अब सशस्त्र संघर्ष मुखरता की ओर बढ़ेगा। वास्तव में काकोरी ट्रेन एक्शन ने सम्पूर्ण देश को आत्मीयता के धागे में पिरो शौर्य से भर दिया था। देशवासियों के दिलों में उल्लास, ऊर्जा और उमंग की वेगवान धारा बहा दी थी। यही कारण था काकोरी घटना के पश्चात अंग्रेजी सत्ता टिक न सकी और दो दशक बाद ही उसकी शक्ति का पराभव हो गया। काकोरी ट्रेन एक्शन के शताब्दी दिवस के अवसर पर हम भारतीय उन सभी हुतात्मा क्रांतिकारियों के प्रति श्रद्धा से शीश झुका अपने भाव सुमन अर्पित करते हैं।

जेपी नड्डा के नाम से आमला विधायक से सवा लाख मांगने वाले आरोपी गिरफ्तार

बैतूल। बैतूल जिले की आमला सीट से भाजपा के विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे को तीन-चार दिन पहले फोन कॉल आया था। फोन करने वाले ने अपना नाम नीरज सिंह बताया और खुद को भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के ऑफिस स्टाफ से बताया था ।

मध्य प्रदेश के बैतूल में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के नाम से सवा लाख रुपए मांगे जा रहे थे। आरोपी किसी कार्यक्रम के लिए रुपए मांग रहा था। पार्टी के विधायक डॉ

पंडाग्रे को रुपए ट्रांसफर करने के लिए क्यूआर कोड भी भेजा गया था। लेकिन डॉ.योगेश पंडाग्रे को फोन करने वाले पर शक हुआ और उन्होंने इसकी सूचना बैतूल पुलिस को दे दी । बैतूल पुलिस को यह सूचना मिलते ही उन्होंने संबंधित को ट्रेस करने के लिए बैतूल के साइबर सेल को सक्रिय कर दिया गया । इसके बाद साइबर सेल ने आरोपी को उत्तर प्रदेश के कानपुर में गिरफ्तार भी कर लिया है । पुलिस ने आरोपी को उत्तर प्रदेश से गिरफ्तार करके उसके विरुद्ध मामला दर्ज कर लिया है।

9 अगस्त को रानी दुर्गावती महिला सरपंच सम्मेलन में प्रत्येक जनपद पंचायत की महिला सरपंच लेगी भाग

9 से 15 अगस्त तक मनाए जाएंगे प्रदेश स्तरीय कार्यक्रम

बैतूल। मंत्री पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग प्रहलाद पटेल एवं अपर मुख्य सचिव द्वारा राज्य स्तरीय साप्ताहिक विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से 9 अगस्त से 15 अगस्त तक प्रदेश स्तरीय देश भक्ति एवं शौर्य के प्रतीक हर घर तिरंगा अभियान एवं पर्यावरण पर केंद्रित कार्यक्रम आयोजित किए जाने के निर्देश समस्त मुख्य कार्यपालन अधिकारियों एवं जनपद पंचायतों को दिए गए है। उन्होंने कहा कि 9 अगस्त को आयोजित रानी दुर्गावती महिला सरपंच सम्मेलन में रक्षाबंधन कार्यक्रम का आयोजन किया जाए, जिसमें प्रत्येक जनपद पंचायत से 5-5 महिला सरपंच इस प्रकार जिले से कुल 50 महिला सरपंच भाग लेंगी।

हर घर तिरंगा अभियान, एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौधारोपण कार्यक्रम एवं श्रावण मास में रक्षाबंधन का पर्व स्थानीय जनप्रतिनिधियों एवं महिला स्व-सहायता समूह की बहनों के साथ उत्साह पूर्वक मनाये जाने के निर्देश दिए गए है। प्रदेश में माननीय मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव के आयोजित कार्यक्रमों का लाइव प्रसारण कराया जाएगा। स्वतंत्रता दिवस के पर्व पर हर घर तिरंगा अभियान पर केंद्रित कर मनाए जाने एवं कार्यक्रम का लाइव प्रसारण किए जाने के निर्देश दिए गए। सभी कार्यक्रमों की फोटो एवं विडियो निर्धारित वेबसाइट पर अपलोड किये जाने हेतु समस्त मुख्य कार्यपालन अधिकारियों जनपद पंचायतों को निर्देशित किया गया।

डोरा के पास बैतूल बाजार मार्ग पर ट्रक की चपेट में आने से महिला की मौत, एक युवक गंभीर

बैतूल। जिला मुख्यालय के बडोरा स्थित महाराजा गैरेज के पास आज रात्रि आठ बजे के करीब दो बाइक सवारों की आपस में टक्कर हो गई इसी दौरान सड़क से गुजर रहे ट्रक की चपेट में बाइक सवार आ गए जिसमे दो लोग गंभीर घायल हो गए थे जिन्हे जिला अस्पताल पंहुचा या गया उपचार के दौरान एक महिला की मौत गई। बताया जा रहा है की आठ बजे के करीब बडोरा के पास बैतूल बाजार मार्ग पर दो बाइक की टक्कर हो गई थी इसी दौरान एक ट्रक यहां से गुजरा और उसकी चपेट में आ गए जिसमे बाइक सवार रोशन पिता गणेश काड़े उम्र 32 निवासी धनोरा थाना चिचोली एवं सेल कुमारी पिता नारायण राव बारमासे उम्र 44 रिलायंस पेट्रोल पंप के पास बडोरा निवासी शामिल है घटना के दौरान दोनों लोगों को गंभीर चोट आई थी घटना की सूचना मिलते ही बैतूल बाजार पुलिस मौके पर पन्हुचि थी घायलों को जिला अस्पताल पहुंचाया जंहा इलाज के दौरान महिला की मौत हो गई पुलिस ने मौके से ट्रक को पकड़ लिया है।

दवा विक्रेताओं की सुख-समृद्धि के लिए संगीतमय सुंदरकांड पाठ का आयोजन

गोकुल ट्रेड सेंटर परिसर में 10 अगस्त को होगा धार्मिक आयोजन, दिन में पौधारोपण कार्यक्रम भी संपन्न होगा

बैतूल। जिले के सभी दवा विक्रेताओं की सुख, शांति और समृद्धि की कामना के लिए आगामी शनिवार, 10 अगस्त 2024 को संगीतमय सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया जा रहा है। यह धार्मिक कार्यक्रम गोकुल ट्रेड सेंटर परिसर में रात 9 बजे से आयोजित होगा, जिसमें जिले के सभी दवा विक्रेताओं को शामिल होने का आग्रह किया गया है। कार्यक्रम के उपरांत प्रसाद वितरण भी किया जाएगा।सुंदरकांड पाठ के अलावा, दिन में पौधारोपण कार्यक्रम भी आयोजित किया जाएगा, जिसमें वरिष्ठ सदस्य पौधारोपण करेंगे और सभी दवा विक्रेता इस अवसर पर शामिल होंगे। इस धार्मिक आयोजन और पर्यावरण संरक्षण के कार्यक्रम का संयोजन समिति के सदस्यों द्वारा किया जा रहा है।

आयोजन में शामिल होने की अपील- कार्यक्रम संयोजक समिति के सुनील कुमार सलूजा, जयदेव गायकी, राहुल गुगनानी, नितिन वागद्रे, अमित मालवीय, बबलू मोहने, राकेश पारधे, विजेश महाले, दीपक धोटे, टिंकू महाले, राघवेंद्र पोटफोड़े, कृष्णा पुवार, दिलखुश सिंह साहनी, नवनीत मालवीय और अंकित वर्मा ने इस धार्मिक आयोजन में सभी दवा विक्रेताओं और संबंधित लोगों से उपस्थित होकर सुंदरकांड का पुण्य लाभ उठाने और प्रसाद ग्रहण करने की अपील की है। समिति के सुनील कुमार सलूजा ने बताया इस कार्यक्रम से धार्मिक वातावरण का सृजन होगा, दवा विक्रेताओं के बीच एकजुटता और सहयोग की भावना भी प्रबल होगी।

बैतूल में सरकारी मेडिकल कॉलेज की मांग को लेकर कांग्रेस का विरोध

कांग्रेस ने पीपीपी मोड पर मेडिकल कॉलेज की घोषणा को बताया वादाखिलाफी

- **सरकारी मेडिकल कॉलेज खोलने की मांग, महामहिम राज्यपाल के नाम कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा**
- **शहीद भवन में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद निकाली रैली**

बैतूल। जिला कांग्रेस कमेटी ने भारत छोड़ो आंदोलन दिवस के अवसर पर बुधवार को बैतूल में पीपीपी (पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप) मोड पर प्रस्तावित मेडिकल कॉलेज के विरोध में राज्यपाल के नाम जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा। कांग्रेस ने स्पष्ट रूप से कहा कि बैतूल में मेडिकल कॉलेज केवल सरकारी मोड में ही खोला जाना चाहिए। इस अवसर पर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष हेमंत वागद्रे के नेतृत्व में कलेक्ट्रेट तक रैली निकाली गई, जिसमें पूरे जिले के कांग्रेस कार्यकर्ता शामिल हुए।

कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने शहीद भवन में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद रैली की शुरुआत की। ज्ञापन में कांग्रेस ने यह आरोप लगाया कि तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा बैतूल में मेडिकल कॉलेज खोलने की घोषणा की गई थी, लेकिन यह नहीं कहा गया था कि कॉलेज पीपीपी मोड में खोला जाएगा। कांग्रेस का कहना है कि यह घोषणा अब खुली वादा खिलाफी बन गई है।

पीपीपी मोड पर मेडिकल कॉलेज से आम जनता की चिंताएं बढ़ीं- ज्ञापन में कहा गया कि पीपीपी मोड के अनुभव और राय को देखते हुए बैतूल की जनता इस फैसले से संतुष्ट नहीं है। कांग्रेस का मानना है कि यदि मेडिकल कॉलेज पीपीपी मोड पर खुलता है, तो इससे जिला अस्पताल का भी निजीकरण हो सकता है, जिससे आम जनता को मिलने वाली सुविधाओं पर असर पड़ेगा। लोगों की चिंताओं में प्रमुख यह है कि प्राइवेट मेडिकल कॉलेज के कारण जिला अस्पताल की मौजूदा सुविधाएं कम हो सकती हैं, और यह भी स्पष्ट नहीं है कि मेडिकल कॉलेज द्वारा उपयोग किए जाने वाले जिला अस्पताल के संसाधनों के बदले में आम जनता को क्या सेवाएं निशुल्क मिलेंगी और किन सेवाओं के लिए उन्हें भुगतान करना पड़ेगा।

ज्ञापन में इस बात पर भी जोर दिया गया कि यदि मेडिकल कॉलेज संचालक जिला अस्पताल की सुविधाओं का मुफ्त में उपयोग करता है, तो सभी 500 बेड पर निशुल्क इलाज की सुविधा मिलनी चाहिए। इसके अलावा, कांग्रेस ने यह भी मांग की कि मेडिकल कॉलेज के लिए किए जाने वाले निवेश का बैतूल के बेरोजगारों को क्या लाभ मिलेगा, इसे भी स्पष्ट किया जाना चाहिए।

सीएसआर के तहत क्या करेगा कॉलेज, जनता को चाहिए स्पष्टता- ज्ञापन में यह भी सवाल उठाया गया कि पीपीपी मोड पर प्रस्तावित मेडिकल कॉलेज संचालक द्वारा सीएसआर (कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी) के तहत बैतूल जिले में क्या खर्च किया जाएगा और इससे जिले के विकास में क्या योगदान मिलेगा, इस पर भी स्पष्टता होनी चाहिए।

कांग्रेस ने अपने ज्ञापन के माध्यम से साफ किया कि बैतूल की जनता को सरकारी मेडिकल कॉलेज की आवश्यकता है, न कि निजीकरण की ओर बढ़ने वाले किसी प्रयोग की। कांग्रेस ने राज्यपाल से इस मामले में हस्तक्षेप की मांग करते हुए कहा कि बैतूल में मेडिकल कॉलेज केवल सरकारी मोड में ही खोला जाए यदि पीपीपी मोड पर मेडिकल कालेज खुलता है तो वर्तमान के अस्पताल को सरकारी ही रखा जाये इसका निजिकरण नही किया जाये, जिससे जिले के आम लोगों को स्वास्थ्य सेवाओं का पूरा लाभ मिल सके।

यह रहे मौजूद- इस अवसर पर जिला कांग्रेस अध्यक्ष हेमन्त वागद्रे, आदिवासी कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष रामू टेकाम, पूर्व जिला कांग्रेस अध्यक्ष शांतिलाल तातेड़, समीर खान, विधानसभा प्रत्याशी मनोज मालवे आदि सैकड़ों कांग्रेस जन उपस्थित थे।

नगर सहित ग्रामीण क्षेत्रों में भी बढ़ रहा है आवारा कुत्तों का आतंक

ग्राम सांडिया में कुत्ते कर रहे मवेशियों का शिकार

बैतूल/मुलताई। नगर सहित आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में भी आवारा कुत्तों का आतंक बढ़ता जा रहा है। आए दिन मुलताई सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में कुत्ते के काटने से जख्मी मरीजों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। पीड़ित बताते हैं कि आवारा कुत्तों के झुंडो में कुत्तों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है यह आवारा कुत्ते 25 से 30 संख्या में एक साथ घूमते देखे जा सकते हैं और किसी भी मवेशी को अकेला देखकर निशाना बनाते हैं। हाल ही में ग्राम सांडिया में दो मवेशियों को आवारा कुत्तों ने निशाना बनाया वही मुलताई नगर के नेहरू वार्ड नागदेव मंदिर क्षेत्र में भी आवारा कुत्तों का आतंक इस कदर है कि बच्चों को घर से बाहर निकलने में डर लगने लगा है। मुलताई नेहरू वार्ड निवास रोहित साहू बताते हैं कि हमारे वार्ड में कुत्तों का आतंक इस कदर है कि घर के बाहर निकलना मुश्किल हो गया है। आवारा कुत्ते मार्ग से गुजरने वाले मोटरसाइकिल सवारो के पीछे दौड़ते हैं जिससे अनेकों बार दुर्घटना हो जाती है। यह आवारा कुत्ते स्कूली बच्चों के पीछे लपकते है। वार्ड वासी बताते हैं कि नगर पालिका और जनप्रतिनिधियों से शिकायत की गई किंतु कोई हल नहीं निकला।

सांडिया में बछिया को किया घायल एक का जन्म लेते ही बच्चा खा गए कुत्ते- मुलताई नगर से लगे निकटतम ग्राम सांडिया में आवारा कुत्ते मवेशियों के लिए बड़ी समस्या बन गए हैं । आवारा कुत्ते अब तक गांव में तीन से अधिक मवेशियों पर हमला कर चुके हैं जिसमें कुछ मवेशी घायल हो गई है और एक बच्चे को आवारा कुत्तों ने खा लिया जिसको लेकर ग्रामीणों में भारी रोष है। गोलू ठाकुर बताते हैं कि ग्राम सांडिया में आवारा कुत्तों ने आतंक मचा रखा है। सांडिया निवासी संजू अडलक की कोठे पर बंधी बछिया को आवारा कुत्तों के झुंड ने घेर कर गंभीर रूप से घायल कर दिया किसी तरह ग्रामीणों ने इस बछिया को बचाया। इसके साथ ही एक गंभीर घटना ग्राम में और हुई विजय ठाकरे पटेल की गाय खेत में अपने बच्चों को जन्म दे रही थी आवारा कुत्तों ने जन्म देते ही उस गाय के बच्चे पर हमला कर दिया और बच्चों को मार दिया ग्रामीण बताते हैं कि इस गांव में बीते एक सप्ताह में आवारा कुत्तों के हमले की आधा दर्जन घटनाएं हुई है।

जन-जन का अभियान बने घर घर तिरंगा : पंकज जोशी

आगामी कार्यक्रमों को लेकर भाजपा की जिला बैठक संपन्न

बैतूल। भाजपा की पंचनिष्ठा में पहला विचार ही राष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद है। घर घर तिरंगा अभियान के तहत हर कार्यकर्ता और पदाधिकारी जन प्रतिनिधियों के साथ मिलकर पूरी निष्ठा के साथ इस अभियान में जुडकर इसे जन जन का अभियान बनाएं। 12 ,13 एवं 14 अगस्त को अपने घरो पर तिरंगा लगाकर उसके वीडियों बनाकर सोशल मीडिया पर साझा करें। अभियान में हर वर्ग की भागीदारी हो यह सुनिश्चित करे उक्त उदगार भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष एवं संभाग संगठन प्रभारी पंकज जोशी ने जिला भाजपा कार्यालय में आयोजित घर घर तिरंगा अभियान की वृहद जिला बैठक में व्यक्त करते हुए कहा कि हम पहले भी हर घर तिरंगा अभियान चला चुके है। तिरंगा यात्राएं भी निकाली है इस बार कुछ नवाचार हो इसके लिए हर कार्यकर्ता का सुझाव और अनुभव महत्वपूर्ण है। 14 अगस्त को हमें अखंण्ड भारत संकल्प दिवस मनाना है। जिसमें भारत विभाजन की विभिषीका से लोगो को अवगत कराना जरूरी है। यह अभियान हर बूथ तक सफल हो इसके लिए बेहतर प्रबंधन के साथ काम करने की आवश्यकता है। बैठक को संबोधित करते हुए जिला संगठन प्रभारी सुजीत जैन ने कहा कि घर घर तिरंगा अभियान के तहत टोली बनाकर भारत माता के जयकारा को घर घर पहुंचाने की जरूरत है। आने वाले दिनो में मंडलो पर इसी तरह की बैठके होनी चाहिए वहीं सभी मोर्चो के सामुहिक प्रयास से स्वतंत्रता सैनानीयों की प्रतीमाओं के आसपास स्वच्छता अभियान चलाकर तिरंगा यात्रा की तैयारी करनी है। इस दौरान हमें तिरंगे के सम्मान का भी विशेष ध्यान रखने की जरूरत है। 14 अगस्त को भारत विभाजन की विभिषिका से भी समाज का परिचय कराने महत्ती जिम्मेदारी है। बैठक को संबोधित करते हुए भाजपा जिलाध्यक्ष आदित्य बबला शुक्ला ने कहा कि घर घर तिरंगा अभियान को लेकर पिछले दिनो प्रदेश की बैठक के निर्णयानुसार 11 से 15 अगस्त तक बूथ व शक्ति केन्द्रो पर घर घर तिरंगा अभियान में हमारी 100 प्रतिशत भूमिका हो इसका ध्यान रखते हुए हर मंडल पर 5000 तिरंगा झंडा घरो पर लगें ऐसा लक्ष्य पार्टी द्वारा निर्धारित किया गया है। तिरंगा यात्रा को लेकर नवाचार के प्रयास कार्यकर्ताओ व जनप्रतिनिधियों के सुझाव लेकर करेंगें। बैठक का संचालन जिला महामंत्री कमलेश सिंह एवं अंत में आभार घर घर तिरंगा अभियान के जिला संयोजक देवीसिंह ठाकुर ने व्यक्त किया। बैठक में विधायक हेमंत खंडेलवाल, डा.योगेश पंडाग्रे, चंद्रशेखर देशमुख, गंगा उइके, जिला पंचायत अध्यक्ष राजा पंवार मंचासीन थे। बैठक में जिला पदाधिकारी, मंडल प्रभारी, मंडल अध्यक्ष, विशेष रूप से मौजूद रहे।

आज धूमधाम से मनाया जाएगा विश्व आदिवासी दिवस

जिलेभर में रैलियां और कार्यक्रमों का आयोजन, आदिवासी संस्कृति के महत्व पर होगा जोर

बैतूल। समस्त आदिवासी समाज संगठन बैतूल के तत्वावधान में आज, 9 अगस्त को विश्व आदिवासी दिवस बड़े धूमधाम से मनाया जाएगा। इस अवसर पर जिले के सभी ब्लॉकों में विविध रैलियों और कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा, जिसमें आदिवासी समाज की संस्कृति और परंपराओं का उत्सव मनाया जाएगा।

जिला मुख्यालय बैतूल में इस विशेष दिन की रैली की शुरुआत सुबह 11 बजे पड़ापेन ठाना रैन बसेरा सदर बैतूल से होगी, जो आदिवासी सामुदायिक मंगल भवन बैतूल में समापन होगी। इस रैली के बाद, मंगल भवन में एक भव्य समारोह आयोजित किया जाएगा, जिसमें मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथियों के उद्बोधन होंगे। इसके साथ-साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए जाएंगे, जो आदिवासी समाज की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को उजागर करेंगे। कार्यक्रम के अंत में भोजन प्रसादी का वितरण किया जाएगा। पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से डॉ. कृष्णा मौसिक द्वारा आदिवासी समाज को 501 पौधे सौंपे गए। विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर इन पौधों का रोपण किया जाएगा।

आदिवासी समाज की विशेष पहचान को बनाए रखने का प्रयास- समस्त आदिवासी समाज संगठन के मीडिया प्रभारी जितेंद्र सिंह इवने ने अधिक से अधिक संख्या में आदिवासी समाज के लोगों को इस कार्यक्रम में शामिल होने का आग्रह किया है। उन्होंने बताया कि विश्व आदिवासी दिवस का महत्व आदिवासियों के आत्मसम्मान और उनकी विशेष पहचान को बनाए रखने के लिए है। यह दिन आदिवासी समाज की समृद्ध संस्कृति, परंपराओं और उनके द्वारा किए गए योगदानों को मान्यता देने का अवसर है।

पंच-ज अभियान

प्रदूषण मुक्त पर्यावरण के लिए वृक्षों का होना जरूरी: सत्र न्यायाधीश श्री प्राण

सर्किट हाउस परिसर में 130 फलदार एवं औषधीय पौधों का किया रोपण

बैतूल। प्रधान जिला, सत्र न्यायाधीश एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण बैतूल श्री प्राणेश कुमार प्राण ने कहा कि मानव जीवन के लिये पर्यावरण का शुद्ध होना अति महत्वपूर्ण है। प्रदूषण मुक्त पर्यावरण के लिए वृक्ष का होना जरूरी है। वृक्ष प्रकृति को संतुलित रखता है, इसलिए सभी को पौधे लगाकर जनजीवन को खुशहाल जिंदगी देने में सहयोग करना चाहिए। श्री प्राण पंच-ज अभियान के अंतर्गत बुधवार को सर्किट हाउस बैतूल में आयोजित पौधारोपण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

इस दौरान सर्किट हाउस परिसर में लगभग 130 औषधीय एवं फलदार पौधों का रोपण कर उनकी सुरक्षा का संकल्प दिलाया गया। अध्यक्ष श्री प्राणेश कुमार प्राण ने बताया कि अभियान के अंतर्गत रोपित किए गए पौधों की मॉनिटरिंग जिला विधिक सेवा प्राधिकरण बैतूल एवं पौधों की देखभाल तथा संरक्षण जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के पैरालीगल वालेंटियर्स के द्वारा किए जाने के निर्देश दिए गए है।

उल्लेखनीय है कि कार्यपालक अध्यक्ष मप्र राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर द्वारा पंच-ज अभियान के अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से विश्व पर्यावरण दिवस 05 जून 2024 से 15 अगस्त 2024 स्वतंत्रता दिवस तक 72 दिवसीय वृहद पौधा रोपण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

इस अवसर पर प्रधान जिला, सत्र न्यायाधीश एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण बैतूल प्राणेश कुमार प्राण, सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण बैतूल डॉ. कु महजबीन खान, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट संगीता भारती राठौर, व्यवहार न्यायाधीश वरिष्ठ खण्ड बैतूल सुरेश यादव, अतिरिक्त कलेक्टर राजीव नंदन श्रीवास्तव, अपर पुलिस अधीक्षक कमला जोशी, जिला विधिक सहायता अधिकारी सोमनाथ राय एवं संजय शुक्ला, अधिवक्ता, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण स्टॉफ राजेश शेषकर, कृष्ण कुमार गजभिये, मीना सिरसाम, पैरालीगल वालेटियर्स सोनल पाटील, स्वाती सोनी, पूनम गौड, अमित सक्सेना, बिनका बडोदे, लक्ष्मी नागले, रेखा झरबड़े एवं जिला न्यायालय के कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

शासकीय एकलव्य महिला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था में ओपन राउंड प्रवेश के लिए पंजीयन प्रारंभ

बैतूल। शासकीय एकलव्य महिला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था बैतूल में संचालित 10 ट्रेडों की प्रवेश प्रक्रिया में ओपन राउंड हेतु पंजीयन प्रारंभ है। प्राचार्य रेवाशंकर पंडाग्रे ने बताया कि इच्छुक आवेदक आगामी 14 अगस्त तक पर पंजीयन एवं च्वाइस फीलिंग करा सकेंगे। चयन सूची 21 अगस्त को जारी की जाएगी एवं 22 अगस्त से 24 अगस्त तक प्रवेश दिया जाएगा। प्राचार्य श्री पंडाग्रे ने बताया कि संस्था में संचालित इलेक्ट्रीशियन (एनसीवीटी) में 05, इलेक्ट्रॉनिक्स मेकेनिक (एनसीवीटी) में 06, और इन्फार्मेशन कम्युनिकेशन एण्ड सिस्टम मेंटेनेंस (एनसीवीटी) में 07, मैकेनिक कम्प्यूटर हार्डवेयर (एससीवीटी) में 06, स्वींइग टेक्नोलॉजी (एनसीवीटी) में 15, ऑफिस असिस्टेंट कम कम्प्यूटर ऑपरेटर (एससीवीटी) में 25 फ्लोरीकल्चर एण्ड लेण्ड स्केपिंग (एनसीवीटी) में 21, स्टेनो अंग्रेजी (एनसीवीटी) में 14, स्टेनो हिन्दी (एनसीवीटी) में 07 एवं कोपा (एनसीवीटी) में 08 सीटें रिक्त है।

नागपंचमी पर विशेष...

प्रीतम लखवाल

प्रकृति के संरक्षक हैं सर्प, इसलिए पूजित हैं

हिंदू पंचाग के अनुसार इस बार सावन में नाग पंचमी का त्योहार शुक्रवार 9 अगस्त को मनाया जाएगा। नागपंचमी के पारंपरिक पर्व का पौराणिक और धार्मिक महत्व है। नाग पूजन के पीछे अभयता का आशीष पाने के लिए बहुत सी किवदंती हैं। शिव भक्तों और ग्रामीण अंचल के किसानों के लिए नाग देवता के रूप में पूजित और आराध्य रहे हैं। नागों के प्रति श्रद्धालुओं की यह आस्था बहुत गहरी है। इसे भगवान शिव के प्रिय गण और गहने के रूप में भी पूज्य कहा गया है। नागों या सर्प पूजन को प्रकृति के संरक्षण के लिए भी हर घर में विशेष तौर पर देखा जाता है। वर्षा काल में बारिश के दौरान सर्प जाति पर अधिक संकट रहता है। इनके निवास स्थान में पानी भर जाने से यह बाहर अधिक निकलते हैं। हालांकि ये किसी को नुकसान नहीं पहुंचाते हैं, बल्कि ये खुद पर संकट जानकर हमला करते हैं। नाग पूजा का महत्व क्यों है? इस बारे में कई पौराणिक और दंत कथाएं भी प्रचलित हैं। नाग पूजन से हम प्राकृतिक रूप से जीवदया और उनके संरक्षण को ही महत्व देते हैं। वैसे नाग पंचमी हिंदुओं का पारंपरिक त्योहार है, जो सावन महीने के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाया जाता है। यह त्योहार सांपों की पूजा के लिए जाना जाता है और यह कई भारतीय राज्यों में मनाया जाता है। विशेषतः महाराष्ट्र, गुजरात और उत्तर प्रदेश में। मध्यप्रदेश में भी अधिकांश स्थानों पर खासकर मालवा और निमाड़ में नागपंचमी पर आस्था का सैलाब उमड़ता है। निमाड़ अंचल में नागलवाड़ी, खरगोन के दामखेड़ा सहित अन्य स्थानों पर सिद्ध नाग मंदिरों में नागपंचमी पर भव्य मेले और पूजन और दर्शन के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ती है। नाग पंचमी के अवसर पर मालवा अंचल की पौराणिक नगरी उज्जयिनी में नाग चंद्रेश्वर मंदिर में खास तौर पर दर्शन के लिए भीड़ उमड़ती है। यहां महाकाल परिसर में स्थित इस मंदिर में साल में एक बार ही पट खोले जाते हैं। यह मंदिर चमत्कारी होने के साथ पौराणिक मान्यताओं के लिए विख्यात है। खरगोन के दामखेड़ा नाग मंदिर के बारे में किवदंती है कि यहां इच्छाधारी नाग देवता विराजित हैं। कहा जाता है कि कालांतर में दामखेड़ा एक समृद्ध गांव हुआ करता था। इस गांव में ही नाग देवता का स्थान था। किसी ने गांव में नागिन को मार दिया था और इससे क्रोधित होकर नाग देवता ने पूरे गांव को ही नष्ट कर दिया। तब से यह स्थल निर्जन हो गया और वीरान रहा। करीब साढ़े 3 दशक पूर्व नागदेवता की आराधना कर मंदिर का निर्माण कर पूजा अर्चना शुरू की गई। आज यहां भव्य मंदिर और गार्डन आदि विकसित हो गए हैं। यहां वर्ष पर्यंत श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। वैसे तो नाग पंचमी का त्योहार नाग पूजा के लिए मनाया जाता है, जिन्हें हिंदू धर्म में पवित्र माना जाता है। इस दिन लोग सांपों की मूर्तियों की पूजा करते हैं और उन्हें दूध और पुष्प चढ़ाते हैं। पौराणिक कथा के अनुसार भगवान श्री कृष्ण ने नाग पंचमी के दिन ही यमुना में रह रहे विशालकाय कालिया नाग का मान-मर्दन किया था। उसे यमुना से निष्कासित कर गोकुलवासियों को अभयदान दिया था। इसलिए भी भगवान वासुकी के वंशज नागों की पूजा का विधान है। नाग पंचमी का त्योहार सांपों के प्रति सम्मान और प्रेम का प्रतीक है और यह लोगों को प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाए रखने की शिक्षा देता है। इस दिन सभी अपने घरों में भी आकृतियां बनाकर नाग देवता की पूजा करते हैं। हिंदू धर्म में पौराणिक काल से ही नाग की पूजा करने की परंपरा चली आ रही है। मान्यता है कि नाग पंचमी के दिन नाग देवता की पूजा करने से मनोकामनाएं पूरी होती हैं। भविष्य पुराण के अनुसार समुद्र मंथन के दौरान नागों ने अपनी माता की बात नहीं मानी थी। जिसकी वजह से उन्हें श्राप मिला था। नागों को शापित किया गया था कि वो जनमेजय के यज्ञ में जलकर भस्म हो जाएंगे। जिसके बाद महाभारत काल में जनमेजय के नाग यज्ञ के दौरान बड़े-बड़े विकराल नाग अग्नि में आकर जलने लगे। घबराए हुए नाग ब्रह्माजी की शरण में पहुंच गए और उनसे मदद मांगने लगे। तब ब्रह्माजी ने कहा कि नाग वंश में महात्मा जरत्कारु के पुत्र आस्तिक मुनि सभी नागों की रक्षा करेंगे। ब्रह्मा जी ने यह उपाय पंचमी तिथि को ही बताया था। वहीं आस्तिक मुनि ने सावन माह की पंचमी तिथि को नागों पर दूध डालकर उन्हें यज्ञ में जलने से बचाया था। तब से लेकर आज से नाग पंचमी का पर्व मनाया जाता है। नाग पंचमी को लेकर यहां कुछ और कथाओं का वर्णन है। जिनके बारे में हम जानते है कि किस तरह नागों की पूजा को इतना महत्व मिला है। नाग पंचमी के दिन भगवान शिव ने अपने गले में एक विशाल नाग को धारण किया था, वह वासुकी नाग था। एक अन्य विवरण के अनुसार नाग पंचमी के दिन भगवान विष्णु ने अपने सेर्पेंट शेषनाग पर आराम किया था। किवदंती है कि नाग पंचमी के दिन एक किसान की बेटी को एक सांप ने काट लिया था और उसके बाद वह सांप उसके सामने प्रकट हुआ और उसने उसे पूजा करने के लिए कहा। उस किसान की बेटी ने सांप की पूजा की और वह सर्प उसकी रक्षा करने लगा। एक अन्य विवरण के अनुसार नाग पंचमी के दिन एक राजा को एक सांप ने डंस लिया था और वह सांप उनके समक्ष आया और उसने उसे पूजा करने के लिए कहा। उस राजा ने सर्प पूजा की और वह उसकी रक्षा करने लगा। इन कथाओं के अलावा नाग पंचमी को लेकर कई और पौराणिक कथाएं और किवदंती भी हैं, जो इस त्योहार के महत्व और पूजा के तरीकों को दर्शाती हैं।

सांपों की ये प्रजातियां हैं खतरनाक

नागों की कुछ प्रमुख प्रजातियां इस प्रकार हैं। कोब्रा यह एक विषैला सांप है जो भारत और अन्य एशियाई देशों में पाया जाता है। रैटलस्नेक यह एक विषैला सांप है, जो अमेरिका में पाया जाता है। वाइपर यह भी एक विषैला सांप है जो यूरोप, एशिया और अफ्रीका में पाया जाता है। बोआ कंस्ट्रिक्टर यह एक गैर-विषैला सांप है, जो दक्षिण अमेरिका में पाया जाता है। पाइथन यह एक गैर-विषैला सांप है, जो अफ्रीका, एशिया, और ऑस्ट्रेलिया में पाया जाता है। कोरल स्नेक यह एक विषैला सांप है, जो अमेरिका में पाया जाता है। टाइगर स्नैक यह एक विषैला सांप है, जो ऑस्ट्रेलिया और न्यू गिनी में पाया जाता है। यह एक विषैला सांप है, जो समुद्री जल में पाया जाता है। अमेजन के जंगल में पाया जाने वाला एनाकोंडा सर्प दुनिया के सबसे खतरनाक सर्प है। इस पर फ़िल्म तक का निर्माण हुआ है। अमेजन का जंगल इतना घना है कि यहां सूर्य की किरण धरती पर नहीं पड़ती है। यहां हजारों जीव जंतु और जहरीले जानवर हैं। इनके अलावा, नाग या सांपों की और भी कई प्रजातियां हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख प्रजातियां इस प्रकार हैं। ग्रेटर स्नेक, ग्रीन स्नेक, किंग स्नेक, मिल्क स्नेक, रेड-बेलीड स्नेक। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि सांपों की प्रजातियों की संख्या और उनके नाम क्षेत्र और भाषाओं के अनुसार भिन्न हो सकते हैं।

भारतीय किसान संघ की नवीन कार्यकारिणी का गठन

सुबह सवेरे सोहागपुर। भारतीय किसान संघ की बैठक विख्यात बावड़ी वाले मंदिर में संभागीय संगठन मंत्री दिनेश शर्मा , संभागीय अध्यक्ष सर्वज्ञ दीवान एवं जिला अध्यक्ष देवेंद्र पटैल, बृजेशसिंह राजपूत आदि की उपस्थिति में संपन्न हुई। इस अवसर पर वर्तमान में तहसील सोहागपुर में कार्यरत तदर्थ समिति के स्थान पर नवीन तहसील स्तरीय पूर्ण कार्यकारिणी का गठन के लिए विस्तार से कार्यकर्ताओं के गहन चर्चा हुई ।इसी बैठक में स्थानीय पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं से आवाहन किया गया कि 12 तारीख को नर्मदापुरम में आयोजित जिला सम्मेलन में अधिक से अधिक कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाने का आह्वान किया गया। बैठक में तहसील की कार्यकारिणी का गठन किया गया। जिसमें नर्मदाप्रसाद पटैल ग्राम भोखेड़ी को सोहागपुर तहसील अध्यक्ष, मुकेश पुरोहित तहसील मंत्री ,ललित गुर्जर उपाध्यक्ष , रामकृष्ण गुर्जर युवा वाहिनी संयोजक

नियुक्त किया गया। रामकृष्ण गुर्जर भारतीय किसान संघ की पूर्णकालीक कार्यकारिणी का दायित्व निर्वहन करेंगे ।इस अवसर पर संभागीय सदस्य नवाबसिंह , रेवकसिंह, संतोष ठाकुर, लाल जी भाई रघुवंशी राममूर्ति रघुवंशी, रामकृष्ण गुर्जर, ललित पटैल देवराज पटैल आदि कार्यकर्ता उपस्थित थे।

डिप्टी डायरेक्टर से कर्मचारी परेशान...

नर्मदापुरम। अंततः सतपुड़ा टाइगर रिजर्व डिप्टी डायरेक्टर पूजा नागले की ज्यादतियों को लेकर फील्ड डायरेक्टर के दरबार में पनाह की दस्तक देना ही पड़ी... नीलेश कुशवाहा ने फील्ड डायरेक्टर को बड़ा ही मार्मिक पत्र लिखकर उनसे सुरक्षा और भुगतान करवाने की मांग की है। विभाग में नीलेश कुशवाह वर्ष 2007 से सतत् सेवारत हैं। जून 2024 तक होशंगाबाद में उसने विभागीय अधिकारियों की सेवा में कार्य किया। डॉग स्क्वाड में पुलिस की 26 बटालियन में ट्रेनिंग भी कर चुका है। नीलेश डिप्टी डायरेक्टर पूजा नागले जी के पास गार्डन और घरेलू कार्य करता रहा, जिसका चेक से भुगतान भी लगातार किया जाता रहा, परन्तु जून में उनके ड्राईवर राजकुमार ने उससे कहा की कल से यहां मत आना, अब तुम सोहागपुर जाओ, लेकिन उन्होंने उसके साथ रामावतार, रामसिंह को भी अभी तक तनख़ाह भी नहीं दी है। इतना ही नहीं 2, 3 लड़के जंगल से बुलाकर रख लिए, वे भी डिप्टी डायरेक्टर के यहां टिक नहीं पाए उन्हें भी भगा दिया। यहां बताया गया कि डिप्टी डायरेक्टर सभी कर्मचारियों से अभद्र व्यवहार करती है, गुस्से में चाय फेंक देती है, कुर्सी में लात मार देती है, जिससे कर्मचारी डर जाते है। कर्मचारियों से यह तक कह दिया जाता कि , जहर दे दो। कर्मचारी को रात में 12 बजे तक रोकती और सुबह 6 बजे बुलाती हैं, जिसका रात में जाते वक्त गड्ढे में गिर जाने से घुटने टूट गए है। नए- नए लड़के बारस्कर रेंजर साहब मैडम के घर में काम के लिये भेजते है। रेस्ट हाऊस के कर्मचारी से भी भला बुरा बोला जाता है। डिविजन के बाबू, रेंजर साहब, एसडीओ सभी से डिप्टी डायरेक्टर दुर्व्यवहार करती रहती है। बहरहाल शिकवा शिकायत के दौर में कर्मचारी का वेतन रोका जाना ठीक नहीं। इस बात से खुद कर्मचारी संघ के संरक्षक मधुकर चतुर्वेदी भी आहत हैं। फील्ड डायरेक्टर को की गई शिकायत का निदान क्या हो पाता यह तो फिलहाल देखने वाला विषय बन गया है। श्री चतुर्वेदी का इस मामले में स्पष्ट कहना है कि वन समिति के खर्च पर समितियों से अधिकारियों का अपने शासकीय आवास पर निजी मजदूरों को ड्राइवर को रखना अनुचित होकर नियमों के विपरित ही होता है और यह कृत्य स्वीकार योग्य ।

देवास पुलिस का डायल 100 जागरूकता अभियान

देवास । डायल-100 जिसकी सहायता से प्रदेशभर में लाखों लोगों को सहायता पंहुचाई गयी है उसकी जागरुकता के लिए पुलिस अधीक्षक देवास के मार्गदर्शन में एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शहर देवास के निर्देशन में जिला देवास के स्कूली छात्र-छात्राओं में डायल-100 के प्रति जागरूकता लाने के उद्देश्य से शासकीय माध्यमिक विद्यालय ग्राम लोहारपिपलिया, महारानी राधाबाई कन्या माध्यमिक विद्यालय देवास एवं महारानी राधाबाई कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय देवास में म.प्र. पुलिस द्वारा एकदिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसके अंतर्गत पुलिस से संबंधित सेवाएं और आपातकालीन स्थिति में संकटग्रस्त लोगों को तुरंत सहायता प्रदान करने के बारे में बताया गया। इसके अलावा विद्यार्थियों को बताया गया कि आप, परिवारजन या अन्य कोई व्यक्ति किसी मुसीबत में हो तो राज्य में कहीं से भी 100 नम्बर पर फोन करके पुलिस सहायता प्राप्त की जा सकती है। यह एक टोल फ्री सेवा है।

उक्त कार्यक्रम में टी.आई. थाना नाहर दरवाजा श्रीमति मंजू यादव, निरीक्षक(रेडियो) श्री जितेन्द्र कुमार शाक्य, उप निरीक्षक(रेडियो) श्री दीपेन्द्र सिंह परिहार, सहायक उप निरीक्षक (रेडियो) श्री गुलशन सोनी, डिस्ट्रिक्ट सुपरवाईजर डायल-100 देवास श्री आशीष पटेल एवं आरक्षक(रेडियो) श्री राहुल पटेल द्वारा डायल-100 की आवश्यकता एवं उपयोगिता के बारे में बताया गया ।

नागपंचमी, विश्व आदिवासी दिवस पर शांतिपूर्ण तरीके से शोभायात्रा निकालें : नगर निरीक्षक कंचन सिंह

हीरालाल गोलानी सोहागपुर। नागपंचमी एवं विश्व आदिवासी दिवस के पूर्व नवीन थाना परिसर में अनुविभागीय अधिकारी बृजेंद्र रावत, एसडीओ पुलिस संजू चौहान, नगर निरीक्षक कंचनसिंह, नायब तहसीलदार अंजू लोधी आदि के आतिथ्य में बैठक संपन्न हुई। इस अवसर अधिकारी द्वय ने उपस्थित जनों से कहा कि नागपंचमी एवं विश्व आदिवासी दिवस पर निकलने वाली शोभायात्रा को शांतिपूर्ण तरीके से निकाले। ऐसा व्यवधान उत्पन्न न हो कि रास्ते जाम की स्थिति बने। नगर निरीक्षक कंचनसिंह ने उपस्थित जनों से आग्रह कि दोनों ही उत्सव एक ही हो रहे हैं। दोनों में ही शोभायात्रा निकलेगी। आपसी सामंजस्य के साथ निकले ताकि एक दूसरे को असुविधा न हो। जयस के कैलाश खुराना ने कहा कि दोनों ही जूलूस यदि एक साथ होंगे। ऐसी परिस्थिति में दूसरी शोभायात्रा को जाने देंगे। कोई व्यवधान उत्पन्न नहीं होगा। आदिवासी समाज के प्रमुख पार्षद रविशंकर उइके ,

बलराम उईके , चौरसिया समाज के पूर्व पार्षद राकेश चौरसिया, आशीष चौरसिया, कल्लू चौरसिया जयस आदिवासी संगठन के कैलाश खुराना आदि उपस्थित थे । इसके पूर्व उपस्थित सामाजिक जनों ने शोभायात्रा के संबंध में अधिकारियों को जानकारी की दी।

माफी मांगने के बाद भी तो आरटीओ अधिकारी काम नहीं कर रही एजेंटों के ...?

नर्मदापुरम। आरटीओ मैडम का ऐजेंटों से चल रहा मनमुटाव खत्म नहीं हो पा रहा। ऐसा माना जा रहा है कि मैडम यह बात जान गई कि यहां ऐजेंटों को जबर मारों रोने मत दो की लाईन पर कसकर रखा जा सकता है। इसीलिए लगभग बीस पच्चीस दिनों से चली आ रही आरटीओ मैडम और ऐजेंटों की तनातनी खत्म नहीं हो पाई। आरटीओ मैडम अखबार बाजी के नाम पर ऐजेंटों से खासी नाराज़ हैं इटारसी से ऐजेंटों के मध्य सुलह करवाने आएं विधायक प्रतिनिधि से मैडम ने वादा किया था पर वादा खिलाफी करते हुए उन्होंने ऐजेंटों को नाकों चने चबबा दिए। अब हालात यह है कि आरटीओ मैडम के विश्वसनीय ही कार्यालय के भीतर मोबाइल ले जाने के पात्र हैं बाकी मोटर मालिक तक को अपने मोबाइल गार्ड के पास जमा करवाना मजबूरी बन गया है। फिर हाई सेक्युरिटी रजिस्ट्रेशन नंबर प्लेट का मामला भी इन दिनों संज्ञान आया है। अंकित सैनी के नाम पर एफआईआर दर्ज कराई गई है। इसमें मजेदार बात यह है कि आज अचानक से यह मामला प्रकाश में कैसे आया, आखिर यह लंबे समय से किसके संरक्षण में चल रहा था..? फिर पचमढ़ी में चलने वाली गाड़ियों में व्हीकल लाइफ ट्रेकिंग सिस्टम नहीं लगे होने के बावजूद इतने दिन अधिकारी का पचमढ़ी में बने रहने का औचित्य क्या था। बगैर इस सिस्टम को लगाएं गाड़ियों के फिर फिटनेस जारी कैसे किए गए, सुना जा रहा है कि धीरज ने जिप्सी वाहन चालकों से मोटी राशि लेकर फिटनेस जारी किए हैं। इधर कलेक्टर के निर्देश पर स्कूल बसों की जांच और नागद्वारी मेले में चलने वाली अवैध टैक्सियों की धर-पकड़ कर उन्होंने हड़कंप जरुर मचा दिया पर ऐजेंटों के बीच मनमुटाव खत्म कर पाने में कामयाब नहीं हो पाई। सुना जा रहा है कि 15 अगस्त सर पर होने के कारण अधिकारी पर खर्च का भार बड़ गया, बगैर ऐजेंटों के पूरा कर पाना संभव कैसे होगा.. फिर महत्वपूर्ण यह भी है कि विजय कुमार जिन्हें मंत्री की नाराज़गी के कारण ग्वालियर अटैच किया गया था, अपनी जोड़-तोड़ जमाकर वापस कार्यालय आ गये है। विभागीय ज्वाइनिंग देकर उन्होंने अपने कामकाज पुराने तरीके से चालू कर दिए।

नागपंचमी पर विशेष...

डॉ.तेज प्रकाश पूर्णानंद व्यास

सर्प हमारी राष्ट्रीय सम्पदा हैं

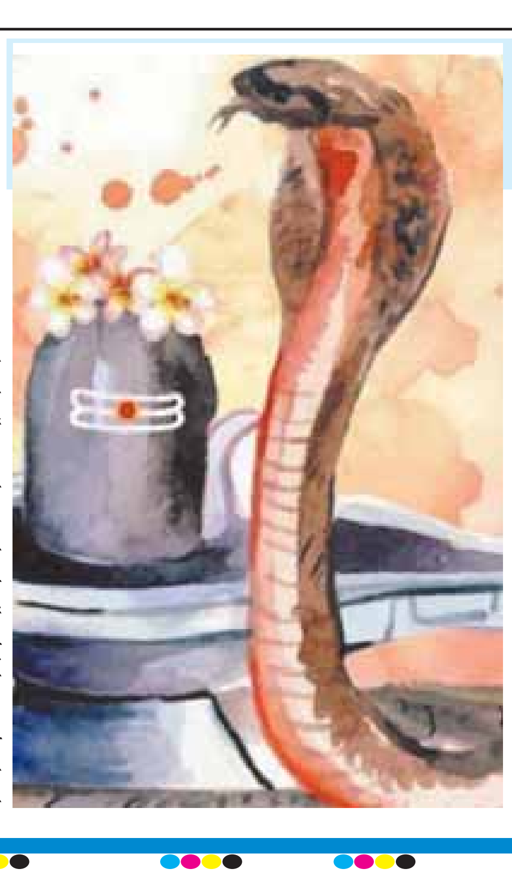

नागेन्द्रहराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।।
नित्याय सुद्धाय दिगम्बराय तस्मै न कराय नमः शिवाय।।

हे महेश्वर! जिनके गले का हार नागराज हैं और जिनकी तीन आंखें हैं। जिनका शरीर पवित्र भस्म से अलंकृत है । वे जो शाश्वत हैं, जो पूर्ण पवित्र हैं और चारों दिशाओं को जो अपने वस्त्रों के रूप में धारण करते हैं। उस शिव को नमस्कार है, जिन्हें 'न' अक्षर द्वारा दर्शाया गया है।

नाग देवता वसुन्धरा पर रक्षक जीव हैं । उनकी उत्पत्ति मानव से करोड़ों वर्ष पूर्व हुई है। यह सहज संयोग है कि छाया चित्र में दर्शाए गए कोबरा, करैत, वाइपर और फुर्सा या सा स्केल्ड वाइपर का विष मानव शरीर के विरुद्ध कार्य करते हैं । इनके दंशों की 100 प्रतिशत चिकित्सा ए एसवीएस शासकीय चिकित्सालयों में उपलब्ध है। दंशित को तुरंत चिकित्सा के लिए जाना चाहिए। चूहे खेतों की खड़ी फसलों और गोदामों में अन्न न केवल खाते हैं, वरन अपने बिलों में ढेर सारा अन्न जमा करते हैं । सर्पों द्वारा इन घातक रेट्स और रोडेंट्स को भोजन के रूप में उपयोग कर इनकी संख्या को नियंत्रित कर भारत देश के लगभग 20 करोड़ मानवों का भोजन बचाते हैं। अपने शास्त्रों में सर्प को देवता समझा जाता है। वे आपको समस्त पापों से सुरक्षित रखेंगे और आपको जीवन में विजयी बनाएंगे।

अनन्तं वासुकिं शेषं पद्मनाभं च कम्बलम्।
शङ्ख पालं धृतराष्ट्रं तक्षकं कालियं तथा॥
एतानि नव नामानि नागानां च महात्मनाम्।
सायङ्काले पठेन्नित्यं प्रातःकाले विशेषतः।
तस्य विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्॥

मंत्र का अर्थः नौ नाग देवताओं के नाम अनंत, वासुकी, शेष, पद्मनाभ, कम्बल, शंखपाल, धृतराष्ट्र, तक्षक और कालिया हैं। यदि प्रतिदिन प्रातःकाल नियमित रूप से इनका जप किया जाता है तो नाग देवता आपको समस्त पापों से सुरक्षित रखेंगे और आपको जीवन में विजयी बनाएंगे।

सर्पों की मानव से कोई भी दुश्मनी नहीं है। यह मात्र सहज संयोग है कि भारत में पाए जाने वाले 4 विषैले सर्पों का विष मानव शरीर के विरुद्ध कार्य करता है ।

प्रतिविष चिकित्सा

विषैले सर्प दंश होने पर तत्काल दंशित मानव को प्रतिविष चिकित्सा मिल जाती हैं, तो जीवन 100 प्रतिशत सुरक्षित हो जाता है। प्रतिविष चिकित्सा विषैले सर्पों के दंश की रामबाण चिकित्सा है। हॉफकिन इंस्टीट्यूट परेल, मुंबई, सीरम रिसर्च लैब,पुणे और सेंट्रल रिसर्च लैब , कसौली , हिमाचल प्रदेश में इन्हीं चारों विषैले सर्पों के विष से प्रति विष चिकित्सा तैयार की जाती है। चारों विषैले सर्पों का विष क्रमशः डोज बढ़ाकर स्वस्थ घोड़ों में इंजेक्ट कर प्रतिरोधात्मक शक्ति पैदा की जाती है। घोड़ों के रक्त से सीरम अलग कर प्रतिविष तैयार कर किया जाता है। यही चिकित्सा विषैले सर्पों के विष से मानव के जीवन की रक्षा करता है। सर्प दंश पर वैकल्पिक चिकित्सा में समय गंवाना जीवन गंवाना है। विषैले कुख्यात 'बिग फोर' में शामिल हैं - इंडियन ब्लैक या स्पेक्टेल्ड कोबरा, इंडियन कॉमन क्रेट, इंडियन रसेल वाइपर और इंडियन सॉ-स्केल्ड वाइपर।

रिपोर्टों का अनुमान है कि भारत में हर साल साँपों के काटने से औसतन 50 हजार मौतें प्रतिवर्ष भारत में होती हैं, जिनमें से सबसे ज़्यादा मृत्यु 'बिग फोर' के कारण होती हैं। इन प्रजातियों के काटने पर तत्काल प्रतिविष चिकित्सा शासकीय चिकित्सालय से प्राप्त की जा सकती है।

सभी सांपों में वृक्ष पर चढ़ने की अदम्य क्षमता होती है। आवास की कोई भी पेड़ की टहनी खिड़की या उजालदान को छुए नहीं। अन्यथा इस सरल मार्ग से भी सर्प घर आवास में प्रवेश कर सकता है। ऐसी टहनियां काट दीजिएगा।

रात्रि को सदैव नई सेल डली टॉर्च का उपयोग कीजियेगा। सर्प जमीन से निकली ध्वनि तरंगों को आसानी से ग्राह्य करते हैं। ग्रामीणों ने लाठी का उपयोग करना ही चाहिए। लाठी की ठक ठक आवाज से पगडंडी या मार्ग पर चलते हुए ग्रामीणों के लिए जीवन रक्षक सिद्ध होता है।

सत्ता का सर्कस

दिनेश गुप्ता

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

‘सड़क’ को चुनकर नौकरशाही के चक्रव्यूह को तोड़ पाएंगे डॉ. मोहन यादव

मध्यप्रदेश सरकार से जुड़ी पिछले कुछ दिन की गतिविधियां इस बात की ओर साफ इशारा करती दिखीं कि राज्य की नौकरशाही ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के ईद गिर्द एक मजबूत ‘चक्रव्यूह’ की रचना कर ली है? मुख्यमंत्री इस ‘चक्रव्यूह’ से निकल कर नौकरशाही को जन्नोमुखी बना पाएंगे,यह एक बड़ा सवाल है। सोमवार को डॉ. मोहन यादव ने जबलपुर से सिवनी -बालाघाट तक की सड़क मार्ग से जो यात्रा की,उसे चक्रव्यूह को तोड़ने की एक कोशिश के तौर पर देखा जा रहा है। मुख्यमंत्री की यह यात्रा अचानक नहीं हुई। उन्होंने हवाई के बजाए सड़क मार्ग को ही अपने दौरे के लिए चुना था। मकसद था अतिवृष्टि से उत्पन्न हालात की जमीनी स्थिति जानना। उन्होंने वर्षा प्रभावित क्षेत्रों का निरीक्षण किया। मुख्यमंत्री ने अतिवृष्टि से प्रभावित लोगों और पशुओं के लिये पर्याप्त सुरक्षात्मक बंदोबस्त करने के निर्देश प्रशासनिक अधिकारियों को दिये। उन्होंने कहा कि अतिवृष्टि से प्रभावित किसानों और आम नागरिकों को नियमानुसार क्षतिपूर्ति (मुआवजा) राशि दी जायेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सिवनी जिले में छपारा तहसील स्थित वैनगंगा नदी के पुल पर वाहन रुकवाया। भीमगढ़ बांध के बैक वाटर का अवलोकन कर विगत 22 जुलाई को हुई अतिवर्षा से निर्मित बाढ़ की स्थिति का जायजा लिया। उन्होंने मौके पर मौजूद कलेक्टर सुश्री संस्कृति जैन से अतिवर्षा के दौरान जल भराव क्षेत्र एवं प्रभावित गाँवों के संबंध में जानकारी लेकर आवश्यक प्रबंध करने को निर्देशित किया। मुख्यमंत्री सड़क मार्ग से गए थे,इस कारण उन्हें सड़क की स्थिति का भी ज्ञान हो गया। उन्होंने सिवनी-बालाघाट सड़क मार्ग के गड्ढे एवं सोल्डर की तत्काल मरम्मत करने के निर्देश अधिकारियों को दिए। इस राज्य मार्ग को परीक्षण उपरांत फोरलेन बनाए जाने की घोषणा की। उन्होंने कुरई में महाविद्यालय का नवीन भवन बनाने एवं नगरीय क्षेत्र बरघाट में डिवाइडर युक्त मॉडल रोड बनाने की घोषणा की।

महंगे हवाई जहाज की जरूरत क्यों?

यह एक बड़ा सवाल हो सकता है कि डॉ. मोहन यादव आगे भी ‘सड़क’ मार्ग से मध्यप्रदेश के विभिन्न स्थानों की यात्रा करेंगे या फिर शिवराज सिंह चौहान की तरह ही हवाई यात्राओं के जरिए ‘सरकार प्रायोजित’ कार्यक्रमों के जरिए अपनी छवि को निखारने का काम करेंगे। शिवराज सिंह चौहान की तरह ही डॉ. मोहन यादव का नाम प्रदेश के भावी मुख्यमंत्री के रूप में कभी नहीं लिया गया। उनका मुख्यमंत्री बनना, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह का चौंकाने वाला निर्णय ही माना गया। डॉ.मोहन यादव का चेहरा मुख्यमंत्री बनने से पहले तक प्रदेश का जाना-पहचाना चेहरा भी नहीं था। प्रदेश में जिस तरह की क्षेत्रीय विविधता है,उसे भी ठीक तरह से मोहन यादव नहीं जानते। मुख्यमंत्री बने तो उन्होंने मध्यप्रदेश सरकार द्वारा किराए पर लिए गए हवाई जहाज से प्रदेश के विभिन्न जिलों का दौरा कर आभार यात्रा निकाली। यह आभार यात्रा विधानसभा चुनाव में भाजपा को मिली जीत के लिए निकाली गई थी। मुख्यमंत्री जिस विमान से यात्रा कर रहे हैं उसके लिए पचास करोड़ रुपए से अधिक का किराया पिछले तीन साल में सरकार ने चुकाया जा चुका हैं। सरकार अब 235 करोड़ रुपए से अब नया विमान खरीदने की तैयारी कर रही है। कैबिनेट इस बारे में निर्णय ले चुकी है। इसमें कनाडा की कंपनी बॉम्बार्डियर से चैलेंजर-3500 प्लेन खरीदने की सहमति दी गई है। प्रक्रिया पूरी होने के बाद विमान मप्र आने में 18 से 24 महीने का समय लग सकता है। यह विमान अधिकतम 6297 किमी तक उड़ान भर सकता है। आधिकारिक तौर पर बताया गया कि यह विमान सीधे भोपाल से जापान तक उड़ान भर सकेगा। इसके लिए 5500 फीट का रनवे जरूरी है। इसलिए उज्जैन, गुना, खरगोन, नागदा, रतलाम, खंडवा, सागर, सीधी, मैहर, टेकनपुर से उड़ान नहीं भर सकेगा। जाहिर है कि इन स्थानों पर मुख्यमंत्री को यात्रा के लिए या तो सड़क मार्ग का चयन करना होगा अथवा किराए से जहाज बुलाना होगा। तीसरा विकल्प नया हेलीकॉप्टर खरीदने का है। जो नया विमान सरकार खरीद रही है वह प्रदेश के पांच एयरपोर्ट और सात हवाई पट्टियों पर ही उतर सकता है। यहां सवाल उठता है कि विमान के लिए जो ‘इन्फ्रास्ट्रक्चर’ चाहिए वह यदि उपलब्ध नहीं है तो फिर खरीदने से क्या लाभ? वैसे भी राज्य में सड़कों की स्थिति के बारे में जो दावा किया जाता है,उसमें मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का सड़क मार्ग चुनना ठीक ही माना जाना चाहिए। दिग्विजय सिंह के दौर में तो सड़कें इतनी खराब थी कि हवाई मार्ग के अलावा कोई विकल्प मुख्यमंत्री के पास नहीं था।

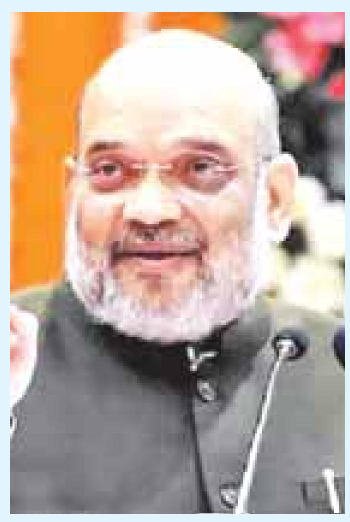

दुर्घटनाग्रस्त विमान की जिम्मेदारी तय नहीं

कमलनाथ ने मुख्यमंत्री रहते जो विमान खरीदा था,वह मई 2021 के कोरोना काल में ग्वालियर में दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। इस विमान की कीमत साठ करोड़ रूपए थी। यह 35 हजार फीट की ऊंचाई तक उड़ान भर सकता था। इससे पहले सरकार के पास जो विमान था,वह गुजरात की एक कंपनी को आठ करोड़ रुपए में बेच दिया गया था। वह 2013 में शिवराज सिंह चौहान सरकार ने खरीदा था। सरकार के तीसरे कार्यकाल में शिवराज सिंह चौहान की कैबिनेट ने 100 करोड़ रुपए का जेट खरीदने का प्रस्ताव पास किया था, जिसके बाद कांग्रेस सरकार आने पर इस फैसले को बदल दिया गया था। कमलनाथ अमूमन सभी जगह अपने निजी प्लेन से ही आवाजाही करते थे। तत्कालीन सीएम कमलनाथ का कहना था कि जेट का एयरक्राफ्ट बहुत महंगा है और इसके उपयोग के लिए जरूरी इंफ्रास्ट्रक्चर ज्यादातर जिलों में नहीं है। ऐसे में इसकी जगह बी-250 प्लेन खरीदने का निर्णय लिया गया। यही प्लेन ग्वालियर में क्रैश हो गया था। विमान का बीमा न होने के कारण यह कबाड़ में बदल गया। इतने महंगे विमान का बीमा क्यों नहीं कराया गया,इसकी सरकार जिम्मेदारी ही तय नहीं कर पाई। उल्टे दुर्घटनाग्रस्त विमान के पायलट माजिद अख्तर को 85 करोड़ रुपए के नुकसान का नोटिस सरकार ने थमा दिया था। विमान दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद माजिद अख्तर का लाइसेंस सस्पेंड कर दिया गया। सरकार ने अपनी जांच रिपोर्ट में माना है कि पायलट के रूप में विमान की सुरक्षित लैंडिंग करवाना कैप्टन माजिद अख्तर की जिम्मेदारी थी। यह हादसा पूरी तरह से पायलट के लापरवाही से हुई है। इसमें 62 करोड़ के विमान को गंभीर नुकसान पहुंचा है। आगे की जरूरतों को पूरा करने के लिए सरकार को किराए पर विमान लेना पड़ा। किराए के विमान पर 23 करोड़ रुपये खर्च हो चुके हैं। इस तरह से सरकार को 85 करोड़ रुपये का नुकसान पहुंचा है। सरकार पायलट से नुकसान की भरपाई नहीं ले पाई। पायलट ने सरकार से सवाल किया है कि बगैर बीमा विमान को उड़ाने की अनुमति कैसे दी गई थी? इसके बाद सभी की बोलती बंद हो गई। यह प्लेन पहले अहमदाबाद से रेमडेसिवीर इंजेक्शन लेकर इंदौर पहुंचा था। वहां अनलोडिंग के बाद बचे हुए डोज लेकर ग्वालियर एयरपोर्ट पहुंचा था, लेकिन ग्वालियर में लैंडिंग से पहले ही प्लेन के इंजन में तकनीकी खराबी आ गई। सीनियर पायलट कैप्टन सईद माजिद अख्तर ने समझदारी दिखाते हुए निर्धारित पॉइंट से 200 मीटर पहले ही प्लेन को रनवे पर डाल दिया। उन्होंने स्पीड कम करते हुए विमान को कंट्रोल करने की कोशिश की, लेकिन प्लेन रनवे पर फिसलकर एक तरफ पलट गया। विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद से ही सरकार में नए विमान की खरीदी की प्रक्रिया चल रही थी। पहले सरकार सवा सौ करोड़ रुपए की कीमत वाला विमान खरीद रही थी। अब 234 करोड़ की कीमत वाला विमान खरीदा जा रहा है।

वर्ल्ड रिकॉर्ड के जरिए ‘मोहन को मोहने’ की कोशिश

नौकरशाही के काम निराले हैं। उनके हर काम में कोई न कोई ‘निजी हित’ छुपा होता है लेकिन,सरकार की इच्छा बताकर अपना दामन बचा लेते हैं। मध्यप्रदेश में जो ‘उत्सव’ जैसा माहौल दिखाने की कोशिश हो रही है,वह भी नौकरशाही का एक कमाल है। नौकरशाही इस तरह का कमाल कई बार शिवराज सिंह चौहान के कार्यकाल में दिखा चुकी है। मुख्यमंत्री के कार्यक्रम में सरकारी खर्च पर लोगों को ढोकर लाने की परंपरा शिवराज सिंह चौहान से ही शुरू कराई गई थी। नौकरशाही ने कई तरह के अवार्ड जुटा कर शिवराज सिंह चौहान पर जो सम्मोहन अस्त्र चलाया था,उससे वे कभी बाहर नहीं आ पाए थे। उज्जैन में पंद्रह सौ डमरू का वादन कार्यक्रम भी कुछ इसी तरह का है। भगवान शिव के हाथ में डमरू है,तो इसके वादन पर आपत्ति किसे हो सकती है? लेकिन, सरकारी खर्च पर इस तरह के आयोजन का क्या औचित्य? सड़क पर मदारी डमरू बजाता है तो वह अपना पेट पालने के लिए। महाकाल की सवारी में डमरू वादन का वर्ल्ड रिकॉर्ड उत्सव के रूप में ही देखा जा रहा है। गनीमत है कि इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव नहीं थे। डमरू उत्सव में उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा, मंत्री गोविंद सिंह राजपूत शामिल हुए। इसके बाद शाम को सवारी में महाकाल मंदिर से शिप्रा तक वे साथ चलें। उज्जैन का नाम सबसे अधिक लोगों के डमरू बजाने के लिए गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हो गया। गिनीज बुक से आए ऋषिनाथ ने इसका सर्टिफिकेट सांसद अनिल फिरोजिया, विधायक सतीश मालवीय और संतों को सौंपा। इससे पहले, 488 लोगों द्वारा एक साथ डमरू बजाने का रिकॉर्ड फेडरेशन ऑफ न्यूयॉर्क के नाम 2021 में दर्ज किया गया था। बताया जाता है कि पर्यटन एवं संस्कृति विभाग के अफसरों की इस आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका रही।

भोपाल में पवनदीप और अरूणिता के पास किसने बांटे?

रविवार को संस्कृति संचालनालय द्वारा रवींद्र भवन के हंसध्वनि सभागार में किशोर कुमार की जन्म स्मृति में ‘ये शाम मस्तानी’ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सिंगर पवनदीप राजन और अरुणिता कांजीलाल ने अपने गानों के साथ ही किशोर कुमार के गानों की परफॉर्मेंस दी। इस कार्यक्रम में बिना प्रवेश-पत्र के एंट्री नहीं मिलने पर विवाद की स्थिति बन गई। कार्यक्रम में शामिल होने के लिए पहुंचे कई लोगों ने धक्का-मुक्की करने के आरोप भी लगाए। वैसे किशोर कुमार के जन्मदिन पर खंडवा में हर साल कोई न कोई संगीता का आयोजन होता है। भोपाल में पवनदीप-अरूणिता का कार्यक्रम में एक हॉल में रखने का विचार किस अधिकारी होगा? दोनों ही गायक युवाओं में बेहद लोकप्रिय हैं। सरकारी कार्यक्रम था,इसलिए टिकट की बिक्री नहीं हो सकती थी। जिस सभागार में कार्यक्रम रखा गया इसकी क्षमता लगभग पंद्रह सौ सीट की है। इंट्री पास के लिए लोगों ने संस्कृति संचालनालय के खूब चक्कर लगाए। सभी को जवाब एक ही मिलता था। इंट्री पास प्रमुख सचिव ही वितरित कर रहे हैं? सच्चाई क्या है यह तो लोगों को पता नहीं लग सकती।

सागर के कलेक्टर-एसपी पर किरकिरी

नौकरशाही पर मुख्यमंत्री का नियंत्रण है,इसे दिखाने के लिए कई उपाय नौकरशाही करती रहती है। डॉ. मोहन यादव मुख्यमंत्री बने तो मंत्रालय में बैठी उच्च नौकरशाही ने अपनी आस्था का प्रदर्शन करने के लिए दो-तीन कलेक्टरों की बलि लेने में देर नहीं की थी। इससे राजनेता को भी लगता है कि वह ताकतवर है और वह कलेक्टर को भी कहीं से उठाकर कहीं रख सकता है। गुना बस दुर्घटना के मामले में मोहन यादव ने सबसे पहले कलेक्टर को हटाया था। उसके बाद क्या खटारा और बिना परमिट वाली बसें सड़कों से हट गईं? परिवहन विभाग के अधिकारी भी जानते हैं कि ऐसी बसों को हटाना संभव नहीं है। कई तो राजनीतिक संरक्षण में चल रही होती हैं। हरदा विस्फोट पर जो कार्यवाही सरकार की ओर से हुई वह भी खानापूर्ति की श्रेणी वाली थी। व्यवस्था में कोई बड़ा बदलाव करते मोहन यादव दिख नहीं रहे। ऊपर से नौकरशाही ने सागर में दीवार गिरने के कारण हुई नौ बच्चों की मौत के मामले जिस तरह कलेक्टर-एसपी का तबादला कराया,वह यह बताता है कि प्रशासन जमीनी हकीकत से कितना दूर है? पुलिस अधीक्षक अभिषेक तिवारी छुट्टी लेकर विदेश गए हैं। उन्हें हटा दिया गया। क्या कलेक्टर को इस तरह के मामले में हटाया जाना चाहिए? कलेक्टर के लिए यह संभव नहीं है कि वह गांव-गांव जाकर हर घर की दीवार की जांच करे। ग्रामीण क्षेत्र में इस तरह के कई मकान होते हैं। सागर कलेक्टर पर कार्यवाही हुई तो अन्य जिले के कलेक्टर बुलडोजर लेकर निकल पड़े हैं जर्जर मकान गिराने के लिए। इस तरह के मामलों से सरकार की जग हंसाई हो रही है।

किसे मिलेगी राज्यसभा की सीट?

चुनाव आयोग ने राज्यसभा की 12 सीटों पर होने वाले उपचुनाव के लिए तारीखों का ऐलान कर दिया है। 9 राज्यों की इन 12 सीटों पर 3 सितंबर को वोटिंग होगी। जिन 12 सीटों पर उपचुनाव होने हैं उनमें एक मध्यप्रदेश की सीट भी शामिल है। ये सीट ज्योतिरादित्य सिंधिया के लोकसभा चुनाव जीतने के बाद रिक्त हुई है। राज्यसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव की तारीख का ऐलान होने के साथ ही मध्यप्रदेश में इस बात की चर्चाएं जोर पकड़ने लगी हैं कि ज्योतिरादित्य सिंधिया की सीट पर आखिर कौन से नेता को राज्यसभा भेजा जाएगा? मध्य प्रदेश में वर्तमान में विधानसभा में सदस्य संख्या के हिसाब से देखा जाए तो खाली होने वाली राज्यसभा की सीट फिर भाजपा के खाते में जाना तय मानी जा रही है ज्योतिरादित्य सिंधिया के लोकसभा चुनाव जीतने के बाद राज्यसभा में रिक्त हुई सीट पर आखिर कौन राज्यसभा जाएगा ये सवाल अब मध्यप्रदेश के राजनीतिक गलियारों में तेजी से उठ रहा है। कुछ दिग्गज नेताओं के नाम की सुगबुगाहट भी चल रही है। इनमें एक नाम पूर्व सांसद केपी यादव का भी है। गुना-शिवपुरी सीट पर ज्योतिरादित्य सिंधिया को चुनाव हराने वाले केपी यादव को 2024 के लोकसभा चुनावों ज्योतिरादित्य सिंधिया के लिए अपनी सीट खाली करनी पड़ी थी। लोकसभा चुनाव में गृहमंत्री अमित शाह ने गुना की जनसभा में केपी समर्थकों से निराश न होने की अपील करते हुए उनके नेता को उपयुक्त जिम्मेदारी देने का वादा किया था। ऐसे में उम्मीद है कि राज्यसभा का उपचुनाव शाह के वादे को पूरा करने का उपयुक्त समय साबित होगा।

पूर्व गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा के नाम की भी चर्चा है। विगत विधानसभा और लोकसभा चुनाव के दौरान कांग्रेस के लाखों नेताओं और कार्यकर्ताओं को भाजपा में शामिल करने में अहम भूमिका निभाने वाले नरोत्तम मिश्रा को भी पार्टी हाईकमान बड़ी जिम्मेदारी दे सकता है।

कांग्रेस की जन आक्रोश रैली के बाद फायरिंग

दतिया में पुलिस ने रायफल के साथ एक शख्स को पकड़ा

दतिया (नप्र)। दतिया में गुरुवार को कांग्रेस की जन आक्रोश रैली के बाद फायरिंग से हड़कंप मच गया। मौके पर खून के निशान और कुछ गाड़ियों के कांच टूटे हुए नजर आए। मौके पर मौजूद पुलिसकर्मियों ने एक संदिग्ध को पकड़ा है। उसके पास से रायफल बरामद हुई है।

बताया जा रहा है कि शाम करीब पौने 5 बजे तीन राउंड गोली चली। फायरिंग दतिया एसपी दफ्तर के सामने हुई। इस दौरान रैली में शामिल सैड़कों लोग सड़क पर मौजूद थे। घटना का वीडियो भी सामने आया है, जिस में साफ तौर पर फायर की आवाज सुनाई दे रही है।

कांग्रेस ने किया कचहरी का घेराव

दरअसल, अघोषित बिजली कटौती, महंगाई, बेरोजगारी, पानी और किसानों की समस्याओं को लेकर जिला कांग्रेस कमेटी ने गुरुवार को जिला मुख्यालय पर जनआक्रोश रैली का आयोजन किया था। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष जीतू पटवारी भी इसमें शामिल हुए थे।

जन आक्रोश रैली दोपहर में किला चौक से होते हुए पुरानी कचहरी पहुंची। जहां घेराव किया गया। साथ ही सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की गई। शाम को रैली के समापन के बाद प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी समेत अन्य बड़े नेता वहां से रवाना हो गए।

गोली चलने की आवाज से मचा हड़कंप

बड़े नेताओं के जाते ही कुछ लोगों के बीच बहस हुई और गोली चलने की आवाज सुनाई दी। गोली चलते ही अफरा-तफरी मच गई। पुलिस ने एक संदिग्ध को पकड़ लिया और उसे थाने ले जाया गया।

कांग्रेस के पूर्व जिलाध्यक्ष बोले- मुझ पर हमला किया

कांग्रेस के पूर्व जिलाध्यक्ष राघवेंद्र गुर्जर ने कहा कि हजारों लोगों के सामने मुझ पर जानलेवा हमला किया गया। ये मेरी जान लेना चाहते हैं। मेरे राजनीतिक विरोधियों ने उन्हें आगे किया हुआ है।

मेरे भाई ने बचाव में गोली चलाई, पुलिस उसे ही ले गई

कांग्रेस नेता राघवेंद्र गुर्जर ने कहा- बचाव में जब मेरा भाई हथियार लेकर गाड़ी से बाहर निकला तो उस पर गोली चला दी। गनीमत रही कि मेरा भाई मेरे साथ था, वरना मुझे तो इन्होंने गोली मार ही दी थी। पुलिस वाले जिसे लेकर गए वो तो मेरा भाई है, उसने बचाव में गोली चलाई थी। उसे गोली भी लगी है।

ओंकारेश्वर डैम के 18 गेट खोले

17 जिलों में तेज बारिश का अलर्ट

अब तक एवरेज से 3.7 इंच ज्यादा बारिश

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में गुरुवार को 17 जिलों में तेज बारिश का अलर्ट है। भोपाल में सुबह बूंदाबांदी के बाद दोपहर करीब डेढ़ बजे तेज पानी गिरा। मौसम विभाग ने श्योपुर, मुरैना, शिवपुरी, अशोकनगर, विदिशा, रायसेन, सागर, पांढुर्णा, छतरपुर, पन्ना, रीवा, मऊगंज, सीधी, कटनी, उमरिया, शहडोल और डिंडौरी में भी तेज बारिश होने का अनुमान जताया है।

बैक वाटर लेवल बढ़ने से बुधवार शाम 4 बजे ओंकारेश्वर बांध के 9 गेट खोले गए थे। गुरुवार सुबह 9.30 बजे 9 और गेट खोल दिए गए। सभी 18 गेट डेढ़ मीटर तक खोले गए हैं। बांध में कुल गेटों की संख्या 23 है। वहीं, इंदिरा सागर बांध के 12 गेट भी बुधवार शाम को डेढ़ मीटर तक खोले गए थे। गुरुवार सुबह इनकी ऊंचाई दो मीटर कर दी गई। डैम से 5808 क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा है।

मौसम विभाग के सीनियर वैज्ञानिक डॉ. वेदप्रकाश सिंह ने बताया कि 9 से 12 अगस्त तक प्रदेश में बारिश की स्ट्रॉन्ग एक्टिविटी नहीं है। हालांकि, हल्की बारिश का दौर बना रहेगा।

दमोह में 1 इंच पानी गिरा

इससे पहले बुधवार को प्रदेश में हल्की बारिश का दौर रहा। दमोह में 1 इंच पानी गिरा, जबकि जबलपुर में पौन इंच बारिश हो गई। खजुराहो, मंडला, सीधी में आधा इंच से ज्यादा बारिश हुई। धार, ग्वालियर, छिंदवाड़ा, नरसिंहपुर, नौगांव, रीवा, सिवनी, टीकमगढ़, उमरिया और मलाजखंड में भी बूंदाबांदी हुई।

सीजन की 66 प्रतिशत बारिश हुई, जबलपुर-भोपाल संभाग आगे

प्रदेश में सीजन की 66 प्रतिशत यानी, 24.7 इंच बारिश हो गई है। जबलपुर संभाग में सबसे ज्यादा पानी गिरा है। मंडला में सबसे ज्यादा 37 इंच बारिश हो चुकी है, जबकि सिवनी में आंकड़ा 35 इंच पार हो चुका है। वहीं, रीवा संभाग के जिले पीछे चल रहे हैं।

रात ठीक 12 बजे खुले नागचंद्रेश्वर मंदिर के पट

त्रिकाल पूजन के बाद एक बजे से आम लोग कर सके दर्शन

उज्जैन (नप्र)। नागपंचमी पर विश्व प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग महाकाल मंदिर के शिखर पर स्थित नागचंद्रेश्वर महादेव मंदिर के पट गुरुवार रात 12 बजे खुले। परंपरा अनुसार सबसे पहले श्री पंचायती महानिर्वाणी अखाड़े की ओर से महंत विनीत गिरी महाराज नागचंद्रेश्वर का त्रिकाल पूजन करते हैं। आरती और भोग के बाद रात करीब एक बजे आम लोगों के लिए मंदिर के पट खोल दिए जाते हैं।

दर्शन का सिलसिला अगले 24 घंटे शुक्रवार रात 12 बजे तक चलता रहा। शुक्रवार को भगवान नागचंद्रेश्वर को दोपहर में दाल बाटी का भोग लगाया जाएगा। पंचांग तिथि अनुसार श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी के दिन ही मंदिर के पट खुलने की परंपरा चली आ रही है।

गुरुवार 8 अगस्त की मध्यरात्रि 12 बजे पट खुलने के बाद श्री पंचायती महानिर्वाणी अखाड़े के महंत विनीत गिरी

महाराज एवं श्री महाकालेश्वर मंदिर प्रबंध समिति कलेक्टर एवं अध्यक्ष नीरज कुमार सिंह द्वारा प्रथम पूजन व अभिषेक किया जाएगा।

शुक्रवार 9 अगस्त को दोपहर 12 बजे अखाड़े द्वारा पूजन होगा। महाकालेश्वर भगवान की सायं आरती के पश्चात श्री नागचन्द्रेश्वर जी की पूजन-आरती श्री महाकालेश्वर मंदिर के पुजारी एवं पुरोहितों द्वारा की जाएगी।

साइबर ठगों के निशाने पर म.प्र. के आईएएस अफसर

2 दिन में 6 कलेक्टर के नाम पर फ्रॉड की कोशिश, जबलपुर कलेक्टर के नाम से मांगे 25 हजार

जबलपुर (नप्र)। मध्यप्रदेश के कलेक्टर (आईएएस अफसर) साइबर ठगों के निशाने पर हैं। बीते दो दिन में साइबर ठगों ने प्रदेश के 6 कलेक्टरों के नाम पर ठगी करने की कोशिश की है। ये कलेक्टर जबलपुर, धार, सिवनी, उमरिया, शहडोल और शिवपुरी के हैं। जबलपुर कलेक्टर के नाम पर तो 25 हजार रुपए की ठगी हो भी गई। सभी मामलों की साइबर सेल जांच कर रही है। किसी भी तरह के फ्रॉड से बचने के लिए कलेक्टर ने भी लोगों से सावधानी बरतने की अपील की है। जबलपुर कलेक्टर का पहले भी फेसबुक अकाउंट हैक हो चुका है।